■ वर्ष-22 ■ अंक-145
■ पृष्ठ-8 ■ मूल्य-2.00

दिल्ली (राष्ट्रीय संस्करण)
■ शनिवार ■ 12 जुलाई 2025
श्रावण कृष्ण पक्ष द्वितीया
विक्रम संवत्-2082
E-mail
dainiksamayjagat@gmail.com
insmjagat@gmail.com

प्रधान संपादक : अशोक त्रिपाठी

दैनिक
समय जगत

दिल्ली, भोपाल, म.प्र., उ.प्र. और अन्य राज्यों से एक साथ प्रकाशित

देश की राजधानी से प्रकाशित होकर विभिन्न प्रदेशों में प्रसारित

एक संदेश-पूरा देश

ईश्वर से अधिक मूल्यवान दुनिया में कुछ भी नहीं...

सीएम मोहन यादव ने की करोड़ों रुपए की उद्योग स्कीमों की शुरुआत

मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉनक्लेव में जुटे देशभर के उद्योगपति

इंदौर। इंदौर में मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉनक्लेव 2025 का आयोजन हुआ। इसमें देशभर के एक हजार से अधिक उद्योगपति इंदौर आए हैं। सीएम मोहन यादव ने करोड़ों रुपए की उद्योग स्कीमों की शुरुआत की। इसके अंतर्गत सुबह शहरी उत्कृष्टता के लिए आधुनिक तकनीक विषय विषय पर सत्र का आयोजन हुआ जिसमें शहरी विकास में आधुनिक तकनीकों जैसे एआई, आईओटी, क्वांटम तकनीकों के प्रयोग पर विस्तृत चर्चा की गई। सत्र में विनय ठाकुर, स्पेशल डायरेक्टर जनरल BISAG N ने बताया कि भूमिका सत्र में शहरी क्षेत्र में उत्कृष्ट अवसंरचना के विकास के लिए आधुनिक तकनीक के एकीकरण से नागरिकों के पक्ष में उपयोग किया जाए जिसमें परिवहन सुविधा, स्मार्ट पुलिसिंग, जिओ टैगिंग कर रेरा नियामकों की मॉनिटरिंग, एआई टूल का मैनेजमेंट के संबंध में बताया गया। सत्र में आर के मिश्रा, मैनेजिंग डायरेक्टर , NICSI ने बताया कि आधुनिक तकनीक के समायोजन के लिए भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत NICSI के द्वारा शहरी विकास के लिए विभिन्न कार्य किए जा रहे हैं। कमलाकन्नन थीरुवादी, रीजनल एग्जीक्यूटिव, दक्षिण एशिया बेंटली सिस्टम, ने कहा कि देश के सबसे स्वच्छ शहर में ग्रोथ कॉनक्लेव का आयोजन होना सुखद हैं। उन्होंने कहा कि शहरी अवसंरचना में आधुनिक तकनीक के समायोजन में डिजिटल ट्विन जिसमें रियल टाइम में डेटा का उपयोग करके उसके व्यवहार के अनुकरण के आधार पर एनालिसस कर कार्ययोजना बनाया जाना आवश्यक हैं। जिससे कई समस्याओं के समाधान के लिए उपलब्ध डाटा का प्रयोग कर रियल टाइम एनालिसिस कर समग्र रूप से समाधान उपलब्ध कराया जाना चाहिए। मध्य प्रदेश में कई संगठन ऐसे है जो रियल टाइम डाटा का उपयोग कर प्रबंधक का कार्य कर रहे है।जो भविष्य के लिए सहायक सिद्ध होंगे। आशीष प्रधान, सीटीओ क्विक हिल ने बताया कि टेक्नोलॉजी के प्रयोग के साथ साथ आवश्यक है कि भविष्य के संभावनाओं और साइबर सिक्योरिटी को ध्यान रखते हुए ऐसा मजबूत गवर्नेंस मॉडल विकसित किया जाए जिससे नागरिकों के डाटा एवं जानकारियों को सुरक्षित किया जा सके और साइबर युद्ध जैसी परिस्थितियों में भी सुरक्षित रूप से कार्य कर सकें। शामिक जोशी , हेड स्व्हश्वङ्ग, द्वारा बताया गया कि शहरी विकास में कनेक्टिविटी सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है जिसमें इंटरनेट ऑफ थिंग्स के प्रयोग से यातायात की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है, नागरिकों के दैनिक जीवन को आसान बनाया जा सकता है साथ ही प्रशासन के स्तर पर भी सुविधा उपलब्ध हो सकती हैं। उनके द्वारा मुंबई शहर में सीमलेस टिकटिंग और बेंगलुरु में द्रुत मॉडल के संबंध में विस्तृत रूप से बताया गया।

क्वांटम टेक्नोलॉजी के बढ़ावे पर दिया जोर

डॉ. अभय किम्मटकर, मैनेजिंग डायरेक्टर cstechAI कहा कि शहरी क्षेत्र में सामान्य सुविधाओं के लिए अवसंरचनात्मक विकास में तकनीकों का समायोजन आवश्यक हैं। जिसके लिए आवश्यक है कि आज से 50 वर्ष बाद के समय को ध्यान रखते हुए कार्ययोजना बनाई जाए। जिसके शहरी क्षेत्र की समस्याओं के समाधान के लिए कार्य किया जाए । जैसे जल वितरण के क्षेत्र में सेंसर का प्रयोग कर पानी के वितरण , वितरित पानी का शुद्धता के पैरामीटर, आदि की मॉनिटरिंग की जा सके। प्रवीण दवे, सोल्यूशन आर्किटेक्ट, गूगल क्लाउड इंडिया, ने कहा कि शहरी विकास , नियोजन, सम्पत्ति मूल्यांकन आदि के लिए एक एकीकृत डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर बनाया जाए जिससे डिजिटलीकरण में आसानी हो , त्वरित परिणाम प्राप्त हो , प्रशासन की क्षमतावर्धन हो और नागरिकों को सुविधा उपलब्ध हो सके। एकीकृत डिजिटल फ्रेमवर्क के विकास से त्वरित परिणाम प्राप्त होने से उद्देश्य की प्राप्ति हो सकेगी। श्रीजीत नायर, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट PRO-TEAN ने नागरिकों के डाटा शेयरिंग के लिए अनुमति आधारित डिजिटल स्ट्रक्चर बनाया जाए। जिससे नागरिकों को भी जानकारी हो की वे अपना डाटा किसे शेयर कर रहे है ।साथ ही विभिन्न एप्लिकेशन पर फीडबैक लिया जाए जिससे। शहरी प्रशासन में पारदर्शिता एवं किसी समस्या पर एक्शन टेकिंग को आसान कर सके। इसके अतिरिक्त सत्र में साइबर सिक्योरिटी को अधिक मजबूत बनाने के लिए क्वांटम टेक्नोलॉजी के उपयोग को बढ़ाए जाने पर जोर दिया गया। सत्र में बताया गया कि क्वांटम टेक्नोलॉजी नेक्स्ट जनरेशन की तकनीक है जिसके लिए भारत सरकार द्वारा क्वांटम मिशन संचालित है।

अब तक 1.45 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने किए बाबा बर्फानी के दर्शन

अमरनाथ यात्रा से श्रद्धालुओं में दिख रहा काफी उत्साह

जम्मू। बाबा बर्फानी के दर्शनों के लिए बीते 8 दिन से अमरनाथ यात्रा जारी है। यहां अब तक 1.45 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने किए बाबा बर्फानी के दर्शन किए हैं। जबकि शुक्रवार को 6,482 यात्रियों का एक और जत्था कश्मीर के लिए रवाना हुआ है। अधिकारियों ने बताया कि 3 जुलाई को यात्रा शुरू होने के बाद से अब तक 1.45 लाख से ज्यादा तीर्थयात्री पवित्र गुफा के दर्शन कर चुके हैं। उन्होंने कहा, शुक्रवार को 6,482 यात्रियों का एक और जत्था भगवती नगर यात्री निवास से दो सुरक्षा काफिलों में घाटी के लिए रवाना हुआ है। पहले काफिले में 107 वाहन शामिल हैं, जिनमें 2,353 यात्री मौजूद हैं। ये जत्था सुबह 3.20 बजे बालटाल बेस कैंप के लिए रवाना हुआ, जबकि दूसरे काफिले में 161 वाहन मौजूद हैं और उनमें 4,129 यात्री थे। ये काफिला सुबह 4:04 बजे नुनवान (पहलगाम) बेस कैंप के लिए रवाना हुआ है। बता दें कि गुफा मंदिर में एक बर्फ का शिवलिंग है, जो चंद्रमा के चरणों के साथ बढ़ता और घटता है। भक्त मानते हैं कि यह बर्फ का शिवलिंग भगवान शिव की पौराणिक शक्तियों का प्रतीक है। श्री अमरनाथ जी यात्रा हिंदू भक्तों के लिए सबसे पवित्र तीर्थयात्राओं में से एक है। मान्यता है कि भगवान शिव ने इस गुफा में माता पार्वती को शाश्वत जीवन और अमरता के रहस्य बताए थे। गुरुवार को पहलगाम में छड़ी मुबारक (भगवान शिव की पवित्र गदा) का भूमि पूजन किया गया। छड़ी मुबारक के एकमात्र संरक्षक महंत स्वामी दीपेंद्र गिरि के नेतृत्व में श्रीनगर के दशनामी आखाड़ा भवन से पहलगाम ले जाया गया।पहलगाम में छड़ी मुबारक को गौरी शंकर मंदिर ले जाया गया, जहां भूमि पूजन हुआ। बाद में इसे मार्तंड सूर्य मंदिर ले जाया गया, जहां पूजा की गई और छड़ी मुबारक को मार्तंड सूर्य मंदिर के पवित्र झरने में स्नान कराया गया। छड़ी मुबारक 9 अगस्त को पवित्र गुफा मंदिर पहुंचेगी, जब यात्रा आधिकारिक रूप से समाप्त होगी। जम्मू के भगवती नगर यात्री निवास आने वाले यात्रियों के अलावा, कई यात्री सीधे बालटाल और नुनवान (पहलगाम) में ऑन-स्पॉट पंजीकरण के लिए पहुंच रहे हैं। इस साल की

अमरनाथ यात्रा के लिए व्यापक बहु-स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की गई है। यह यात्रा 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद हो रही है। इस हमले में पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों ने पहलगाम के बैसरन में धर्म के आधार पर 26 नागरिकों की हत्या कर दी थी। सेना, बीएसएफ, सीआरपीएफ, एसएसबी और स्थानीय पुलिस की मौजूदा संख्या बढ़ाने के लिए 180 अतिरिक्त सीएपीएफ कंपनियों की तैनाती की गई है।

जम्मू के भगवती नगर यात्री निवास से गुफा मंदिर तक के पूरे मार्ग और दोनों बेस कैंपों के बीच के सभी ट्रांजिट कैंपों को सुरक्षा बलों द्वारा सुरक्षित किया गया है। इस साल अमरनाथ यात्रा 3 जुलाई से शुरू हुई और 38 दिनों के बाद, 9 अगस्त को श्रावण पूर्णिमा और रक्षा बंधन के दिन समाप्त होगी। यात्री कश्मीर हिमालय में समुद्र तल से 3,888 मीटर ऊपर स्थित पवित्र गुफा मंदिर तक पारंपरिक पहलगाम मार्ग या छोटे बालटाल मार्ग से पहुंचते हैं। पहलगाम मार्ग से जाने वाले यात्री चंदनवारी, शेषनाग और पंचतरणी से होकर 46 किलोमीटर की पैदल यात्रा कर गुफा मंदिर पहुंचते हैं। इस मार्ग पर यात्रा पूरी करने में चार दिन लगते हैं। वहीं, बालटाल मार्ग से जाने वाले यात्री 14 किलोमीटर की पैदल यात्रा कर गुफा मंदिर पहुंचते हैं और उसी दिन दर्शन कर बेस कैंप लौट आते हैं। इस साल सुरक्षा कारणों से यात्रियों के लिए हेलीकॉप्टर सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज करेंगे एक्वा पार्क का भूमिपूजन

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शनिवार 12 जुलाई को भोपाल में बनने जा रहे अत्याधुनिक मछलीघर एक्वा पार्क का भूमि-पूजन करेंगे। भोपाल सहित पूरे प्रदेश से भोपाल आने वाले पर्यटकों के ज़हन में मछलीघर की एक खास जगह है। वो पुराना मछलीघर जहां स्कूल की पिकनिक होती थी, माँ-पापा के साथ सैर होती थी, और रंग-बिरंगी मछलियों को देखकर चौंकते, मुस्कराते और कभी-कभी डर भी जाते थे। नीली रोशनी में तैरती सुनहरी मछलियाँ मानो कैनवास पर बनी कोई पेंटिंग थीं। वक्त बीत गया और अब मछलीघर अतीत को साथ में समेटे हुए फिर से भोपाल में एक नई पहचान के साथ लौटने जा रहा है। देश के सबसे सुंदर और आधुनिक एक्वा पार्क में से एक भोपाल में आकार लेने जा रहा है। केंद्र सरकार ने इस प्रोजेक्ट के लिए 25 करोड़ रुपये की स्वीकृति दी है, राज्य सरकार का इसमें 15 करोड़ रुपये का सहयोग से 40 करोड़ रुपये की महत्वाकांक्षी परियोजना होगी। एक्वा पार्क न केवल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र होगा, बल्कि बच्चों के लिए रोमांच, शिक्षा, शोध और कौतूहल का नया केंद्र भी बनेगा।

इतिहास से भविष्य को जोड़ेगा अत्याधुनिक एक्वा पार्क, मछली घर नहीं, अब मछलियों की दुनिया बसेगी

देश की 'हाउस टू हाउस स्ट्राइक' रणनीति होगी मजबूत, अधिक क्षमता की मिसाइलें होंगी तैनात

नई दिल्ली। भारत की सैन्य शक्ति में एक और रणनीतिक बदलाव होने वाला है। भारतीय वायुसेना के अत्याधुनिक सुखोई-30एमकेआई फाइटर जेट्स पर अब ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल के साथ इजरायल की घातक लंबी दूरी तक मार करने वाली लोरा (लांग रेजआर्टिलरी) बैलिस्टिक मिसाइलों को भी तैनात करने की योजना बन रही है। यह फैसला भारत की 'हाउस टू हाउस स्ट्राइक' नीति को नई धार देने वाला है, जिससे पाकिस्तान और चीन तक भारत की पहुंच और प्रभाव क्षमता और अधिक सशक्त होगी। लोरा मिसाइल इजरायल एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज (आईएआई) की एक अत्याधुनिक टैक्टिकल बैलिस्टिक मिसाइल है, जिसकी मारक क्षमता 400-430 किलोमीटर तक है। इसकी सबसे बड़ी खासियत इसकी बेहद सटीक निशाना साधने की क्षमता है। इसकी सर्कुलर एरर प्रोबेबिलिटी (सीईपी) 10 मीटर से भी कम है, जिसका अर्थ है कि मिसाइल अपने लक्ष्य के बेहद करीब गिरती है। वहीं ब्रह्मोस मिसाइल पहले से ही भारतीय सैन्य प्रणाली का हिस्सा है, जिसकी रेंज 290 से 450 किमी तक है और यह सुपरसोनिक स्पीड से दुश्मन के कमांड सेंटर को तबाह कर देती है। जब ब्रह्मोस और लोरा जैसी घातक मिसाइलों को सुखोई-30एमकेआई जैसे फाइटर जेट्स पर तैनात किया जाएगा, तब यह कॉम्बिनेशन भारत के लिए एक 'डेडली ट्रायो' बन जाएगा। लोरा को बिना सीमा पार किए लांच किया जा सकता है, जिससे यह भारतीय वायुसेना को डीप-स्ट्राइक ऑपरेशंस में रणनीतिक बढ़त देगा। इस मिसाइल से पाकिस्तान के इस्लामाबाद और कराची से लेकर चीन के ल्हासा और शिनजियांग जैसे क्षेत्रों तक लक्ष्य साधे जा सकते है। हाल ही में इजरायल-ईरान टकराव के दौरान लोरा मिसाइल की क्षमता देखने को मिली थी, जब इजरायल ने ईरान के भीतर रणनीतिक ठिकानों पर सटीकता से इस्तेमाल किया। भारत भी अब ऐसी क्षमता की ओर बढ़ रहा है, जहां जरूरत पड़ने पर सीमा पार जवाबी नहीं बल्कि पहले स्ट्राइक की भी ताकत उसके पास होगी।

पश्चिम बंगाल में टीएमसी नेता की हुई हत्या

कोलकाता। पश्चिम बंगाल से आए दिन हिंसा और आगजनी की खबरें आ रहीं हैं। गुरुवार देर रात यहां एक टीएमसी नेता की बेहरमी से हत्या कर दी गई। दक्षिण 24 परगना जिले के भांगर में तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेता रज्जाक खान की बेरहमी से हत्या कर दी गई। अज्ञात हमलावरों ने रज्जाक खान पर पहले गोली चलाई और फिर धारदार हथियार से हमला कर उनकी जान ले ली। इस घटना ने इलाके में तनाव और दहशत का माहौल है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और आरोपियों की तलाश में छापेमारी कर रही है। पुलिस ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि खान पर हमला उस समय हुआ जब वह सिरिस्ताला के पास अपने घर लौट रहे थे। उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी मृत्यु हो गई।

कांवड़ यात्रियों की सुरक्षा के साथ होंगी सुदृढ़ व्यवस्थाएं: डॉ. मोहन यादव

समय जगत, भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रदेश में सभी कावड़ यात्रियों की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम के साथ अनुकूल व्यवस्थाएँ भी सुनिश्चित की जा रही है। इस संबंध में निर्देश जारी किये जा चुके हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को उज्जैन त्रिवेणी शनिमंदिर से कावड़ यात्रा में शामिल हुए। उन्होंने कावड़ यात्रियों का पुष्प-वर्षा कर स्वागत किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कावड़ का पूजन कर कावड़ उठाई और अग्नि अखाड़ा के महामंडलेश्वर संत उत्तम स्वामी के साथ पैदल चलकर कावड़ यात्रा का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में सभी त्यौहार उत्साह के साथ मनाने की परम्परा राज्य सरकार ने शुरू की है। ईश्वर और संतजन के आशीर्वाद से उज्जैन में सिंहस्थ-2028 की तैयारियाँ तेजी से की जा रही है। हम इस सोच के साथ सभी

तैयारियां कर रहे है कि वर्ष-2028 के बाद यदि प्रतिवर्ष सिंहस्थ जैसे आयोजन हों तो किसी प्रकार की समस्या न आये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सिंहस्थ-2028 के दृष्टिगत उज्जैन में संतों के लिये आश्रम और अन्य व्यवस्थाओं को जुटाने के लिये सिंहस्थ धार्मिक सिटी का निर्माण भी किया जा रहा है, जिससे बड़ी संख्या में उज्जैन आने वाले श्रृद्धालुओं के लिये सुविधाजनक व्यवस्था सुनिश्चित होंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कावड़ यात्रियों को संबोधित करते हुए कहा कि दुनिया में कई संस्कृतियाँ हैं, दुनिया में तो 194 देश है लेकिन कोई देश अपने कोई भी शुभ काम प्रारंभ करने के लिए जल के माध्यम से कोई संकल्प नहीं लेता है।

कवायद ▶ 'विश्व जनसंख्या दिवस' पर देशवासियों को किया जागरूक

भाजपा सरकार में स्वस्थ भारत का मार्ग हो रहा है प्रशस्तः जेपी नड्डा

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और सीएम रेखा गुप्ता समेत कई नेताओं ने 'विश्व जनसंख्या दिवस' पर देशवासियों को जागरुक किया। उन्होंने जनसंख्या से जुड़ी चुनौतियों का भी जिक्र किया।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने शुक्रवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, विश्व जनसंख्या दिवस' परिवार नियोजन के बारे में जागरूकता बढ़ाने और जनसंख्या से जुड़ी चुनौतियों से निपटने की हमारी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करने का मंच है। उन्होंने आगे कहा, आयुष्मान आरोग्य मंदिरों सहित सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं के माध्यम से केंद्र सरकार पूरे देश में आवश्यक परिवार नियोजन सेवाएं प्रदान कर रही है, जिससे परिवार सशक्त हो रहे हैं और एक स्वस्थ भारत का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। इस साल की थीम, 'मां और बच्चे के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए गर्भावस्था का सही समय और अंतर,' माता और बच्चे के स्वास्थ्य के लिए नियोजित माता-पिता बनने के महत्व पर जोर देती है। विश्व जनसंख्या दिवस 2025 का नारा- 'मां बनने की उम्र वही, जब तन और मन की तैयारी सही'- माता-पिता बनने के लिए शारीरिक और भावनात्मक रूप से तैयार रहकर सूचित और सशक्त निर्णय लेने के महत्व को रेखांकित करता है। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा, विश्व जनसंख्या दिवस पर, हम एक न्यायपूर्ण, सशक्त और समतामूलक समाज के अपने दृष्टिकोण की पुष्टि करते हैं, जहां प्रत्येक व्यक्ति को अवसर, अधिकार और सम्मान प्राप्त हो। हमारे युवाओं को एक ऐसे भविष्य का हक है, जहां वे सूचित विकल्प चुन सकें, समानता के साथ जी सकें और बिना किसी सीमा के सपने देख सकें। आइए, हम समावेशी

नीतियों, सतत विकास और हर जीवन को बेहतर बनाने की साझा प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ें, जिसके लिए हम जिम्मेदार हैं। वहीं, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने एक्स पर लिखा, विश्व जनसंख्या दिवस जागरूक करता है कि सुरक्षित भविष्य और भावी पीढ़ियों को बेहतर दुनिया प्रदान करने के लिए हम जनसंख्या विस्फोट जैसी स्थिति से बचें। जनसंख्या की असंतुलित बढ़ोतरी समाज और राष्ट्र के साथ आवश्यक संसाधनों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है। इसके अलावा, कांग्रेस नेता गोविंद सिंह डोटासरा ने विश्व जनसंख्या दिवस पर कहा, देश में जनसंख्या वृद्धि की निरंतर बढ़ती गति न केवल चिंता का विषय है, बल्कि यह हमारे सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय संतुलन के लिए भी एक गंभीर चुनौती बनती जा रही है। विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर आइए हम सभी मिलकर जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों के प्रति समाज में जागरूकता फैलाने का संकल्प लें। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक्स पर लिखा, संतुलित जनसंख्या ही समृद्ध समाज और सतत विकास की सुदृढ़ आधारशिला है। जनसंख्या नियंत्रण आज केवल आवश्यकता नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की अनिवार्य नीति है। यह लक्ष्य जन-जागरूकता, जन-भागीदारी और जननीति के समन्वित प्रयासों से ही प्राप्त हो सकता है। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, तेजी से बढ़ती जनसंख्या हमारे संसाधनों, पर्यावरण और जीवन की गुणवत्ता को भी प्रभावित करती है। आइए, हम सभी जनसंख्या नियंत्रण और परिवार नियोजन के महत्व को समझें और समाज को जागरूक कर एक संतुलित एवं सशक्त राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

प्रदेश की वन ट्रिलियन डालर इकॉनमी बनाने के लिए उद्यमियों को देना होगा सुविधाए: जिलाधिकारी

औद्योगिक क्षेत्र के आस – पास बोटलनेक सीमाओं पर मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा वाहनों की जांच कर उत्पीड़न पर डीएम निवाड़ी को पत्र लिखने के दिए निर्देश

समय जगत, झासी। जिलाधिकारी श्री मृदुल चौधरी ने कलेक्ट्रेट नवीन सभागार में जिलास्तरीय उद्योग बन्धु समिति की बैठक में अध्यक्षता करते हुये कहा कि प्रदेश की वन ट्रिलियन डॉलर इकॉनमी बनाने के लिए नए उद्योग स्थापित करने वाले उद्यमियों को पर्याप्त सुविधाओं सहित निर्वाध विद्युत सप्लाई सुनिश्चित किया जाए। ग्रोथ सेंटर बिजौली में यूपीसीडा द्वारा विकसित क्रूज सेंटर बिजौली में अव्यवस्थित आवासीय परिसर में कतिपय मूलभूत समस्याओं के निस्तारण हेतु शासन को पत्र प्रेषित करने के निर्देश दिए और अधिकारियों को कार्यशैली में सुधार लाते हुए नए उद्यमियों को योजनाओं से लाभान्वित करते हुए उद्योग सर्जन कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि किसी भी दशा में उद्यमियों का उत्पीड़न बर्दास्त नही किया जायेगा।

जिलाधिकारी ने कहा कि प्रदेश की वन ट्रिलियन डॉलर इकॉनमी बनाने के लिए मा0 मुख्यमंत्री जी की प्राथमिकता बुन्देलखण्ड के चहुंमुखी विकास पर केन्द्रित है, अनेकों योजनायें केंद्र व प्रदेश सरकार द्वारा संचालित की जा रही हैं, जिसका सीधा लाभ क्षेत्र के उद्यमियों को प्राप्त हो ताकि बुन्देलखण्ड में उद्योगों का सृजन हो और लोगों को रोजगार मिले। उन्होने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का समुचित लाभ क्षेत्र के उद्यमियों को नही मिल पा रहा है, यह उचित नही है। बैंकर्स अपने कार्यो की स्वयं समीक्षा करें और उद्यमियों को योजनाओं का लाभ दिलायें, उन्होंने नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि विभिन्न लाभकारी योजनाओं के आवेदन बैंकों में अनावश्यक रूप से लंबित है यह स्थिति स्वीकार योग्य नहीं है तत्काल ऐसे आवेदनों का निस्तारण करना सुनिश्चित करें ताकि युवा उद्यमियों को रोजगार स्थापित करने में सहयोग मिल सके जिला स्तरीय उद्योग बन्धु समिति बैठक में जिलाधिकारी ने मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान एवं मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना की समीक्षा करते हुए उपस्थित अधिकारियों को नसीहत देते हुये कहा कि उद्योग सृजन से सम्बन्धित पत्रावलियों को लम्बित न रखें। समय से कार्यवाही करते हुये उसका निस्तारण करना सुनिश्चित करें। उन्होंने बैंकर्स से कहा कि यदि आवेदन स्वीकार योग्य नहीं है तो उसकी वजह भी बताएं ताकि आवेदनकर्ता संतुष्ट हो सके। उन्होंने योजना अंतर्गत प्राप्त आवेदनों का निस्तारण समयावधि में किए जाने व योजना के क्रियान्वयन में किसी प्रकार की शिथिलता ना बरतने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना के अंतर्गत 148 आवेदन विभिन्न बैंकों को प्रेषित किए गए जिसमें 25 आवेदन स्वीकृत करते हुए 21 आवेदनकर्ताओं को 71.25 लाख रुपए का वितरण किया गया। योजना के अंतर्गत जनपद की प्रगति ।.श्रेणी में है।

बैठक में जिलाधिकारी ने जिला स्तरीय उद्योग बन्धु समिति की बैठक में स्टैण्ड अप इण्डिया योजना की समीक्षा करते हुये कहा कि यह योजना सीधे बैंकों द्वारा संचालित की जाती है। उन्होंने कहा कि अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की महिला उद्यमियों को योजना का अधिक से अधिक लाभ हो। उन्होंने समाज कल्याण विभाग द्वारा उद्यमी महिलाओं को आगे लाए जाने का सुझाव दिया और निर्देश दिए कि जो भी आवेदन प्राप्त हो उनका समय से निस्तारण किया जाये ताकि महिला उद्यमियों को रोजगार के अवसर प्राप्त हो। उन्होंने वित्तीय वर्ष 2025-26 मे गत माह तक 03 लाभार्थियों को ? 0.78 करोड़ कार्य वितरण किया। इसे और बढ़ाए जाने के दिए निर्देश।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना की समीक्षा करते हुए उन्होंने निर्देश दिए कि लघु उद्यमी/व्यापारियों के लिए यह योजना बेहद लाभकारी है।उन्होंने बताया कि विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजनाअंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके व्यक्तियों को भी इस योजना अंतर्गत बैंकों द्वारा ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। अतः जो भी आवेदन बैंक को प्राप्त हो उनको तत्काल स्वीकृत करते हुए ऋण उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें ताकि ऐसे व्यक्ति स्वाबलंबी और आत्मनिर्भर बन सकें।

जिला स्तरीय उद्योग बन्धु समिति की बैठक में जिलाधिकारी श्री मृदुल चौधरी द्वारा विभिन्न ऋण योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुये कहा कि योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक लोगों को मिले, यह अवश्य सुनिश्चित किया जाये। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम की समीक्षा में उन्होने खादी ग्रामोद्योग आयोग ऐजेन्सी की प्रगति पर असंतोष व्यक्त करते हुये निर्देश दिये कि आवेदनों के प्रेषण को बढाया जाये ताकि अधिक आवेदन को स्वीकृत किया जा सके, उन्होंने वित्तीय लक्ष्य को शत-प्रतिशत पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होने मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, एक जनपद एक उत्पाद योजना की समीक्षा करते हुये कहा कि जनपथ के अन्य उत्पादों को भी इस। योजना में शामिल किया जाए और अधिक से अधिक आवेदन प्राप्त किये जाये। बैठक में भू-गर्भ जल के प्रबन्धन और विनियमन के सम्बन्ध में समस्त एमएसएमई इकाइयों जो कि 10 क्यूबिक मीटर प्रतिदिन से कम जलदोहन करती है उन्हें अनापत्ति प्रमाण-पत्र नहीं देना है परन्तु पंजीकरण कराना अनिवार्य है। ऐसी इकाइयों जिन्होने पंजीकरण नही कराया है उन्हें नोटिस दिये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि ग्राउंड वाटर को सुरक्षित रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। जिला स्तरीय उद्योग बंधु समिति की बैठक में निजी औद्योगिक पार्को के विकास की योजनांतर्गत कानपुर हाईवे से डिमरौनी रोड परऔद्योगिक पार्क की सड़क पर चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त मैसेज गुरु नानक एग्रीकल्चर इंडिया बबीना प्राइवेट लिमिटेड बबीना में अबाध विद्युत आपूर्ति के संबंध में विचार विमर्श किया गया। इस मौके पर सीडीओ श्री जुनैद अहमद,एडीएम प्रशासन श्री शिव प्रताप शुक्ल, ए डीएम वित्त एवं राजस्व श्री वरुण कुमार पाण्डेय, एसपी सिटी श्री ज्ञानेन्द्र कुमार सिंह,उद्योग श्री मनीष चौधरी, अध्यक्ष चेंबर ऑफकॉमर्स श्री धीरज खुल्लर, महासचिव श्री पवन सरावगी, संयुक्त सचिव श्री अमित सिंह, उप्र व्यापार मंडल के अध्यक्ष श्री संजय पटवारी, श्री समर्थ दीक्षित आशी हेल्थ टैक सहित अन्य उद्यमी/ व्यापारी तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

भगवान शंकर की शोभा यात्रा का हुआ नगर भ्रमण

समय जगत झाँसी। श्रावण मास समारोह महासमिति के तत्वावधान में श्रावण मास के शुभारम्भ पर बड़ागांव गेट स्थित श्री हनुमान मन्दिर से आज रवीश त्रिपाठी के मुख्य संयोजन में भगवान भोले शंकर की भव्य शोभा यात्रा निकाली गयी। भगवान भोलेशंकर सहित सभी स्वरूपों का तिलक पूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रदीप जैन आदित्य ने किया। तत्पश्चात शोभायात्रा का शुभारम्भ सदर विधायक रवि शर्मा, विधान परिषद सदस्य श्रीमती रमा निरंजन ने भगवान भोले शंकर सहित सभी स्वरूपों का आरती कर किया।

भगवान भोले शंकर की भव्य शोभा यात्रा में सबसे आगे ढोल की आवाज के साथ घोड़ों पर राक्षसगण आकर्षक का केन्द्र रहे। इसके पीछे बग्घी पर ब्रह्मा जी, विष्णु जी के स्वरूप विराजमान थे। बैण्ड बाजे ÷हे भोले भण्डारी, तेरी महिमा है सबसे न्यारी÷ एवं ÷आया सावन का त्योहार, आया भोले बाबा का त्योहार आयाष् आदि धार्मिक धुन बजाकर चल रहे थे। दो घोड़ों की बग्धी पर भगवान भोले शंकर के साथ नन्दी महाराज विराजमान थे। भगवान भोले शंकर एवं नन्दी महाराज की शोभा यात्रा को देखने के लिये बाजारों में भीड़ उमड़ पड़ी। भोले शंकर की भव्य शोभा यात्रा का नेतृत्व महासमिति के अध्यक्ष रवीश त्रिपाठी कर रहे थे। शोभा यात्रा बड़ागांव गेट से प्रारम्भ होकर बड़ाबाजार, मालिनों का चौराहा, बजाजा बाजार, मानिक चौक, सिन्धी चौराहा, रानीमहल, मिनर्वा चौराहा से होती हुई फूटा चोपड़ा स्थित श्री पंचमुखी महादेव मंदिर पर विसर्जित हुई। जहां पर पंचमुखी महादेव की महाआरती कर प्रसाद वितरित किया गया। शोभा यात्रा में महानगर धर्माचार्य हरिओम पाठक, विनोद अग्रवाल, कालीचरन जारौलिया, बन्टी दुबे, इंजी0 मयंक श्रीवास्तव पार्षद,रामू बिन्दल, ऋषभ त्रिपाठी, महेश पाण्डे, राजकुमार अमरया, मनोज पाठक, सुभाष चौरसिया, रोहित बरसैयां, गोकुल दुबे, देवदत्त नायक, विष्णु तिवारी, संजीव शर्मा,राम सहाय साहू ,राम प्रकाश गुप्ता, चिंतामणि दुबे, सुधा गुप्ता, नंदा यादव, मधु अग्रवाल, रजनी गुप्ता, कामिनी अग्रवाल ,रंजना गुप्ता, अरविंद वशिष्ठ, पी.के. उपाध्याय, भास्कर जारौलिया, प्रमोद तिवारी,सुरेन्द्र तिवारी, पिन्टू माली, विनोद समाधिया, सेवक ताम्रकार, अशोक बुधौलिया, संगम शर्मा, राजीव श्रीवास्तव, राजेन्द्र पचौरी, राजेन्द्र तिवारी, प्रदीप यादव, प्रवीण श्रोत्रिय आदि हर हर महादेव के जयकारे लगाते हुए चल रहे थे। शोभा यात्रा का जगह-जगह पुष्प वर्षा एवं शीतल शर्बत पिलाकर स्वागत किया गया। शोभा यात्रा के समापन पर महासमिति के अध्यक्ष रवीश त्रिपाठी ने सभी भक्तों का आभार व्यक्त किया

बड़ी धूमधाम से मनाया गया गुरु पूर्णिमा दिवस एवं नवीन मंदिर निर्माण का पूजन विधान कार्यक्रम

समय जगत झांसी। आज अतिशय क्षेत्र करगुवा जी जैन मंदिर मे श्री 108 विद्यासागर महामुनिराज के परम प्रभावी शिष्य मुनि श्री 108 अविचल सागर जी महाराज के श्री चरणों में पूजा अर्चना एवं आरती करके गुरु पूर्णिमा सभी भक्तगणों ने बड़े भक्ति भाव से मनाई गुरुजी ने अपने आशीष वचन में सभी श्रद्धालुओं से कहा कि आप लोगों के द्वारा देव शास्त्र और गुरु के लिए किए जा रहे कार्य निरंतर होते रहते हैं यह सराहनी है इसके तत्पश्चात गुरुवार के सानिध्य में नवीन मंदिर का निर्माण जो 1008 श्री आदिनाथ भगवान भरत भगवान एवं बाहुबली भगवान के मंदिर निर्माण का कार्य जो पूर्व से चल रहा है जिसका बेस पूर्व में ही तैयार हो चुका था अब ऊपर के मंदिर निर्माण का पूजन वाणी भूषण पंडित श्री विनोद शास्त्री जी के द्वारा कराया गया संचालन करते हुए दिगंबर जैन पंचायत समिति के महामंत्री कमल जैन लोकपथ न करगुवा जी में हुए विकास कार्यो पर प्रकाश डाला अतिशय क्षेत्र करगुवा जी मंत्री शिरोमणि जैन ने कहा कि मंदिर निर्माण का कार्य अति सिख सभी के सहयोग से संपन्न हो और अस्थाई वेदी पर विराजमान भगवान श्री अपने उच्च आसन पर विराजमान हो निर्माण मंत्री भागचंद जैन ने निर्माण की गुणवत्ता के बारे में बताते हुए शीघ्र निर्माण करने की कामना की करुणस्थली चंद्रोदय तीर्थ मंत्री राजकुमार जैन बाबा ने सभी से निर्माण में सहयोग करने के लिए आवाहन किया ध्वजारोहण करने का सौभाग्य इंजीनियर बालचंद जैन एवं उनके पुत्र प्रवीण जैन को प्राप्त हुआ स्वास्तिक विराजमान करने का सौभाग्य श्री नरेंद्र कुमार जैन अमित कुमार जैन नारायण बाग वालों को प्राप्त हुआ प्रथम शिला रखने का सौभाग्य श्री राजीव जैन अहिंसा द्वितीय शिला रखने का सौभाग्य श्री अशोक जैन लाल तृतीय शिला रखने का सौभाग्य प्रीति शिरोमणि जैन चतुर्थ शीला रखने का सौभाग्य श्रीमती रानी भागचंद जैन एवं पंचम एवं अन्यशिलाएं रखने का सौभाग्य इंजीनियर बालचंद जैन श्रीमती गुडमाला जैन सनमति हॉस्पिटल संजय जैन छतरपुर विनोद जैन ठेकेदार कमल जैन लोकपथ रवि जैन कंधारी नवीन जैन पडरा श्रेयांश जैन करगुवा संतोष जैन जल निगम राजेंद्र जैन बिजना अक्षत जैन शगुन जैन जिनेंद्र जैन करेरा राजकुमार जैन मयूर विहार श्रीमती कल्पना जैन सभी ने नवीन मंदिर की शिला स्थापित की एवं विधी विधान के अनुसार पंचरत्न की स्थापना पंचायत समिति के विधी सलाहकार अशोक जैन जैनिथ मनोज जैन अछरोनी वीरेंद्र जैन ईलाइट कुलदीप जैन इंजीनियर एमके जैन प्रभात जैन अशोक जैन मोनू जैन दीपक जैन वैध सनत जैन लाल सोनू जैन ने की ,पूजन विधान करने का सौभाग्य श्रीमती किरण जैन श्रीमती राजकुमारी जैन श्रीमती शुभी जैन श्रीमती नीलम जैन श्रीमती शगुन जैन श्रीमती शशि प्रभा जैन श्रीमती कामना जैन श्रीमती उर्मिला जैन श्रीमती अर्चना जैन आदि ने पूजन विधान किया इस अवसर पर निम्न लोक को उपस्थित रहे शशांक जैन प्रवीण जैन कासलीवाल ऋषि जैन पडरा विकास जैन रजनीश जैन धर्मेंद्र जैन अवनीश जैन अनिल जैन अतुल जैन बरुआ सागर आदि लोगों उपस्थित रहे अंत में सभी का आभार अतिशय क्षेत्र करगुवा मंत्री शिरोमणि जैन ने किया'।

विद्यार्थी परिषद ने किया वृक्षारोपण

समय जगत गुरसरांय। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के स्थापना दिवस पर नगर ईकाई गुरसरांय झांसी जिला द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गुरसरांय में वृहद रुप में वृक्षारोपण कर मनाया गया। अवसर पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गुरसरांय के प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ ओ पी राठौर ने कहा कि एबीवीपी के स्थापना दिवस के अवसर पर, संगठन के कार्यकर्ताओं ने गुरसरांय में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए, जिनमें छात्रों को राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया गया। पूर्व जिला संयोजक हरिशचन्द्र नायक ने कहा कि एबीवीपी का मुख्य उद्देश्य छात्रों के बीच राष्ट्रवाद की भावना को जागृत करना और उन्हें देश के विकास में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करना है। इस अवसर पर निवर्तमान पूर्व जिला सहसंयोजक नीतेश अग्रवाल,तहसील संयोजक आयुष त्रिपाठी,नगर मंत्री अंशुमान उपाध्याय,नगर सहमंत्री कार्तिक पाठक सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन संदीप श्रीवास्तव व अंत में आभार कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुंवर रामकुमार सिंह ने व्यक्त किया।

टहरौली से अमरनाथ यात्रियों का जत्था रवाना

माल्यार्पण कर और ढोल बजा कर वरिष्ठ नागरिकों ने किया विदा

समय जगत टहरौली। पवित्र अमरनाथ गुफा में बाबा बर्फानी के दर्शन करने के लिये कस्बा टहरौली से करीब 40 श्रद्धालुओं का जत्था रवाना हुआ। बिजना रोड स्थित ग्राम पंचायत टहरौली किला के खेल मैदान में श्रद्धालुओं को एकत्र किया गया जहां वरिष्ठ नागरिकों, अधिवक्ताओं एवं पत्रकारों द्वारा उनका फूल माला पहनाकर एवं उन्हें रोरी तिलक लगा कर उनकी विदाई की गई। ग्राम प्रधान टहरौली खास नेपाल सिंह यादव ने सभी श्रद्धालुओं को यात्रा की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि देशाटन का अपना महत्व है। तीर्थ क्षेत्र न केवल बाहरी सौंदर्य अवलोक का विषय है अपितु हर स्थान पर एक अलग ऊर्जा होती है, जिसे केवल मौन में ही ग्रहण किया जा सकता है। गणमान्यजनों द्वारा ढ़ोल बाजे के साथ लोगों को गले लगा कर बिदाई दी गई। भाजपा नेता राघवेन्द्र प्रताप सिंह बुन्देला और रजिस्ट्री लेखक कालीचरण कुशवाहा के नेतृत्व में

पुष्पेंद्र ग्राम प्रधान परसा , राकेश कुशवाहा, सुरेन्द्र प्रजापति, देवेन्द्र, प्रदीप यादव, रविन्द्र कुशवाहा, राहुल अग्रवाल, प्रेमरारायन, उमेश साहू, विवेक, शम्भूदयाल ग्राम प्रधान नोटा, राकेश नोटा, बंदना देवी, दीपेन्द्र, भूपेन्द्र, राजकुमारी, रामजी, ऊषा देवी, विनीता, सीमा, हुकम, रामदास, दीनदयाल, शिवम, सोनू साहू, राघवेन्द्र, घनेन्द्र, पुष्पेन्द्रखरे, हरचरन, जितेन्द्र, अंशुल, रविन्द्र, जयहिंद, महेन्द्र, नरसिंह बुन्देला, रोहित, धर्मेन्द्र आदि श्रद्धालु अमरनाथ यात्रा पर रवाना हुये।

जबकि उन्हें बिदाई देने वालों में नेपाल सिंह यादव, राघवेन्द्र प्रताप सिंह बुन्देला, कालीचरण कुशवाहा, मानसिंह कुशवाहा, संजय शर्मा, आशीष उपाध्याय, गोविंद प्रतीक, रविन्द्र बिरथरे, संजय शर्मा, एडवोकेट भानू पटेल, एडवोकेट रामचरण कुशवाहा, स्वामी प्रसाद, दीपक प्रजापति, गोपी कुशवाहा, स्वामी प्रसाद कुशवाहा, कृपाराम कुशवाहा, अरविंद गुप्ता, दीपू बिरथरे आदि उपस्थित रहे।

कवि गोष्ठी में बहे साहित्य के रंग

समय जगत गुरसराय । नगर की प्रतिष्ठित कवयित्री डॉक्टर प्रतिज्ञा गुप्ता के निवास पर गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष में सरस काव्य गोष्ठी सम्पन्न हुई । कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ शिवाजी चौहान ने की। मां वीणावादिनी के पूजन अर्चन के पश्चात डा. प्रतिज्ञा गुप्ता की वाणी वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।इसके पश्चात उन्होंने बुंदेली गीत सुनो मोरे पिया ।

दर्शन को तरसे हमाओ जिया। प्रस्तुत किया तत्पश्चात शिशु पाल सिंह सरस ने गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहा- बड़े भाग्य से गुरु मिलें उत्तम और महान ।गुरु कृपा से पूर्ण हों मन के सब अरमान।। गीतकार विवेक बरसैंया ने कहा- तेरा दिया गुलाब अभी डायरी में है।सुंदर सा एक ख्वाब अभी डायरी में है।। अध्यक्षता कर रहे डॉक्टर शिवाजी चौहान बोले ना समझ काबिल को समझने लगे हैं।

लोग भी अब मर्सिया गाने लगे हैं।रघुवीर सिंह यादव ने ऑपरेशन सिंदूर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा- सिंदूर का बदला हमने सिंदूर वार से लिया।बेकसूर का बदला हमने कसूरवार से लिया ।।शेख लाल खाँ ने गुरु की महिमा का वर्णन कुछ यों किया -है

महिमा जा जगत में गुरु की सुनो अनंत।मिलते नहीं संसार में गुरु बिन श्री भगवंत।। चंद्रभान सिंह चंद्र एवं उदयभान शर्मा ने भी काव्य पाठ किया।संचालन शिव कुमार तिवारी ने किया। आभार ओमप्रकाश गुप्ता ने व्यक्त किया।

गुरू पूर्णिमा उत्सव मनाया

समय जगत गुरसरांय। गांधीनगर के संत शिरोमणि गुरु रविदास मंदिर पर गुरु पूर्णिमा के अवसर पर मंदिर के प्रबन्ध समिति द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता जगदीश बाबू सेरिया वालों ने की। भगवानदास मास्टर द्वारा बुद्ध वंदना त्रिशरण पंचशील का वाचन कराया गया। और कन्या भोज किया गया। इस मौके पर सांसद प्रतिनिधि जालौन, गरौठा,भोगनीपुर राजीव कुमार ने उपस्थित लोगो को संबोधित करते हुई बुद्ध मार्ग पर चलने का आव्हान किया। इस मौके पर डॉक्टर डीआर वर्मा महेन्द्र सिंह फौजी,मुन्ना लाल पूर्व प्रधान सेमरी,परमेश्वरी दयाल,छिमाधर भास्कर,राजेश मास्टर,धन प्रसाद,मानिक लाल दरोगा,अख्तर राईन,जुगल किशोर,बहोरन मास्टर,मौजूद रहे।

भानी देवी गोयल सरस्वती विद्यामंदिर इंटर कॉलेज में मनाया गुरु पूर्णिमा उत्सव

समय जगत झांसी। भानी देवी गोयल सरस्वती विद्यामंदिर इंटर कॉलेज में गुरु पूर्णिमा का उत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य छत्रसाल स्वर्णकार ने अध्यक्षता की और आचार्य पंडित राम-लखन उपाध्याय ने मुख्य वक्ता के रूप में विद्यार्थियों को गुरु के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि गुरु का स्थान हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है, और हमें उनके ज्ञान और अनुभव से सीखने का प्रयास करना चाहिए।कार्यक्रम में विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया और अपने भाषण, गीत और कविता के माध्यम से सभी को भावविभोर कर दिया। कक्षा षष्ठ के छात्र भैया आदित्य पटेल एवं बहिन अक्षरा ने भाषण तथा भैया देव बंसल ने कविता के माध्यम से गुरु की महत्ता को उजागर किया।

कक्षा अष्टम की बहिन अनामिका पटेल और भैया कुनाल सिंह ने भी अपने भाषण में गुरु के स्थान को सर्वोपरि बताया। कक्षा सप्तम की बहिन आस्था कुशवाहा और बहिन गौरी बंसल ने संयुक्त रूप से भावपूर्ण भजन प्रस्तुत कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया इस अवसर पर भैया तेजस तिवारी ने भी अपने भाषण में गुरु की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।कक्षा नवम की बहिन साक्षी यादव और एकादश की बहिन वंशिका सिंह ने भी अपने वक्तव्य के माध्यम से सबको प्रभावित किया। विद्यालय की आचार्या बहिन पूजा गुप्ता ने भी एक शानदार हृदय स्पर्शी भजन प्रस्तुत किया, जिसने सभी के अंतर्मन को झंकृत कर दिया।इस अवसर पर विद्यार्थियों ने अपने गुरुओं को सम्मानित किया और उनका आशीर्वाद लिया। प्रधानाचार्य छत्रसाल स्वर्णकार ने भी विद्यार्थियों को गुरु पूर्णिमा के महत्व के बारे में बताया और उन्हें अपने गुरुओं का सम्मान करने के लिए प्रेरित किया।भानी देवी गोयल सरस्वती विद्यामंदिर इंटर कॉलेज का यह कार्यक्रम एक यादगार अवसर था, जिसने विद्यार्थियों को गुरु के महत्व के बारे में जानने और उनके प्रति सम्मान व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया ।संचालन विद्यालय के आचार्य बृजभूषण झा ने किया,

गुरू पूजन कर पं. कमलाकान्त अरजरिया से लिया भक्तों ने आशीर्वाद

समय जगत, झांसी। यहां गल्ला मण्डी रोड पर अन्तर्राष्टीय भागवताचार्य , ज्योतिषकर्ता व वैदिक अनुष्ठानकर्ता आचार्य पं. कमला कान्त अरजरिया के गुरू चरणों में भक्तो ने शत-शत नमन कर आशीर्वाद लिया।गुरूपूर्णिमा के पावन अवसर पर आचार्य पं. कमला कान्त अरजरिया के आवास पर प्रातः काल सें ही भक्तो ने पहुंचना शुरू कर दिया था। जो सिलसिला देंर रात तक चलता रहा। अपने गुरू के दर्शन करने को उ.प्र. म.प्र. व जनपद झासी के महानगर व ग्रामीण क्षेत्र सें सैकडों की संख्या में भक्तो ने सपरिवार पहुंचे व आशीर्वाद लिया। गुरू जी के दर्शन कर भक्तों में उत्साह देखा गया। इस मौके पर झासी से अभय ब्रहमचारी , गुरसरायं से वरिष्ठ पत्रकार अरूण चतुर्वेदी , निवाडी से जय राम गुप्ता , मनोज अग्रवाल , गुणसागर गुप्ता , वीरेन्द्र कुमार साहू , यश अग्रवाल , वैंभव अग्रवाल आदि भक्त गणो नें पहुचकर गुरू जी से आशीर्वाद प्राप्त किया ।

डा. पप्पू राम सहाय व इंजी.

जगदीश लाल ने किया गुरू पूजन

उधर झासी कें वरिष्ठ समाज सेवी डा. पप्पू राम सहाय व इंजी. जगदीश लाल , डायरेक्टर कुंवर लाखन सिंह अस्ता व एड. अभय ब्रहमचारी ने समय जगत कार्यालय पहुचकर गुरूपूर्णिमा के पावन अवसर पर समय जगत के प्रदेश प्रभारी श्री रामसेवक अरजरिया का माल्यर्पण कर आशीर्वाद लिया।

बारिश से दिल्ली में 200 जगहों पर लगा जाम

सड़कें पानी से लबालब, रास्तों में घंटों फंसे रहे लोग

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में बुधवार शाम व गुरुवार सुबह हुई बारिश से दिल्ली की सड़कों पर जबरदस्त जाम लग गया। दिल्ली में करीब 200 जगहों पर जाम लगा। लोग घंटों जाम में फंसे रहे। प्रमुख मार्गों पर जलभराव के चलते लगे जाम से ट्रैफिक कॉलोनियों में घुस गया। कॉलोनी में क्रॉस ट्रैफिक से कॉलोनी में जाम इस कदर हो गया कि वाहन किसी भी तरफ टच से मश नहीं हो रहे थे। बीआरटी कॉरिडोर (पूर्व) पर चिराग दिल्ली की तरफ जाते हुए जाम होने की वजह से ट्रैफिक ग्रेटर कैलाश-एक के एम ब्लाक में घुस गया। एम ब्लॉक रोड रात नौ से दस बजे तक जाम रही। इस तरह ग्रेटर कैलाश-दो से तारा अपार्टमेंट की तरफ जाने वाले मार्ग पर जाम होने से ट्रैफिक कालकाजी-डीडीए फ्लैट्स में घुस गया। लोगों को आधा किलोमीटर से कम की दूरी तय करने में एक से सवा घंटा लग गया। बारिश के चलते रविदास मार्ग पूरी तरह से चौक था। इस कारण कालकाजी, तुगलकाबाद, ओखला, गोविंदपुरी, अलंकनंदा आदि कॉलोनियों में एक से डेढ़ घंटे जाम रहा। इसी तरह का हाल एमबी रोड पर पुल प्रह्लादपुर अंडरपास, संगम विहार, तिगड़ी, खानपुर व साकेत के पास वाहनों की लंबी लाइनें लगीं। जलभराव से पूरी दक्षिण दिल्ली में बुधवार रात व गुरुवार सुबह कई घंटे जाम रही। लक्ष्मी नगर, आनंद विहार, जाफराबाद, आजादपुर, रोहिणी, राजौरी गार्डन, कीर्ति नगर व उत्तम नगर में कॉलोनी में ट्रैफिक के घुसने से बुरा हाल रहा। जलभराव व बारिश से दिल्ली के मुख्य मार्गों के साथ ही हाईवे पर भी लंबा जाम लग गया। दिल्ली एनसीआर की सड़कों पर पीक आवर्स के दौरान वाहनों का दबाव भी अधिक रहता है, इसी वजह से लोग घंटों जाम में फंसे रहे। बारिश की वजह से जाम लगने से लोगों को बेहद परेशानी हुई। दिल्ली में तेज बारिश की वजह से ऑफिस से घर लौटने वालों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। इस दौरान निजी और सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करने वाले दोनों तरह के लोगों को परेशानी हुई। आईटीओ में इतनी तेज बारिश हुई कि अंधेरा छा गया। आसमान में काले बादल छाने और तेज बारिश की वजह से लोगों को अपने वाहन की हेडलाइट जलाकर गुजरना पड़ा। दिल्ली के कर्तव्य पथ का एक वीडियो सामने आया है जिसमें तेज बारिश से बचने के लिए लोग बस स्टैंड की तरफ जाते दिख रहे हैं। सड़क किनारे कई वाहन खड़े दिखाई दे रहे हैं। वहीं कुछ लोग बारिश का आनंद लेते भी दिखे। कश्मीरी गेट के पास भी पानी भरने से लोगों को परेशानी हुई है। भारी बारिश के बाद राजधानी दिल्ली के अलग-अलग इलाकों के वीडियो सामने आए हैं। वीडी मार्ग इलाके में, जीआरडी रोड पर भी बारिश के बाद जल जमाव स्थिति बन गई। सरिता विहार अंडरपास में जगुआर कार फंस गई थी। वहीं जखीरा अंडरपास के अलावा दुपहिया सवार फंस गए थे। रात से हो रही मानसून की बारिश से लोगों को उमस से राहत मिली, लेकिन कई इलाकों में जलभराव और ट्रैफिक जाम लग गया। नेहरू प्लेस, अरबिंदो मार्ग, कैलाश कॉलोनी, लाजपत नगर, सिरी फोर्ट रोड, चिराग दिल्ली फ्लाईओवर, आउटर रिंग रोड, जी के मार्ग, रेल भवन, अक्षरधाम, आश्रम, आईटीओ, मंडी हाउस, रफी मार्ग, पुल प्रहलादपुर, एमबी रोड, एमजी रोड, ओल्ड रोहतक रोड, शादीपुर, मधुबन चौक, आंनद विहार, लक्ष्मी नगर, आईएसबीटी रिंग रोड, आजादपुर, पीरागढ़ी रोड, नजफगढ़ रोड, द्वारका व एयरपोर्ट अंडरपास, वसंत विहार और राष्ट्रीय राजमार्ग- 8 सहित शहर के कई हिस्सों से पानी भरने से गाड़ियों की लाइन लग गई थीं। जाम में फंसे कई लोगों ने बताया कि जाम से परेशान होकर जब वह दिल्ली ट्रैफिक पुलिस की हेल्पलाइन नंबर पर फोन कर रहे थे तो फोन लग नहीं रहा था।

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष ने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के पिता को दी श्रद्धांजलि

समय जगत, भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने शुक्रवार को नई दिल्ली में केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के पूज्य पिताश्री स्वर्गीय दाऊलाल वैष्णव की स्मृति में आयोजित प्रार्थना सभा में सम्मिलित होकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

सार-समाचार

काईट और मलेशिया यूनिवर्सिटी के बीच हुआ समझौता ज्ञापन

मुरादनगर। काईट ने इंटी इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, मलेशिया के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। वर्चुअल हस्ताक्षर समारोह में इंटी इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के प्रो-वाइस चांसलर प्रो. डॉ. शम्सुल नाहर अब्दुल्ला और काईट के निदेशक अकादमिक डॉ. आदेश पांडे की उपस्थिति रही। प्रो. डॉ. शम्सुल नाहर अब्दुल्ला ने कहा, काईट के साथ यह सहयोग ज्ञान साझाकरण, नवाचार और शैक्षणिक विकास के नए द्वार खोलता है। हम एक ऐसे संस्थान के साथ साझेदारी करके उत्साहित हैं जो उत्कृष्टता और वैश्विक संपर्क के हमारे दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करता है। साथ मिलकर हम दोनों संस्थानों के छात्रों और शिक्षकों के लिए परिवर्तनकारी शिक्षण अनुभव तैयार कर सकते हैं। डॉ.आदेश पांडे ने कहा, यह समझौता ज्ञापन एक वैश्विक रूप से समृद्ध शैक्षणिक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। डीन डॉ. रेखा कश्यप, डॉ. आशीष कर्णवाल, डॉ. पुनीत गोस्वामी, डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव, डॉ. हर्ष खट्टर, डॉ. के. नागराजन, डॉ. रुचिता गौतम, डॉ. प्रीति चिटकारा, डॉ. मधु गौतम आदि मौजूद रहे।

दिल्ली-मेरठ मार्ग पर सवारियों से भरा ई-रिक्शा पलटा, 5 हुए घायल

मुरादनगर। दिल्ली-मेरठ मार्ग पर गंगनहर पुल के पास अनियंत्रित होकर एक ई-रिक्शा पलट गया। हादसे पांच लोग घायल हो गए। प्राथमिक उपचार के बाद सभी को छुट्टी दे दी गई। बृहस्पतिवार दोपहर करीब एक बजे एक ई-रिक्शा सवारी लेकर जलालाबाद की ओर से मुरादनगर जा रहा था। जब वह दिल्ली मेरठ मार्ग पर गंगनहर पुल पहुंचा तो ई-रिक्शा अनियंत्रित होकर पलट गया। ई रिक्शा पलते ही सवारियों में चीख पुकार मच गई। मौके पर पहुंचे राहगीरों ने किसी तरह ई-रिक्शा को सीधा करके सवारियों को बाहर निकाला। सभी को स्थानीय अस्पताल ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद सभी को छुट्टी दे दी गई।

फरीदाबाद नगर निगम में 3 पार्षद हुए मनोनीत

फरीदाबाद। नगर निगम में सरकार ने 3 पार्षदों को मनोनीत किया है। जिसकी अधिसूचना लिखित रूप में जारी कर दी है। भाजपा नेताओं व लोगों ने नवनियुक्त मनोनीत पार्षदों को मुबारकबाद दी है। सरकार ने फरीदाबाद में 3 सदस्यों को पार्षद मनोनीत किया है। इसमें योगेश शर्मा, प्रियंका बिष्ट बुदानी और जसवंत सैनी शामिल हैं। जसवंत सैनी फरीदाबाद के रहने वाले हैं जो कई साल से बीजेपी में सक्रिय हैं। वे पहले एबीवीपी के जिला संयोजक भी रह चुके हैं। वहीं योगेश शर्मा बल्लभगढ़ के रहने वाले हैं। वहीं तीसरी मनोनीत पार्षद प्रियंका बिष्ट बुदानी सेक्टर 86 फरीदाबाद की रहने वाली हैं। तीनों पार्षद बीजेपी समर्थक हैं।

2500 से अधिक विद्यार्थियों ने ली सड़क सुरक्षा की शपथ

फरीदाबाद। सराय ख्वाजा स्थित राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से एक शपथ ग्रहण कार्यक्रम का बृहस्पतिवार को आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में 2500 से अधिक विद्यार्थियों ने सड़क के नियम, जीवन के उपकरण विषय पर शपथ ली। यह आयोजन विद्यालय के प्रधानाचार्य रविंद्र कुमार मनचंदा के मार्गदर्शन में जूनियर रेड क्रॉस और सेंट जॉन एम्बुलेंस ब्रिगेड की ओर से लीगल लिटरेसी क्लब के सहयोग से किया गया। प्रधानाचार्य ने बच्चों को हेलमेट पहनना, सीट बेल्ट लगाना, रेड लाइट पर रुकना, नशे में गाड़ी न चलाना और मोबाइल का इस्तेमाल न करने जैसे नियमों के पालन के महत्व को समझाया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों और स्कूल स्टाफ ने एक स्वर में यह संकल्प लिया कि वे न केवल स्वयं नियमों का पालन करेंगे, बल्कि दूसरों को भी जागरूक करेंगे।

फाइनेंस कंपनी के 17.29 लाख उगाही कर भागा एजेंट

गाजियाबाद। अर्बन कोआपरेटिव सोसायटी लि. की रजिस्टर्ड फर्म सक्षम निधि लि. का एजेंट ऋण लेने वाले ग्राहकों से 17.29 लाख रुपये की उगाही कर भाग गया। ऋण मैनेजर नरेंद्र सिंह ने एजेंट और उसके माता, पिता, भाई, पत्नी और एक दोस्त के खिलाफ कविनगर थाने में मुकदमा दर्ज कराया है। एसीपी भाष्कर वर्मा ने बताया कि आरडीसी राजनगर स्थित सक्षम निधि के ऋण मैनेजर नरेंद्र सिंह निवासी गोविंदपुरम के मुताबिक उनके कार्यालय में वर्ष 2019 से सत्यवान निवासी हरबंश नगर घूकना थाना नंदग्राम बतौर एजेंट कर्मचारी है।

केमिकल फैक्टरी में पेंट बनाते समय मिक्सिंग बाल्टी में हुआ विस्फोट

दस कर्मी झुलसे, पांच की हालत गंभीर

नई दिल्ली। नोएडा सेक्टर-8 स्थित एक केमिकल फैक्ट्री में पेंट बनाने के दौरान मिक्सिंग बाल्टी में बृहस्पतिवार दोपहर बाद ब्लास्ट हो गया। केमिकल रिएक्शन से हुए ब्लास्ट में दस कर्मचारी झुलस गए। इनमें पांच लोग गंभीर रूप से झुलसे। सभी को अस्पताल में ले जाया गया। इस हादसे में फैक्ट्री में आग नहीं लगी थी। पांच गंभीर को दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल रेफर कर दिया गया। सेक्टर-8 के एफ ब्लॉक में एक केमिकल फैक्ट्री में पेंट बनाने का काम होता है। फैक्ट्री में बृहस्पतिवार दोपहर करीब तीन बजे के बाद कई कर्मचारी काम कर रहे थे। रोजाना की तरह कर्मचारी पेंट में थिनर मिलाकर अन्य रंग का पेंट बना रहे थे। इस दौरान कर्मचारियों ने 30 लीटर की एक बाल्टी में अधिक केमिकल डालकर अन्य केमिकल भी मिला दिया। इस कारण केमिकल रिएक्शन से बाल्टी में ब्लास्ट हो गया। इससे मौके पर अफरातफरी मच गई और वहां काम कर रहे आशीष, राकेश, अर्जुन, अखिलेश, अजय, सरिता, राजेश, अखिलेश, कन्हैया कुमार व अंकित झुलस गए। इसमें राजेश, अखिलेश, कन्हैया, अजय के साथ एक अन्य 20 प्रतिशत से अधिक झुलसा। कर्मचारियों का हाथ, चेहरा, पेट और पैर केमिकल ब्लास्ट से चपेट में आ गया। मुख्य अग्निशमन अधिकारी प्रदीप कुमार चौबे का कहना है कि अधिक केमिकल मिलाने के कारण ब्लास्ट हुआ। कुछ कर्मचारी झुलस गए, लेकिन कंपनी में कोई आग नहीं लगी थी। विभाग की टीम मामले की जांच कर रही है। फैक्ट्री में ब्लास्ट होने के बाद मौके पर पुलिस की टीम के साथ-साथ दो दमकल गाड़ियां भी पहुंचीं। हालांकि आग नहीं लगी थी, इस कारण दमकल गाड़ियां मौके पर खड़ी रहीं। इसके बाद झुलसे लोगों को अस्पताल पहुंचाने के लिए तीन एंबुलेंस को बुलाया गया और जिला अस्पताल ले जाया गया। जिला अस्पताल में प्राथमिक इलाज के बाद दो एंबुलेंस पांच गंभीर रूप से झुलसे लोगों को दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल ले गई।

घुली ईंटों से बन रही हैं आंगनवाड़ी भवन की दीवारें, जिम्मेदार दें ध्यान

समय जगत, अनूपपुर। हमेशा ही भ्रष्टाचार के मामलों में सुर्खियां बटोरने वाले जनपद पंचायत अनूपपुर के ग्राम पंचायत बेलियाबड़ी में आंगनबाड़ी केंद्र के निर्माण कार्य में सुरक्षा मानकों को ताक में रखकर काम कराया जा रहा है।महिला एवं बाल विकाश आंगनवाड़ी भवन निर्माण योजना अंतर्गत शासन के सुरक्षात्मक मानकों के अनुसार लगभग 11 लाख की लागत की राशि से आंगनवाड़ी भवन तथा बाउंड्रीवॉल का निर्माण कराया जा रहा है।वैसे तो निर्माण एजेंसी ग्राम पंचायत को निर्माण कार्य कराया जाना था लेकिन ग्रामीणों ने बताया कि सरपंच को आज तक यहां नहीं देखा गया है।काम कौन करा रहा है, इसकी भी उन्हें जानकारी नहीं है।निर्माण कार्य में गुणवत्ता नदारद है। स्टीमेट के विपरीत छ? से कालम व बीम तैयार किए गए हैं।कालमों में रिंग जो किसी निर्माण की री? होती है उसे भी मनमाना लगाया जा रह है।वैसे विकासखंड का यह एकमात्र आंगनबाड़ी भवन नहीं है जिसका निर्माण गुणवत्ताविहीन किया जा रहा है।कई ग्रामों में हो रहे निर्माण इसी तर्ज पर हो रहे है। आंगनबाड़ी केंद्र के भवन के निर्माण में घटिया क्वालिटी की ईंट लगाकर खानापूर्ति की जा रही है।ग्रामीणों के अनुसार गुणवत्ताविहीन हो रहे कार्य का विरोध होने के बाद भी निर्माण एजेंसी मनमानी कर रही है।विभागीय अधिकारियों तक शिकायतें भी पहुंचती हैं लेकिन जांच में खानापूर्ति व लेन-देन कर मामला रफा-दफा कर दिया जाता है।भवन के दीवार निर्माण कार्य में भी घुली ईंटों का उपयोग कर गंभीर लापरवाही बरती जा रही है।ग्रामीणों का कहना है कि यह स्थिति बच्चों की सुरक्षा के लिए खतरनाक साबित हो सकती है।स्थानीय लोगों का यह भी आरोप है कि अधिकारियों की अनदेखी से निर्माण एजेंसी मनमानी कर रही हैं,जिससे विकास कार्य प्रभावित हो रहा है। ज्ञात हो कि सरकार द्वारा ग्राम पंचायतों में इंजीनियर नियुक्त किये हैं, ताकि कोई निर्माण हो तो उसकी गुणवत्ता देख सकें,लेकिन यहां तो बिना जांच के खुलेआम घटिया निर्माण हो रहा है और वे इधर झांकना भी मुनासिब नहीं समझते,इससे सरपंच और सचिव के हौसले बुलंद हैं। वही सूत्रों का कहना है कि यह सब इन्ही जिम्मेदारों के आपसी सांठगांठ और कमीशन के चलते हो रहा है,यदि सही जांच हो तो पंचायत में कई और मामले भी उजागर होंगे।ग्राम पंचायत में नाडेफ,सोख्ता टैंक भी बने हैं,उसमे भी लापरवाही बरती गई है।भ्रष्टाचार के चलते सही मापदण्ड का पालन नहीं किया गया है।जिसको लेकर स्थानीय लोगो ने जल्द ही जिला कलेक्टर से शिकायत की बात कही गई है।

पार्किंग की व्यवस्था नहीं होने से व्यापार पर पड़ रहा असर

मार्केट में नहीं है एक भी सार्वजनिक शौचालय

फरीदाबाद। फतेहपुर बिलोच स्थित मुख्य बाजार में मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। बाजार में स्ट्रीट लाइटों की कमी है। पार्किंग की कोई उचित व्यवस्था नहीं है और आवारा पशु खुलेआम घूमते रहते हैं। इसके अलावा मार्केट में एक भी सार्वजनिक शौचालय नहीं है, जिससे ग्राहकों और महिलाओं को परेशानी होती है।पार्किंग की व्यवस्था नहीं होने से व्यापार पर असर पड़ रहा है। बृहस्पतिवार को संवाद कार्यक्रम में दुकानदारों ने मार्केट की बुनियादी समस्याओं पर चर्चा की। दुकानदारों ने बताया कि बाजार में सुविधाओं का अभाव है, जिससे व्यापार पर भी असर पड़ रहा है। उन्होंने बताया कि बाजार में पार्किंग की कोई उचित व्यवस्था नहीं है, जिससे आए दिन जाम की स्थिति बनती है। इससे परेशान होकर ग्राहक किसी और बाजार की ओर रुख करने लगे हैं। वहीं, स्ट्रीट लाइटों की कमी के कारण शाम के समय अंधेरा छा जाता है, जिससे बाजार में सुरक्षा का खतरा बना रहता है। बेसहारा पशु खुलेआम बाजार में घूमते रहते हैं और कई बार दुकानों के बाहर रखे सामान को नुकसान पहुंचा देते हैं। इसके साथ ही सफाई व्यवस्था भी बेहद खराब है। कचरे के ढेर और नालियों की गंदगी से बाजार की स्थिति बदहाल हो चुकी है। बाजार में कोई सार्वजनिक शौचालय नहीं है, जिससे ग्राहकों और खासतौर पर महिलाओं को परेशानी होती है। दुकानदारों ने प्रशासन से मांग की है कि फतेहपुर बिलोच मुख्य बाजार की समस्याओं का जल्द समाधान किया जाए। बाजार को सुव्यवस्थित, स्वच्छ और सुरक्षित बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएं।

पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार

समय जगत, मैहर। पुलिस अधीक्षक मैहर श्री सुधीर अग्रवाल के निर्देशन में थाना प्रभारी रामनगर निरीक्षक विजय सिंह परस्ते एवं सहयोगी टीम द्वारा रेत से लोड ट्रैक्टर चढाकर नायब तहसीलदार की हत्या का प्रयास करने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया। दिनांक 04.07.2025 को प्रभारी नायब तहसीलदार रोशनलाल कोल ग्राम कुबरी में मुन्नीबाई रजक पत्नी रामऔतार रजक के रास्ते के विवाद के स्थल का निरीक्षण करने हेतु राजस्व टीम के साथ जा रहे थे। ग्राम कुबरी में संजय सिंह के घर के पास एक बिना नंबर का नीले रंग का सोनालिका ट्रैक्टर जिसकी ट्राली में रेत लोड थी वाहन के आगे आगे जा रहा था जो नायब तहसीलदार के वाहन को देखकर ट्रैक्टर का चालक ट्रैक्टर को तेज गति से चला कर भागने लगा। ट्रैक्टर के सामने एक बोलेरो वाहन आ जाने से चालक अपना ट्रैक्टर रोक दिया। ट्रैक्टर को एक नाबालिग चला रहा था जो लोगो को देखकर भाग गया। फिर उसका पिता रावेन्द्र बैस उर्फ नेपाली आया और ट्रैक्टर चालू कर जानबूझकर तेज गति एवं लापरवाही पूर्वक ट्रैक्टर चलाते हुये नायब तहसीलदार और उनके स्टाफ को कुचलने की नीयत से ट्रेक्टर चढाने का प्रयास किया । ट्रैक्टर चालक व उसके बेटे द्वारा शासकीय कार्य के दौरान बाधा उत्पन्न कर नायब तहसीलदार, उनके स्टाफ एवं ग्रामीणजनो को मारने का प्रयास किया गया जिस पर थाना रामनगर में अपराध धारा 109,121(1),132,3(5) बीएनएस 3,181,4,5,180 मोटर व्हीकल एक्ट का कायम किया गया। प्रकरण की गंभीरता को देखते हुये पुलिस अधीक्षक श्री सुधीर अग्रवाल के द्वारा थाना प्रभारी रामनगर निरीक्षक विजय सिंह परस्ते के नेतृत्व मे टीम गठित कर आरोपी रावेन्द्र बैस उर्फ नेपाली की शीघ्र गिरफ्तारी करने हेतु निर्देशित किया गया, साथ ही आरोपी पर 5000/रुपये का इनाम उद्घोषित किया गया। टीम के द्वारा सायबर सेल एवं तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर आरोपी को इटारसी रेल्वे स्टेशन से पकडा जाकर पूछताछ हेतु अभिरक्षा मे लिया गया । आरोपी के कब्जे से घटना मे प्रयुक्त ट्रैक्टर एवं ट्राली जप्त कर आरोपी को गिरफ्तार किया गया। जिसे आवश्यक कार्यवाही बाद न्यायालय पेश किया गया। गिरफ्तार आरोपी- रावेन्द्र बैस उर्फ नेपाली पिता रामयश बैस उम्र 40 साल निवासी मझटोलवा थाना रामनगर है। निरी. विजय सिंह परस्ते थाना प्रभारी रामनगर, उनि राकेश मिश्रा चौकी प्रभारी मर्यादपुर , सउनि समरजीत कोल , प्र.आर. नितीश यादव, प्र.आर. रावेन्द्र सिंह प्र.आर. कमलभान सिंह ,आर.राजेश यादव, आर. गुड्डु कुमार, आर. ह्रदेश जाटव , आर. संदीप सिंह परिहार, आर. सुशील द्विवेदी सायबर सेल मैहर की इस कार्यवाही में सराहनीय भूमिका रही।

बारिश के दौरान कृत्रिम झील में डूबकर किशोर की हुई मौत

नई दिल्ली। दक्षिण-पूर्व दिल्ली के न्यू फ्रेंड्स कालोनी इलाके में बुधवार शाम बारिश के दौरान अशोका पार्क की कृत्रिम झील में डूबकर एक किशोर की मौत हो गई। मृतक की शिनाख्त सलमान (17) के रूप में हुई है। बारिश के दौरान सलमान दोस्तों के साथ झील किनारे बैठा था। इसी बीच उसका पैर फिसल गया और वह डूब गया। सलमान हादसे का शिकार हुआ या किसी साजिश का पुलिस इसका पता लगा रही है। पुलिस के मुताबिक मूलरूप से मवाना, मेरठ, यूपी क रहने वाला सलमान अपने पिता ताहिर के साथ खिजराबाद गांव में रहता था। पिता छोटा-मोटा काम करते हैं। बाकी परिवार गांव में रहता है। सलमान भी पिता के साथ काम करता था। बुधवार को वह अपने गांव से वापस लौटा था और दोस्तों से मिलने जाकिर नगर के नजदीक अशोका पार्क चला गया। पार्क में एक कृत्रिम झील बनी है। अचाकन तेज बारिश के बीच झील के किनारे बैठा सलमान अचानक गहरे पानी में गिर गया। दोस्तों ने शोर मचाया, लेकिन उसे मदद नहीं मिली। किसी को तैरना भी नहीं आता था। देखते ही देखते सलमान डूब गया। पुलिस और दमकल की दो गाड़ियां मौके पर पहुंची। उस समय तेज बारिश हो रही थी। बचाव के काम में दिक्कत आने लगी। करीब 10 से 12 फीट गहरी झील में सलमान की तलाश हुई। देर रात 10.50 बजे उसका शव झील से बरामद हुआ। बाद में पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। हादसे के बाद से सलमान के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस मामले की पड़ताल कर रही है। दक्षिण-पूर्व दिल्ली के शाहीनबाग ठोकर नंबर-3 के पास बुधवार शाम बाइक सवार इंजीनियर अफसर हुसैन (30) हादसे का शिकार हो गए। तेज बारिश के दौरान किसी अज्ञात वाहन ने उन्हें कुचल दिया, जिसे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। स्योहारा, बिजनौर, यूपी के रहने वाले अफसर परिवार के साथ जैतपुर में रहते थे। इनके परिवार में पत्नी फरदीन के अलावा साढ़े तीन साल का बेटा है। पुलिस को घटना स्थल पर अफसर का टूटा हुआ हेलमेट मिला है। पुलिस के मुताबिक अफसर गुरुग्राम के एक निजी कंपनी में बतौर इंजीनियर नौकरी कर रहे थे। बुधवार शाम को तेज बारिश के दौरान वह जामिया थाने के सामने होते हुए ठोकर नंबर-3 के पास पहुंचे। इस बीच किसी वाहन ने उनको कुचल दिया। राहगीरों ने शव एक ओर रखकर पुलिस को खबर दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने किसी तरह उनकी पत्नी को कॉल हर हादसे की खबर दी। इस बीच शाहीनबाग रहने वाले अफसर के साले नईम घटना स्थल पर पहुंचे।

आरोपी को सुनाई गई 20 साल की सजा

समय जगत, भोपाल। माननीय विशेष न्यायाधीश (पॉक्सोर एक्टग) महोदय, तहसील बुढार जिला शहडोल ने थाना खैरहा जिला शहडोल के अपराध क्र0 24/21, विशेष प्र0क्र0 29/21 में आरोपी बब्बू बैगा को धारा 366 भादवि में 7 वर्ष सश्रम कारावास एवं धारा 376(3) भादवि में 20 वर्ष सश्रम कारावास एवं कुल 7000 रूपये के अर्थदण्डव से दण्डित किया गया। प्रकरण में श्री मनोज कुमार पनिका एवं श्री कुवेन्द्र शाह ठाकुर सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी तहसील बुढार जिला शहडोल द्वारा पैरवी की गई। संभागीय जनसम्पर्क अधिकारी श्री नवीन कुमार वर्मा ने पैरवीकर्ता अभियोजन अधिकारी श्री मनोज कुमार पनिका सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी तहसील बुढार जिला शहडोल द्वारा दी गई जानकारी अनुसार बताया कि थाना खैरहा में अभियोक?त्री का पिता मौखिक रिपोर्ट करी कि दिनांक 28.01.2021 के रात 07.30 बजे पीडिता मुझे खाना निकालकर खाने को दे दिया और पडोस के घर बैठने चली गई थी कुछ देर बाद वापस घर आ गई। रात करीब 8.00 बजे घर से बाहर टहलने को कहकर निकली तो देर रात तक वापस नहीं आई आसपास पता तलाश किया। उसकी नाबालिग लडकी पीडिता को कोई अज्ञात व्क्कि बहला फुसलाकर भगा ले गया तब थाने में रिपोर्ट दर्ज की गई। अरोपी को इसी मामले में यह सजा सुनाई गई है।

संपादकीय

जनसंख्या नियंत्रण के लिये जागरुकतापूर्ण प्रयास हैं जरूरी

जनसंख्या नियंत्रण देश ही नहीं बल्कि दुनियाभर में बड़ा मुद्दा है तथा इस दिशा में काफी प्रयास भी किये जा रहे हैं। जनसंख्या संबंधित समस्याओं पर वैश्विक चेतना जागृत करने के लिए प्रतिवर्ष 11 जुलाई को 'विश्व जनसंख्या दिवस' मनाया जाता है। भारत के संदर्भ में देखें तो तेजी से बढ़ती आबादी के कारण ही हम सभी तक शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी जरूरतों को पहुंचाने में पिछड़ लेकिन बढ़ती आबादी के कारण ये सभी कार्यक्रम 'ऊंट के मुंह में जीरा' ही साबित हुए। बढ़ती जनसंख्या के कारण ही देश में आबादी और संसाधनों के बीच असंतुलन बढ़ता जा रहा है। वास्तविकता यही है कि विगत दशकों में देश की जनसंख्या जिस गति से बढ़ी, उस गति से कोई भी सरकार जनता के लिए आवश्यक संसाधन जुटाने की व्यवस्था करने में सफल हो ही नहीं सकती थी।

आज देश की बहुत बड़ी आबादी निम्न स्तर का जीवन जीने को विवश है। देश में करीब 40 प्रतिशत आबादी आजादी के बाद से ही गरीबी के आलम में जी रही है। गरीबी में जीवन गुजार रहे ऐसे बहुत से लोगों की यही सोच रही है कि उनके यहां जितने ज्यादा बच्चे होंगे, उतने ही ज्यादा कमाने वाले हाथ होंगे किन्तु यह सोच वास्तविकता के धरातल से परे है। लगातार बढ़ती महंगाई के जमाने में परिवार बड़ा होने से कमाने वाले हाथ ज्यादा होने पर जितनी आय बढ़ती है, उससे कहीं ज्यादा जरूरतें और विभिन्न उत्पादों की कीमतें बढ़ जाती हैं, जिनकी पूर्ति कर पाना सामर्थ्य से परे हो जाता है। इसलिए जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों की सफलता के लिए सर्वाधिक जरूरी यही है कि घोर निर्धनता में जी रहे ऐसे लोगों को परिवार नियोजन कार्यक्रमों के महत्व के बारे में जागरूक करने की ओर खास ध्यान दिया जाए क्योंकि जब तक इस कार्यक्रम में इन लोगों की भागीदारी नहीं होगी, तब तक लक्ष्य की प्राप्ति संभव नहीं है।

देश में जनसंख्या वृद्धि का मुकाबला करने के लिए पिछले काफी समय से कुछ कड़े कानून बनाने की मांग हो रही है लेकिन इस दिशा में कुछ राज्य सरकारें दो से ज्यादा बच्चों वाले परिवारों को सरकारी नौकरी तथा स्थानीय निकाय चुनावों में उम्मीदवारी से अयोग्य अघोषित करने जैसे जिस तरह के उपायों पर विचार कर रही हैं, उन्हें तर्कसंगत नहीं माना जा सकता। हालांकि जनसंख्या वृद्धि मौजूदा समय में गंभीर चुनौती है लेकिन ऐसे उपायों को संवैधानिक नजरिये से भी तर्कसम्मत नहीं माना जाता। चीन में 1980 से पहले केवल एक बच्चा पैदा करने की अनुमति थी, जिसका उल्लंघन करने पर दम्पति को न केवल सरकारी योजनाओं से वंचित कर दिया जाता था बल्कि सजा भी दी जाती थी लेकिन वहां यह नीति सफल नहीं हुई। दरअसल वहां लोगों की सामान्य प्रजनन दर में निरन्तर गिरावट आ रही है और कुछ विशेषज्ञों के मुताबिक यही स्थिति भारत में भी होनी है। ऐसे में जनसंख्या नियंत्रण के लिये लोगों का जागरुकतापूर्ण सहयोग जरूरी है।

सूची में सुधार पर सुप्रीम सहमति सराहनीय

नजरिया

बिहार में मतदाता सूची सुधार पर सुप्रीम कोर्ट की हरी झंडी सिर्फ एक न्यायिक फैसला नहीं, बल्कि लोकतंत्र के मूल्य को पुष्ट करने वाला ऐतिहासिक एवं प्रासंगिक निर्णय है। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को बिहार में मतदाता सूची की समीक्षा के लिए आधार, राशन और वोटर कार्ड को भी मान्यता देने का सुझाव देकर आम लोगों की मुश्किल हल करने की कोशिश की है। इससे प्रक्रिया आसान होगी और आशंकाओं को कम करने में मदद मिलेगी। बेशक, फर्जी नाम मतदाता सूची में नहीं होने चाहिए लेकिन ऐसे अभियानों के दौरान आयोग का जोर ज्यादा से ज्यादा नाम वोटर लिस्ट से निकालने के बजाय, इस पर होना चाहिए कि एक भी नागरिक चुनावी प्रक्रिया में शामिल होने से वंचित न रह जाए। विपक्ष को चाहिए कि वह इस फैसले को राजनीतिक हार न माने, बल्कि इसे एक अवसर माने, जनविश्वास अर्जित करने का, लोकतंत्र में आस्था बढ़ाने का और सबसे जरूरी, राष्ट्रहित को राजनीति से ऊपर रखने का। मतदाता सूची में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) का कार्य केवल बिहार ही नहीं, देश के अन्य राज्यों में प्राथमिकता के आधार पर प्रारंभ करना चाहिए।

ललित गर्ग

भारतीय लोकतंत्र में सुप्रीम कोर्ट का निर्णय सर्वोपरि होता है। चुनाव आयोग यदि चुनाव कराने को तैयार है, और इसकी जुड़ी किन्हीं प्रक्रियाओं में कोई त्रुटि या खामी है तो उसका सुधार करना संविधान सम्मत है, तो फिर इस पर प्रश्नचिन्ह लगाने का अधिकार किसी भी राजनीतिक दल को नहीं होना चाहिए। लेकिन जो प्रश्न जनता के मानस को उद्वेलित करता है, वह यह है कि विपक्ष बार-बार चुनावी प्रक्रियाओं, राष्ट्रीय हितों या सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर भी एकमत होकर विरोध करता है, आखिर क्यों? बिहार में एसआईआर को लेकर जो याचिकाएं और बहसें सामने आई, उनमें एक प्रमुख तर्क यह था कि समय उपयुक्त नहीं है, सरकार अस्थिर है, या सामाजिक समीकरण तैयार नहीं हैं। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि जनता को प्रतिनिधित्व देने का अधिकार सर्वोपरि है। लेकिन त्रुटिपूर्ण या फर्जी मतदाता सूची से चुनाव कराना भी लोकतंत्र का अपमान है। अदालत ने यह भी संकेत दिया कि देर-सवेर नहीं, संवैधानिक कर्तव्य को समय पर निभाना जरूरी है।

अदालत ने एसआईआर पर कोई आदेश नहीं दिया है, लेकिन अपने इरादे की ओर इशारा तो कर ही दिया है। अदालत ने टाइमिंग को लेकर जो सवाल उठाया, वह उचित प्रतीत होता है। बिहार में इसी साल के आखिर तक विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में इतनी विस्तृत कवायद के लिए शायद उतना वक्त न मिल पाए, जितना मिलना चाहिए। बिहार में एसआईआर को लेकर जो असमंजस है, उसकी एक वजह निश्चित ही टाइमिंग है। जिनके पास जरूरी डॉक्युमेंट नहीं हैं, वे इतनी जल्दी उनका इंतजाम नहीं कर पाएंगे। हालांकि आयोग ने भरोसा दिलाया है कि किसी भी व्यक्ति को भी अपनी बात रखने का मौका दिए बिना मतदाता सूची से बाहर नहीं किया जाएगा। वैसे बिहार में चुनाव को देखते हुए ही फर्जी मतदाताओं की संख्या बढ़ी या तथाकथित राजनीतिक दलों ने इन फर्जी मतदाताओं को बढ़ाया है। ऐसे में इन फर्जी मतदाताओं पर कार्रवाई अपेक्षित है। यह मामला केवल बिहार तक सीमित नहीं रहना चाहिए। दूसरे राज्यों में मतदाता सूचियों की समीक्षा किस तरह होगी, यह बिहार में अपनाई जाने वाली प्रक्रिया पर निर्भर करेगा। ऐसे में स्वाभाविक ही नजरें इस बात पर टिकी हैं कि सुप्रीम कोर्ट में आखिरकार इस प्रक्रिया का कैसा स्वरूप तय होता है? भारतीय राजनीति में विपक्ष का कार्य सरकार की नीतियों पर निगरानी रखना है, आलोचना करना है, लेकिन वह आलोचना रचनात्मक होनी चाहिए, राष्ट्र-विरोधी नहीं। आज हम देख रहे हैं कि आर्टिकल 370 हटाना हो, नागरिकता संशोधन अधिनियम-सीएए, राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर-एनआरसी जैसे कानून हों, अग्निपथ योजना हो, या राम मंदिर निर्माण-लगभग हर मुद्दे पर विपक्ष ने एकमत होकर विरोध किया है। चाहे चीन या पाकिस्तान से जुड़ी संवेदनशील मसले हों, या फिर राष्ट्रीय सुरक्षा के निर्णय, विपक्ष अक्सर उन बिंदुओं पर एक सुर में सरकार का विरोध करता है, जबकि ऐसे राष्ट्रीयता के मुद्दों पर विपक्ष को सरकार एवं देश के साथ एकजुटता दिखानी चाहिए। यह संयोग नहीं, एक दूषित राजनीतिक रणनीति बनती जा रही है कि 'जो सरकार करे, उसका विरोध करो', चाहे मुद्दा देशहित का ही क्यों न हो। इन स्थितियों में आम जनता का एक बड़ा सवाल है कि विपक्ष देश के साथ है या सिर्फ सत्ता की भूख के साथ? क्या चुनाव प्रक्रिया पर विरोध करना लोकतंत्र का मज़ाक नहीं है? क्या न्यायपालिका के निर्णयों को चुनौती देना सिर्फ स्वार्थ की राजनीति नहीं? क्या राष्ट्रीय मुद्दों पर सरकार के साथ खड़े होने से विपक्ष की राजनीति कमजोर हो जाएगी? जब विपक्ष सिर्फ विरोध करने के लिए विरोध करता है, तो उसका नैतिक बल कमजोर होता है, और जनता का विश्वास टूटता है।

भारतीय राजनीति को अब रचनात्मक विपक्ष की ज़रूरत है, ऐसा विपक्ष जो सत्ता में नहीं है, फिर भी राष्ट्र के लिए सत्ता के साथ खड़ा हो सकता है। जो यह समझ सके कि लोकतंत्र सरकार और विपक्ष दोनों से चलता है, लेकिन राष्ट्र सबसे ऊपर है। बिहार में चुनाव आयोग को सुप्रीम कोर्ट की अनुमति इस बात का प्रतीक है कि संस्थाएं अभी भी न्याय और संवैधानिकता की रक्षा कर रही हैं। लेकिन विपक्ष यदि इस निर्णय पर भी नकारात्मक रवैया अपनाता है, तो यह जनता की आकांक्षाओं, लोकतांत्रिक मूल्यों और विकासशील भारत की दिशा के विरुद्ध होगा। विपक्ष को चाहिए कि वह अपनी राजनीति को जनहित से जोड़े, जनविरोध से नहीं। विपक्ष यदि राष्ट्रहित में सोचने की दिशा में खुद को परिवर्तित नहीं करता, तो वह धीरे-धीरे प्रासंगिकता खो देगा। भारतीय लोकतंत्र की नींव निष्पक्ष, पारदर्शी और समावेशी चुनावों पर टिकी होती है। इसी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मज़बूत बनाने की दिशा में बिहार में चुनाव आयोग द्वारा शुरू किया गया मतदाता सूची सुधार अभियान हाल ही में राष्ट्रीय बहस का केंद्र बना। लेकिन जिस बात ने सबसे अधिक ध्यान खींचा, वह यह है कि इस पूरी कवायद के दौरान विपक्ष एक बार फिर एकजुट होकर इसका विरोध करता नजर आया, भले ही मामला राष्ट्रहित और लोकतंत्र की मजबूती से जुड़ा हो। बिहार में राज्य निर्वाचन आयोग ने वोटर लिस्टों को दुरुस्त करने, फर्जी वोटरों की छंटनी, और नए योग्य मतदाताओं को जोड़ने का जो कार्य प्रारंभ किया, वह एक सामान्य प्रशासनिक कार्य नहीं था, बल्कि एक लोकतांत्रिक शुद्धिकरण था। यह सुधार न केवल चुनावों को पारदर्शी बनाता है, बल्कि नागरिक अधिकारों की रक्षा भी करता है। परन्तु कुछ राजनीतिक दलों ने इस प्रक्रिया पर आपत्ति जताई और इसे जातीय आंकड़ों, राजनीतिक संतुलन और चुनावी गणित से जोड़कर कोर्ट का रुख किया। सुप्रीम कोर्ट ने साफ शब्दों में कहा कि मतदाता सूची का शुद्धिकरण संविधान सम्मत प्रक्रिया है और इसे बाधित नहीं किया जा सकता। अदालत ने चुनाव आयोग की कार्रवाई को न केवल वैध बताया, बल्कि उसे लोकतंत्र के लिए आवश्यक भी बताया। यह फैसला यह भी दर्शाता है कि अब समय आ गया है जब चुनावी ईमानदारी को राजनीतिक शोरगुल और वोट बैंक की राजनीति के शोर में दबाया नहीं जा सकता। विपक्ष की प्रतिक्रिया लगभग स्वचालित होती जा रही है, चाहे मुद्दा हो आर्थिक सुधार का, रक्षा नीति का, विदेश नीति का, या अब मतदाता सूची सुधार का। प्रश्न यह उठता है कि क्या हर सुधार प्रक्रिया, चाहे वह कितनी भी लोकतांत्रिक या पारदर्शी हो, विपक्ष के लिए मात्र एक राजनैतिक खतरा है? विपक्ष का यह रवैया यह दर्शाता है कि उसे संवैधानिक संस्थाओं पर भरोसा कम और अपनी राजनीतिक गणनाओं पर भरोसा अधिक है। एक सामान्य नागरिक के लिए सबसे बड़ा अधिकार है वोट देना। यदि कोई सुधार प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि एक भी फर्जी वोटर सूची में न हो, कोई भी योग्य मतदाता छूटे नहीं, जाति, धर्म या राजनीति से ऊपर उठकर नागरिकता के आधार पर मतदाता सूची बने, तो फिर उसका विरोध क्यों?विपक्ष इस डर से ग्रस्त है कि यदि मतदाता सूची साफ-सुथरी हो गई, तो उनके कथित परंपरागत वोट बैंक कमजोर हो सकते हैं। उन्हें डर है कि जातीय और क्षेत्रीय समीकरण बदल सकते हैं। लेकिन यह तर्क लोकतंत्र के मूल सिद्धांत के विरुद्ध है। लोकतंत्र 'जो है, उसे प्रतिबिंबित करे', न कि 'जो चाहिए, उसे निर्मित करे'।

भारतीय संस्कारों से संपूर्ण विश्व हो रहा है आलोकित

किशन भावनानी

वैश्विक स्तर पर आज भारतीय संस्कारों की सरिता, महान परंपरा, भारतीय सभ्यता, वैचारिक अधिष्ठान रूपी आवाज़ अब केवल भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं है, यह विश्व भर में फैल रहे हैं और पूरे विश्व को जोड़ रहे हैं इसका एहसास हमें अब होने लगा है, क्योंकि जब हमने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और टीवी चैनलों पर भारत के पीएम के अनेक विदेश दौरों में देखा कि किस तरह वहां पीढ़ियों से बसें भारतीय मूल के लोगों के दिल में उनके पुरखों द्वारा भारत से लाए लोकतांत्रिक मूल्यों, कर्तव्यों से संस्कारों की सरिता का प्रत्यक्ष प्रमाण दिखा जब वे भारतीय पीएम के प्रति इतनी उत्सुकता और अपनी पुरखों की मिट्टी से कोई उनके देश आता है तो उनके दिल के कोने से करोड़ों खुशियों के फव्वारे होते हैं यह हम देखते आ रहे हैं। ऐसा व्यक्ति जिसका कोई पूर्वज भारतीय नागरिक था और जो वर्तमान में अन्य देश की नागरिकता या राष्ट्रीयता धारण करता है/करती है। इन लोगों के पास उसी देश का पासपोर्ट होता है। चूंकि इन लोगों के पास विदेशी पासपोर्ट होता है। कल्पना चावला कमला हैरिस के काम और नाम तो हम जानते ही हैं इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष की मुख्य अर्थशास्त्री गीता गोपीनाथ और नासा के वैज्ञानिक कमलेश लुल्ला अमेरिकी स्वतंत्रता दिवस से पहले एक प्रतिष्ठित अमेरिकी फाउंडेशन की तरफ से सम्मानित किए गए उन 34 अप्रवासियों में से हैं, जिन्होंने अपने योगदान और कार्यों के माध्यम से अमेरिकी समाज और लोकतंत्र को समृद्ध और मजबूत किया है। गोपीनाथ और लुल्ला न्यूयॉर्क के कार्नेगी कॉरपोरेशन की तरफ से नामित '2021 ग्रेट इमिग्रेंट्स (महान प्रवासी) की लिस्ट में शामिल हैं।ये एक गैर सरकारी संगठन है।विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारतीय समुदाय का दबदबा कायम रखते हुए भारतीय मूल के छह किशोरों ने अमेरिका का प्रतिष्ठित डेविडसन फेलो स्कॉलरशिप हासिल कर ली है। सिंगापुर में भारतीय मूल के सीनियर सेल्स एग्जीक्यूटिव शक्तिबालन बालथंडौथम को अपने लीवर का एक हिस्सा एक साल की बच्ची को दान करने के लिए द स्ट्रेट्स टाइम्स सिंगापुरियन ऑफ द ईयर 2021 का पुरस्कार मिला है, जिससे वह पहले कभी नहीं मिले थे। अमेरिका में मिडिल स्कूल के छात्रों के लिए आयोजित होने वाली एक प्रमुख विज्ञान और इंजीनियरिंग प्रतियोगिता में भारतीय मूल के बच्चों ने शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। प्रतियोगिता के पांच विजेताओं में भारतीय मूल के चार बच्चे शामिल हैं, जिसमें 14 वर्षीय भारतीय मूल के लड़के ने प्रतियोगिता में शीर्ष पुरस्कार प्राप्त किया है। भारतीय संस्कृति व सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति व सभ्यता है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। जीने की कला हो, विज्ञान हो या राजनीति का क्षेत्र भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है।अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती रही हैं किंतु भारत की संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है। पूरे विश्व में भारत अपनी संस्कृति और परंपरा के लिये प्रसिद्ध देश है। ये विभिन्न संस्कृति और परंपरा की भूमि है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता का देश है।

भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व अच्छे शिष्टाचार, तहज़ीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएँ और मूल्य आदि हैं। अब जबकि हरेक की जीवन शैली आधुनिक हो रही है, भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच की घनिष्ठता ने एक अनोखा देश, भारत बनाया है। अपनी खुद की संस्कृति और परंपरा का अनुसरण करने के द्वारा भारत में लोग शांतिपूर्ण तरीके से रहते हैं। पीआईबी के अनुसार भारतीय प्रधानमंत्री ने एक कार्यक्रम में कहा, एक भारतीय दुनिया में कहीं भी रहे, कितनी ही पीढ़ियों तक रहे, उसकी भारतीयता, उसकी भारत के प्रति निष्ठा, लेश मात्र भी कम नहीं होती। वो भारतीय जिस देश में रहता है पूरी लगन और ईमानदारी से उस देश की भी सेवा करता है। जो लोकतांत्रिक मूल्य, जो कर्तव्यों का ऐहसास उसके पुरखे भारत से ले गए होते हैं, वो उसके दिल के कोने में हमेशा जीवंत रहते हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि भारत एक राष्ट्र होने के साथ ही एकमहान परंपरा है, एक वैचारिक अधिष्ठान है, एक संस्कार की सरिता है।भारत वो शीर्ष चिंतन है- जो वसुधैव कुटुंबकम की बात करता है। भारत दूसरे के नुकसान की कीमत पर अपने उत्थान के सपने नहीं देखता। भारत अपने साथ सम्पूर्ण मानवता के, पूरी दुनिया के कल्याण की कामना करता है। इसीलिए, कनाडा या किसी भी और देश में जब भारतीय संस्कृति के लिए समर्पित कोई सनातन मंदिर खड़ा होता है, तो वो उस देश के मूल्यों को भी समृद्ध करता है। इसलिए, आप कनाडा में भारत की आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हैं, तो उसमें लोकतन्त्र की साझी विरासत का भी सेलिब्रेशन होता है।

सरलता से सुशोभित हैं भगवान शिव

डॉ. रीना रवि मालपानी

आदि अनंत अविनाशी शिव की महिमा तो सर्वथा विख्यात है। महादेव की संज्ञा से सुशोभित शिव के जीवन में कितनी सरलता है यह तो अवर्णनीय है। कुबेर को लक्ष्मी के खजांची बनाने वाले शिव साधारण वेषभूषा धारण करते है। कर्पूर की तरह गौर वर्ण शिव शरीर पर भस्म रमाते है। प्रायः यह देखा जाता है कि विवाह में दूल्हा स्वयं को अनेक आभूषणों से सुसज्जित करता है, परंतु शिव जैसे सदैव दृष्टिगोचर होते है वैसे ही वह विवाह में सबके समक्ष प्रत्यक्ष हुए। सत्यम शिवम सुंदरम रूप शिव का कल्याण स्वरूप है।

शिव का लिंग स्वरूप ब्रह्मांड का प्रतीक है। शिव को संहार का देवता कहा जाता है, परंतु जब कालकूट विष से पृथ्वी पर संकट आया तो उन्हीं महादेव ने विष को ग्रहण कर सभी को चिंता मुक्त किया। शिव ही तो है जिन्होने विष को ग्रहण कर एक और उपनाम नीलकंठ प्राप्त किया। यह वही शिव है जिन्होने श्री हरि विष्णु के कमल अर्पित करने पर उन्हें सुदर्शन चक्र प्रदान किया, जिसका प्रयोग श्री हरि नारायण सृष्टि के कुशल संचालन में करते है। उमापति महेश्वर शिव सदैव योग एवं ध्यान मुद्रा में ही रहते है, क्योंकि ध्यान ही शांत चित्त एवं आनंद स्वरूप प्रदान करता है। शिव प्रत्येक स्वरूप में अपनी श्रेष्ठता से शोभायमान होते है चाहे वह योगी हो, सन्यासी हो या गृहस्थ। शिव तो ओढर दानी है, अर्थात अनोखे दाता। आशुतोष शिव को प्रसन्न करना भक्त के लिए सबसे सरल है। शिव की सरलता तो उनको अर्पित सामाग्री से ही सिद्ध होती है, जो भी सामग्री सरलता से उपलब्ध हो वही शिव को अर्पित कर दो और भोलेनाथ से मनोवांछित फल प्राप्त कर लो। राजा हो या रंक शिव के लिए तो सभी समान है, मात्र जलधारा अर्पित करने से शिव संतुष्ट हो जाते है। यत्र-तत्र उगने वाला धतूरा, आक शिव को समर्पित किया जाता है। शिव की सरलता तो अतुलनीय है। एक बिल्वपत्र अर्पित करने पर भक्त के तीन जन्मों के पाप हर लेते है। अनायास भी शिव नाम मुख से उच्चरित हो गया तो वही जीवन के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो जाएगा। शिव के बारह ज्योर्तिर्लिंगों का स्मरण करने मात्र से सात जन्मों के पाप क्षय हो जाते है। शिव की प्रतिमा या लिंग स्वरूप के अभाव में पार्थिव शिवलिंग का निर्माण कर पूजन एवं अर्चन कर भी भक्त द्वारा मनोवांछित फल प्राप्त किया जा सकता है। इतनी सहजता तो अन्यत्र दुर्लभ है, इसलिए चन्द्रशेखर, उमापति अत्यंत वंदनीय है। भक्त ने शिव को जहां विराजमान किया और जो नाम प्रदान किया वह शिव सहर्ष स्वीकार कर लेते है। ज्योतिर्लिंग में भक्तों की तपस्या से उनकी मनोकामना पूर्ति के लिए आशुतोष सदैव प्रत्यक्ष रूप में विराजमान हो गए। राम नाम की अमृत धारा का रसास्वादन करने वाले शिव रामेश्वर एवं गोपेश्वर महादेव के रूप में भी दर्शन देते है। शिव भक्त का कल्याण तो श्री हरि नारायण भी करते है। रावण की शिव भक्ति का ही परिणाम था कि प्रभु श्री राम के हाथों उसे मुक्ति प्राप्त हुई। श्री हरि विष्णु भी कहते है कि जो शिव की आराधना करता है वह नारायण की कृपा का भी भागी होता है क्योंकि हरि और हर एक दूसरे को आराध्य मानते है। आशुतोष शिव शंकर भोलेनाथ गौरीपति प्रेम की भी उत्कृष्टता सिद्ध करते है। अंतर्यामी शिव सती के हठ को सहज स्वीकार करते है और शक्ति स्वरूपा माँ भगवती को भी कठिन तपस्या से ही प्राप्त होते है। अर्धनारीश्वर स्वरूप में शिव-शक्ति की समानता को उजागर करते है। स्वर्ण भवन निर्माण के पश्चात भी अपने दानी स्वरूप के कारण कैलाश में निवास करते है। सरलता से जीवन को साध्य बनाने वाले शिव की तो महिमा ही न्यारी है। कंठ के भीतर भी विष और बाहर भी विष विद्यमान है, इसके बाद भी वे एकाग्र और ध्यानचित्त दिखाई देते है। ऐसे आनंद स्वरूप भगवान शिव ही हो सकते है। ऐसी गृहस्थी किसकी होगी जिसमें सभी विपरीत स्वभाव वाले पशु-पक्षी सर्प, मोर, चूहा, शेर, बैल यह सभी प्रेम पूर्वक रहते है। शिव का अनुग्रह यदि जीवन में प्राप्त हो जाए तो जीवन में और कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह जाएगा। हम सदैव जीवन में इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति में लगे रहते है, परंतु उससे कहीं अधिक हम उस ईश्वरीय सत्ता से जुड़कर परम आनंद या अन्तर्मन की प्रसन्नता प्राप्त कर सकते है। शिव ने सब कुछ त्याग कर सरलता को आत्मसात किया। इच्छा मात्र से प्रकट करने वाले भगवान महादेव शिव शंकर त्याग की उत्कृष्टता को स्वीकार करते है। तांडव नृत्य करने वाले नटराज सदैव शांत चित्त स्वरूप में प्रत्यक्ष होकर भक्तों के कल्याण एवं आनंद का मार्ग प्रशस्त करते है। सावन शिव का प्रिय माह है, जहाँ भक्ति का फल भी अनंत गुना हो जाता है, तो क्यों न इस सावन भोलेनाथ से जुड़कर उनके गुणों को आत्मसात कर हम भी जीवन को आनंद स्वरूप बनाएँ।

विभाजित परिदृश्य में भारत की संयमपूर्ण नीति

एसएस मेहता

बढ़ते तनावों और पीछे हटती सच्चाइयों के युग में, भारत अपने शांत विमर्श के साथ, अपनी आज़ादी के 80 वर्ष पूरे करने जा रहा है। हमारी यात्रा एक ऐसा वृत्तांत रही है, जिसे फिर से बताने की ज़रूरत है। भले ही अपनी सौवीं वर्षगांठ की परिकल्पना, शक्ति का विस्तार करने में नहीं, बल्कि अपने उद्देश्यों को और गहराई देने में है। जहां अन्य राष्ट्रों में प्रभुत्व बनाने के लिए होड़ मची है, भारत अपनी राह पर कायम है- विचारधारा में धंसा हुआ नहीं, बल्कि सभ्यतागत नैतिकता की गहरी जड़ों से जुड़ा, जिसे हम 'युमैनशिप' अर्थात धर्मनीति के नाम से जानते हैं- सतत राष्ट्रीय आचार संहिता, स्मृति द्वारा आकार पाई, समदृष्टि सहित और मूलतः संयम वाली। यह कोई जुमला नहीं; हमारा वह व्यवहार है, जिसे हम तब भी कायम रखते हैं जब कोई न देख रहा हो और कैसे हम सबके सामने होने के बावजूद खुद को रोक लेते हैं। यह नैतिकता हमने अपने सबसे प्राचीन शब्दकोष से पाई है। दुनिया युद्ध और इसकी चेतावनियों के बीच डगमगा रही है। गाजा खून में सना है; यूक्रेन बिखरने की कगार पर है; ईरान और इस्राइल अपने संयम की सीमाएं नाप रहे हैं। व्यापार बल-प्रयोग का औजार बन गया है। जलवायु परिवर्तन के खतरे को हथियार बनाया जा रहा है। तकनीक उपकरण और ख़तरा, दोनों बन गई है। परमाणु संयम, लापरवाही भरी बयानबाज़ी में बदल गया है। संयुक्त राष्ट्र पंगु हुआ पड़ा है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा समिति के स्थाई सदस्य देश तभी कार्रवाई करते हैं, जब उनके हित आपस में मिलें। संतुलन का भरोसा देने वाले तंत्र को साजिशन मामलों से अलग रखा जा रहा है। 1948 से 2025 तक, हमारे विकल्प सतत कहानी बताते हैं। हम लाहौर की दहलीज़ पर जाकर थम गए, जीता हुआ हाजी पीर इलाका लौटा दिया, और पाकिस्तानी सेना को दूर तक खदेड़ने के बावजूद मुज़फ़्फ़राबाद पर कब्ज़ा नहीं किया। सीमा पार किए बिना कारगिल पर फिर से कब्ज़ा कर लिया। हमने ढाका को आज़ाद करवाया और बाद में उन 90,000 पाकिस्तानी युद्धबंदियों को स्वदेश भेजा, जिनके साथ जिनेवा संधि के तहत उदारतापूर्ण व्यवहार किया गया। मदद की पुकार पर हम मालदीव और श्रीलंका गए। परमाणु मामलों में, कगार की नौबत बनाए बिना नो फर्स्ट यूज़ सिद्धांत का पालन करते आए हैं। हर मामले में, भारत के पास आगे बढ़ने की पूरी कूवत थी, लेकिन समदृष्टि को न तजने का उसका इरादा ज़्यादा मज़बूत रहा। जहां दूसरे बीच रास्ते में पीछे हट गए,वहीं भारत स्पष्टता और दृढ़ विश्वास के साथ अंत तक गया। 1962 में, हिंदी-चीनी भाई-भाई का दोस्ताना उस वक्त जोर-ज़बरदस्ती में बदल गया जब चीन, जो खुद प्राचीन सभ्यता है और जिसके साथ हम शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व चाहते थे, उसने वार्ता की बजाय धोखा चुना। युद्ध त्वरित रहा। जब धूल छंटी, तो एक सवाल ज़रूर उठा ः चीन ने अपनी शिष्टता तज क्या पाया और सह-अस्तित्व की नैतिकता त्यागकर क्या खोया? भरोसा टूट गया। लॉर्ड कर्जन ने 1907 में ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में 'फ्रंटियर्स' नामक सालाना व्याख्यान में कहा था ः 'सहमति वाली स्पष्ट सीमारेखा की बजाय असहमति वाली सीमाओं से ज़्यादा हासिल किया जा सकता है'। एक सदी बाद, लगता है कि चीन ने वह सिद्धांत आत्मसात कर लिया। आज, भारत के संयम की परीक्षा और दिखाए गए दृढ़ संकल्प के प्रदर्शन के साथ, चीन को खुद सामने आते नहीं पा रहे, बल्कि वह खेल कर रहा है ङ्क खुद पीछे रहकर किसी और से जोर-ज़बरदस्ती करवाने वाले की भूमिका में। इस नाटक का पर्दाफाश करने में ऑपरेशन सिंदूर पहला उदाहरण रहा। यह चीन और उसका मुखौटा बने पाकिस्तान के लिए एक संदेश भी था, जहां भारत तनाव को विस्तार देने के उनके खेल में नहीं फंसने वाला है वहीं पीछे भी नहीं हटेगा। हाथी सब याद रखता है। और याददाश्त की बदौलत, वह उकसावे से नहीं, संतुलन के के साथ नपी-तुली कार्रवाई करता है। भारत का उदय, अपने हित कायम रखने की एवज में सहयोगियों की बलि देने वाली पामर्स्टन नीति पर चलकर नहीं हुआ है।

पार्षद- सफाईकर्मी के बीच मारपीट के मामले ने पकड़ा तूल

-दोनों पक्षों की ओर से मुख्यमंत्री को भेजे गये ज्ञापन

-आरोप-प्रत्यारोप गंभीर, पार्षद पर एफआईआर दर्ज करने की मांग

समय जगत, ललितपुर। नगर पालिका कार्यालय में वार्ड सं. 15 से पार्षद मनमोहन चौबे एड. के साथ हुयी मारपीट का मामला अब गरमाता नजर आ रहा है। प्रकरण की जांच कराकर हमलावरों के खिलाफ सख्त कार्यवाही किये जाने की मांग को लेकर ब्राह्मण महामण्डल ने जिलाध्यक्ष अशोक पटैरिया के नेतृत्व में मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन जिला प्रशासन को सौंपा है। ज्ञापन में बताया कि 9 जुलाई को पार्षद मनमोहन चौबे के साथ नगर पालिका के कर्मियों द्वारा प्राणघातक हमला कर बुरी तरह से मारपीट कर अपमानित किया गया। इस कृत्य की घोर निन्दा करते हुये उन्होंने प्रदेश सरकार से प्रकरण की उच्च स्तरीय जांच करायी जाकर कार्यवाही की जाये, जिससे भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। ज्ञापन देते समय अध्यक्ष अशोक पटैरिया, नागरिक विकास मोर्चा अध्यक्ष हरीबाबू शर्मा, अंकित पटैरिया, पवन संज्ञा, प्रमोद बबेले, डा.मुकेश तिवारी, मदनमोहन शर्मा, श्याम बिहारी चौबे, बलराम पचौरी, शक्ति पाठक, रितु समाधिया, पत्रकार प्रमोद गोस्वामी, पत्रकार अरविन्द संज्ञा, नीरज रिछारिया, नेहा, राजेश दुबे, गीता दुबे, शिवेन्द्र चौबे, राजीव कुमार, प्रमोद कुमार, विपिन पाठक, सौरभ पाठक, आदित्य रिछारिया, संदीप गोस्वामी, राजेश शर्मा, यश प्रताप, गिरीश शर्मा, अभिषेक दुबे, मगन जैन, कृष्ण कुमार, बल्लू, नंदकिशोर कुशवाहा, बृजेश पाल, सोनू शुक्ला, कृष्णकांत कांकर, विकास झां, मनोज पस्तोर, सानू, रजत नामदेव, राहुल चौबे, सुनील चौबे, अरविन्द, अंकित दुबे, कृष्णा शर्मा, भूपेन्द्र, अमन मिश्रा, राजेश, पवन तिवारी, विनोद राजपूत, डा.दीपक पस्तोर, रविशंकर श्रीवास्तव, आदर्श दुबे, अवधेश कौशिक, शुभम शर्मा, वेदप्रकाश लिटौरिया, अक्षय कुमार, ललितकिशोर तिवारी, राज कांकर, राजेश सीरौठिया, सोनम दुबे, दीपक नायक, अखिलेश पाठक, जागेश दुबे, विनोद कुमार सुड़ेले आदि मौजूद रहे।

इसी प्रकरण को लेकर दूसरे पक्ष से नगर पालिका परिषद के कर्मचारियों ने लामबंद होकर मुख्यमंत्री के नाम संबोधित ज्ञापन एसडीएम सदर मनीष कुमार को सौंपा। ज्ञापन में बताया कि 9 जुलाई को जब सफाई कर्मी मंजीत करौसिया नगर पालिका कार्यालय में वेतन प्रमाण पत्र निकालने पहुंचा, तभी पार्षद मनमोहन चौबे ने पूर्व में उधार दिये रुपये, जिसका हिसाब पूर्ण हो चुका है को फिर से मांगने लगे। विरोध करने पर गालियां देते हुये पार्षद ने बेसबॉल के डण्डे से मारपीट करते हुये सफाई कर्मी के मुंह पर थूक दिया और जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुये अपमानित किया। आरोप है कि पार्षद ने उसके साथ मारपीट की और इसके पूर्व भी अपनी लाइसेंसी बंदूक से जान से मारने की नीयत से फायर किया था, जिसमें पीड़ित बच गया। बड़ा आरोप है कि भयभीत होकर पीड़ित सफाई कर्मी ने दो बार आत्महत्या करने का प्रयास भी किया, जिसकी जानकारी सभी को है। पीड़ित ने पार्षद पर अवैध धनवसूली और ब्लैकमेल करने जैसे गंभीर आरोप भी लगाते हुये अपने वृद्ध माता-पिता के बिगड़े स्वास्थ्य का हवाला देकर प्रकरण की निष्पक्ष जांच कराये जाने की मांग उठायी है।

ज्ञापन देते समय मंजीत करौसिया, दीपक घावरी, कुंजबिहारी बाबरा, बृजेश कुमार, संजय बाल्मीकि, मनोज कुमार, अमित, विवेक, देवेन्द्र, राकेश, जितेन्द्र, अजय कुमार, सनी कुमार, योगेश कुमार, राजकुमार नाहर, प्रशान्त, पुष्पेन्द्र, संजय, अर्जुन, नसीर, वीरेन्द्र कुमार, जगदीश, महेन्द्र कुमार, बाबू, पप्पू, कमलेश, दीपक, लव, नीतेश, ब्रजेन्द्र, सतीस, सुरेन्द्र, सौरभ, राहुल, मनीराम, करन, सचिन, अरूणा, सुमित, वर्ष, साहिल, कृष्णकुमार, कुसुम, सुखवती, पुष्पा, मधु, रेखा, अभिषेक, रानू, राज, वर्षा, बैजन्ती, सीला, पूनम, कमला, ऊषा, किरन, सीमा, संगीता, सीमा, राधा, राखी, ममता आदि मौजूद रहे।

स्कूटी सवार भाई बहन की पिटाई करने वाले इंस्पेक्टर को एसपी ने किया निलंबित

उरई। गत 9 जुलाई को जिला जजी के सामने कालपी बस स्थित पेट्रोल पम्प पर शहर के मुहल्ला नया पटेलनगर इकलासपुरा रोड़ के रहने वाले भाई-बहन अपनी स्कूटी पेट्रोल डलवाने गये थे इसी दौरान कोतवाली में तैनात दरोगा भी अपनी कार पेट्रोल डलवाने पहुंच गया जिसकी ने कार खड़ी स्कूटी में टक्कर मार दी तो लड़की के भाई ने वर्दीधारी दरोगा से कहा कि तुमने मेरी स्कूटी में टक्कर क्यों मार दी इतना कहते ही दरोगा जी आगबबूला हो गये और गाड़ी से नीचे उतर कर उसकी बहन के गालीगलौज कर अभद्रता करने के साथ ही उसके भाई को भी जमीन पर पटक-पटक मारा तो वहां पर काफी भीड़ जमा होने के साथ ही पेट्रोल पर लगे सीसीटीवी कैमरे में पूरा मामला कैद हो गया यहां तक दरोगा जी द्वारा की जा रही मारपीट का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो गया।इस मामले को लेकर दोनों भाई-बहन ने पुलिस अधीक्षक को शिकायती पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई तो पुलिस अधीक्षक मामले को गंभीरता से हुए घटना को अंजाम देने वाले इंस्पेक्टर की जांच करवाने के बाद देर शाम एसपी ने निलंबित कर दिया और विभागीय जांच के आदेश दिये है।

बीकेडी में पुरातन छात्र समिति का कार्यक्रम आज, तैयारियां पूर्ण

समय जगत, झांसी। पुरातन छात्र समिति, बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी के तत्वावधान में बुन्देलखण्ड कॉलेज का स्थापना दिवस एवं पुरातन छात्र सम्मान समारोह शेर सिंह कोठारी हॉल, बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी में 12 जुलाई 2025 को पूर्वान्ह 11:00 बजे आयोजित किया जा रहा है। इसका अवलोकन करने के लिए आज दिनांक 11 जुलाई 2025 को बुंदेलखंड डिग्री कॉलेज, पुरातन छात्र समिति के संरक्षक पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन आदित्य, बुंदेलखंड महाविद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष श्री केशवन पटेल, श्री मनोहर लाल बाजपेई प्रबंधक प्रबंध समिति बुंदेलखंड महाविद्यालय, अध्यक्ष प्रदीप सरावगी, सचिव विवेक कुमार बाजपेई, हरीश लाला, मनीराम कुशवाहा, अमित पचौरी, नितिन वाजपेई, नीलू साहू, मनमोहन मनु, डॉ अरविंद परमार, अशोक सक्सेना एडवोकेट, राजीव अग्रवाल, सुदर्शन शिवहरे, प्रोफेसर एल सी साहू, डॉ जितेंद्र तिवारी, चंद्रभान राय, अनुराधा सिंह,ऋतु साहू, श्रद्धा यादव मिलन गुप्ता अरुण कोहली, कमल कपूर, नरेश चंद्र बिलहटिया, संतराम पेंटर आदि सहित संस्था के सभी सदस्यों ने कार्यक्रम स्थल पर तैयारी का जायजा लिया। कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए प्रधान रजिस्ट्रार (विजिलेंस) उच्च न्यायालय, मध्य प्रदेश श्री आर के शर्मा जी व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी सचिवालय, उत्तर प्रदेश लखनऊ से श्री श्वेतांक तिवारी भी कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। उक्त कार्यक्रम में गजल गायक जसवंत सिंह मुंबई से अपनी प्रस्तुति देने आ रहे हैं। समस्त पूर्व छात्र संघ अध्यक्षों की भागीदारी रहेगी, जिसमें कार्यक्रम जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रमों में राई नृत्य एवं अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे।

गीता जयन्ती एक्सप्रेस से यात्री की नकदी चोरी

ललितपुर। मध्य प्रदेश के जिला पन्ना अंतर्गत अजय गढ़ के पडरटा में रहने वाले संजय अहिरवार पुत्र जगदीश ने जीआरपी पुलिस को तहरीर दी है। बताया कि बीती 26 जून 2025 को ट्रेन संख्या 11842 गीता जयन्ती एक्सप्रेस के कोच संख्या एस-03 की सीट संख्या 39 पर बैठकर कुरुक्षेत्र से खजुराहो आने के लिए सफर कर रहा था। उसने अपना बैग सीट के नीचे रखा और सो गया। अगले दिन 27 जून को सुबह 5 बजे उसकी नींद खुली तो उसने देखा कि ललितपुर रेलवे स्टेशन पर ट्रेन खड़ी थी। उसने अपने सामान को देखा तो पाया कि बैग की चेन खुली थी और जांच करने पर पाया कि उसके बैग में रखी 31 हजार 500 रुपये की नकदी, गायब है। घटना की सूचना उसने रेलवे हेल्पलाइन नम्बर 139 पर दी।

हम कौन थे क्या हो गए हैं : डीआईजी

गुरूपूर्णिमा पर मानस मधुप ने विद्वत-कवि गोष्ठी का हुआ आयोजन

समय जगत, ललितपुर। गुरुपूर्णिमा के अवसर पं. बाबूलाल द्विवेदी मानस मधुप द्वारा एक विद्वत/कवि संगोष्ठी का आयोजन एक होटल में किया गया। प्रथम सत्र में महर्षि वेदव्यास का पूजन कर देश भर से आए विद्वान साहित्य साधकों का प्रो.राकेश नारायण द्विवेदी एवं नीरज द्विवेदी द्वारा स्वागत किया गया। विदिशा से आए संस्कृत विद्वान अखिलेश्वर मालवीय ने कश्मीरी शैव दर्शन के आधार पर गुरु तत्व की व्याख्या की। मुख्य अतिथि पूर्व बेसिक शिक्षा मंत्री डा.रवीन्द्र शुक्ल ने कहा कि सामाजिक बदलाव सरकारें नहीं समाज किया करता है। हमारी गुरु परंपरा का दुनिया में विशेष स्थान रहा। विशिष्ट अतिथि डीआईजी झांसी केशवदेव चौधरी ने मैथली शरण गुप्त की कविता हम कौन थे क्या हो गए है और क्या होंगे अभी को उद्धृत करते हुए कहा कि हो रहे सामाजिक परिवर्तनों को हमे स्वीकार करना चाहिए और इसकी सीमाएं निश्चित करते हुए आगे बढना चाहिए। अध्यक्षता कर रहे डा.जवाहर लाल द्विवेदी ने युवाओं को भारतीय ग्रंथों और उसके मार्गदर्शन सिद्धांतों के पालन की बात कही। आचार्य पं.बाबूलाल द्विवेदी द्वारा रचित पुस्तक बूढ़े नर ही नारायण हैं का लोकार्पण किया गया। डा.सुकदेव बाजपेयी ने इस कृति की विशद विवेचना की और इसमें बूढ़े कौन हैं, इसकी व्याख्या की। विजय प्रकाश सैनी झांसी, संतोष पटैरिया महोबा, डा.देवदत्त द्विवेदी बड़ा मलहरा, डा.राजेंद्र तिवारी टीकमगढ़, डा.पूरनसिंह निरंजन ललितपुर, राजकुमार शर्मा, राजेश दुबे, वीरेंद्र त्रिपाठी ओरछा, लक्ष्मीनारायण पटैरिया, डा.राजेश तिवारी मक्खन आदि ने पुस्तक के रचयिता बाबूलाल द्विवेदी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। प्रथम सत्र का संचालन ओमप्रकाश तिवारी ने किया। द्वितीय सत्र में कवि गोष्ठी का आयोजन श्रीराम नामदेव काका की अध्यक्षता में किया गया। सरस्वती वंदना के उपरांत रामानंदजी नंद, प्रभुदयाल श्रीवास्तव, ओमप्रकाश तिवारी, पूरनचंद गुप्ता, वीरेंद्र त्रिपाठी, डा.देवदत्त, सुदेश सोनी, जहीर ललितपुरी, बृजलता मिश्रा आदि ने देश की दिशा और दशा पर अपनी काव्य रचनाएँ प्रस्तुत की। संचालन संतोष पटैरिया महोबा ने किया। कार्यक्रम संयोजक एवं जन सामान्य मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व डीआईजी जुगुलकिशोर तिवारी द्वारा शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मानित किया गया। इस दौरान अशोक शुक्ला, विनोद शर्मा, जयशंकर द्विवेदी, अवध बिहारी कौशिक, सम्मर सिंह, भगवत दयाल, अवधेश कौशिक, हाकिम सिंह, आशीष रावत, सहावेन्द्र प्रताप सिंह बानपुर, दुर्गाप्रसाद पाठक, डा.किरन वाजपेयी, शीलचंद जैन, बृजेश कौशिक, राकेश शर्मा, भक्तराज सिंह, अनिल तिवारी, अशेष, जगवीर सिंह, पीयूषा, ज्योत्सना, गौरव नामदेव, श्यामा द्विवेदी, रानी, जितेंद्र, विश्वास, मनोज तिवारी, धर्मेन्द्र पाठक मौजूद रहे।

युवती और उसके भाई से दरोगा ने की अभद्रता

समय जगत, उरई। बुधवार सुबह उस वक्त हंगामा मच गया जब एक दरोगा द्वारा एक युवती और उसके भाई से अभद्रता और मारपीट की गई। पूरी घटना पेट्रोल पंप पर लगे सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गई। उसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। पीड़िता ने पुलिस अधीक्षक डॉक्टर दुर्गेश कुमार से इस मामले की शिकायत कर कार्रवाई की मांग की है। पीड़िता शिमोना राज निवासी नया पटेल नगर, उरई ने बताया कि वह बुधवार सुबह 9रू45 बजे अपने छोटे भाई हिमांशु राज के साथ शहीद चंद्रशेखर आजाद इंटर कॉलेज जा रही थी। इस दौरान कालपी बस स्टैंड स्थित पेट्रोल पंप पर जब वह अपनी स्कूटी में पेट्रोल भरवा रहे थे। तभी एक चार पहिया वाहन (न्च् 78 भ्स् 5051), जिस पर पुलिस विभाग अंकित था, पीछे से आकर स्कूटी में टक्कर मार दी।

पीड़िता के मुताबिक, जब उसने टक्कर मारने वाले व्यक्ति से सवाल किया, तो वाहन से सादी वर्दी में उतरे पुलिसकर्मी ने पहले गाली-गलौज की। फिर गाड़ी से उतरकर उसके भाई के साथ मारपीट शुरू कर दी। दरोगा द्वारा भाई हिमांशु की कॉलर पकड़कर पीटा और जमीन पर पटकरकर लातों से मारा। जब इसका विरोध किया तो उसे गालियां देना शुरू कर दिया। इसघटना को पेट्रोल पंप पर मौजूद लोगों ने देखा। इस पूरी घटना की रिकॉर्डिंग पंप पर लगे सीसीटीवी कैमरे में भी दर्ज हो गई है। स्थानीय लोगों के मुताबिक, आरोपी पुलिसकर्मी का नाम शिव प्रसाद दुबे है। जो इस समय जिला जज उरई में तैनात है। पीड़िता शिमोना राज ने पुलिस अधीक्षक को दिए प्रार्थना पत्र में कहा कि वह इस घटना से मानसिक रूप से काफी आहत है और उसे न्याय चाहिए। उसने मांग की है कि आरोपी दरोगा के खिलाफ सख्त से सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए। पुलिस अधीक्षक डॉक्टर दुर्गेश कुमार ने भाई-बहन के साथ मारपीट करने वाले जिला एवं सत्र न्यायालय में तैनात दरोगा शिव प्रसाद दुबे को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। साथ ही विभागीय जांच भी बैठा दी है। पुलिस अधीक्षक डॉक्टर दुर्गेश कुमार ने बताया कि कोई भी कानून के साथ खिलवाड़ करेगा, उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

कार हुई दुर्घटनाग्रस्त

गुरसराय। गुरसराय चिरगांव मार्ग पर गुरसराय गोस्वामी बगीचे के पास निकले नाले के पास स्विफ्ट डिज़ायर कार असंतुलित होकर सड़क किनारे रखे लोहे के डिब्बे टकरा कर नाले पर लटक गई। गुरसराय से जयप्रकाश पटेल निवासी ग्राम यवनी थाना टोड़ी फतेहपुर अपने साथी रवि अहिरवार निवासी गाँव सेमरी के साथ कार के द्वारा झांसी जा रहे थे।जैसे वह गुरसराय मातवाना मुहल्ले गोस्वामी की बगिया के सामने स्थित नाले के पास पहुचे। कार असंतुलित हो गई और सड़क किनारे रखे पंचर बनाने वाले लोहे के डिब्बे से टकरा गई। टक्कर में लोहे का डिब्बा नाले में गिर गया वहीं कार नाले पर लटक गई। कार में सवार जयप्रकाश पटेल निवासी यवनी तथा रवि अहिरवार को घटना में गंभीर चोटें आई।जिन्हें प्राथमिक उपचार के बाद झांसी रेफर किया गया।

कवि विद्रोही को मिला साहित्यश्री सम्मान

समय जगत, ललितपुर। नगर के ख्याति प्राप्त कवि वीरेंद्र विद्रोही के लिये स्व. कपिलदेव खरे स्मृति विश्व कीर्तिमान धारी संस्था कपिलश फाउंडेशन की ओर से 10 जुलाई को नोएडा में आयोजित आयोजन में साहित्यश्री सम्मान की उपाधि से सम्मानित किया गया। कवि जैन वीरेंद्र विद्रोही की इस उपलब्धि पर उनके शुभचिंतकों ने हर्ष व्यक्त किया। कवि जैन वीरेंद्र विद्रोही की पहचान पूरे देश मे एक कुशल मंच संचालक, कवि सम्मेलन संयोजक के रूप में होती है। कवि विद्रोही ने कई राज्यो में काव्यपाठ कर जिले का नाम रौशन किया है और निरंतर काव्यपाठ के लिए आमंत्रित किये जाते है, उनकी बेटियों पर लिखी कविता पूरे देश में बड़े मन से सुनी जाती है। साहित्यश्री सम्मान मिलने पर उन्होंने संस्था के पदाधिकारियों लक्ष्मी खरे, शिप्रा खरे, जयकिशन का आभार व्यक्त किया।

सोने के जेवरात व नकदी लेकर पुत्री गायब

समय जगत, ललितपुर। सिटी चौकी क्षेत्रांतर्गत एक मोहल्ला में रहने वाले व्यक्ति ने पुलिस को तहरीर दी है। बताया कि उसकी 25 वर्षीय पुत्री जो कि एलआईसी ऑफिस के सामने इलाइट चौराहा स्थित ट्रेंडस मॉल पर विगत तीन-चार वर्षों से कार्यरत थी। तभी ट्रेंडस मॉल से एक फोन आया कि उसकी पुत्री मॉल से कहीं चली गयी है, तब उसने पुत्री के मोबाइल पर फोन लगाया तो नम्बर बंद आ रहा है। जब वह मॉल पहुंचा तो वहां सुबह 10.15 बजे तबियत खराब बताकर अवकाश लेकर चली गयी और अपने साथ बैग, सामान व मोबाइल आदि ले गयी। पीड़ित ने बातया कि उसकी पुत्री को उसने अस्पताल, रेलवे स्टेशन, बस स्टेण्ड पर खोजा, लेकिन फिर भी उसका पता नहीं चला। उसकी पुत्री एक से दो लाख रुपये, सोने के जेवरात आदि अपने साथ ले गयी है। पिता ने आशंका जाहिर की कि उसकी पुत्री को कोई लड़का बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया है या फिर षडयंत्र के तहत उसका अपहरण किया गया है। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ बीएनएस की धारा 87 के तहत एफआईआर दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

शराब पीने की बात पर हुयी मारपीट

समय जगत, ललितपुर। मोहल्ला चमरऊआ निवासी दीक्षा पत्नी राजकुमार ने पुलिस को तहरीर दी है। बताया कि बीते 9 जुलाई की शाम करीब 5 बजे वह घर में थी, तभी उसके चाचा बलराम व राजू पुत्रगण गजराज सिंह, सेंधपाल व प्रशान्त पुत्रगण रतन सिंह से शराब पीने की बात को लेकर विवाद हो गया। तभी उक्त लोगों ने एकराय होकर उसे व उसके पति से गालियां देते हुये मारपीट कर दी। चीखपुकार सुनकर बचाव करने आयी उसकी सास शिवकुंवर से भी मारपीट करते हुये जान से मारने की धमकी दी गयी। पुलिस ने पीड़िता की तहरीर पर उक्त लोगों के खिलाफमामला दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

एकराय होकर धमकाने का आरोप

समय जगत, ललितपुर। थाना बार क्षेत्र के ग्राम बस्तगुवां निवासी दीनू पुत्र समल्ती ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि 9 जुलाई की रात करीब 9 बजे वह घर के दरबाजे पर बैठा था। तभी उसके गांव में रहने वाला छोटे रज्जू पुत्र रूप सिंह आया और गालियां देने लगा। विरोध करने पर लाठी-डण्डों से मारपीट कर दी। शोरगुल सुनकर बचाव करने आयी पत्नी किरन व भाभी राजकुमारी पत्नी पप्पू बचाने आये तो उनके साथ भी मारपीट कर दी। इसी बीच गांव के तुलसीराम पुत्र बच्चूलाल, नाथूराम पुत्र फुन्दे आये, जिन्होंने बीच-बचाव किया। आरोप है कि उक्त लोग जान से मारने की धमकी देते हुये भाग गये। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर उक्त लोगों के खिलाफमामला दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

स्थापना दिवस पर वृक्षारोपण किया

ललितपुर। भारत विकास परिषद के 63 वें स्थापना दिवस पर मुख्य शाखा ने अध्यक्ष जितेंद्र जैन के फार्म हाउस पर वृक्षारोपण का किया। इस दौरान जितेन्द्र जैन, मनोज कुमार जैन, साकेत जैन, डा.संजीव कंडकी, पवन जैन, मनोज सराफ, सुबोध गोस्वामी, नरेंद्र जैन, आनंद मोहन दुबे, नीरज जैन मौजूद

डॉ प्रदीप साहू बने चिकित्सा प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष

टहरौली (झांसी) अंतराष्ट्रीय मानवाधिकार रक्षा संगठन के प्रदेश अध्यक्ष डॉ वी के निरंजन ने टहरौली के डेंटल सर्जन डॉ प्रदीप साहू को संगठन के चिकित्सा प्रकोष्ठ का जिलाध्यक्ष मनोनीत किया है। उनके इस मनोनयन पर संगठन के कार्यकर्ताओं, चिकित्सकगण एवं टहरौली के गणमान्य नागरिकों ने हर्ष व्यक्त किया है।

प्रभारियों की मौजूदगी में बिरधा और बार में बनाए गए मंडल अध्यक्ष

समय जगत, ललितपुर। जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा ब्लॉक में मंडल प्रभारी नियुक्त करना एवं उनका नामकरण कर जाने हेतु बैठक कर रही है। प्रदेश प्रभारी अविनाश पांडे, राष्ट्रीय महासचिव एवं प्रदेश अध्यक्ष अजय राय के नेतृत्व में चलाए जा रहे अभियान में प्रभारी कुं.मुकुट सिंह, जिलाध्यक्ष डा.दयाराम, पूर्व सांसद प्रतिनिधि जसपाल सिंह बंटी, नगराध्यक्ष रामनरेश दुबे ने ब्लाक बिरधा एवं बार में मंडल कमेटियों की बैठक की। बैठक में विरधा ब्लॉक रब्बी पटेल के आवास पर ब्लॉक अध्यक्ष सुरेंद्र सैन मैं बैठ कर सर्वसम्मति से मानवेंद्र सिंह भोलू अहिरवार गुड्डन शंकर सिंह आदि को मंडल अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी एवं ब्लॉक अध्यक्ष सुशील रजक ने रौनक बरसईया के आवास पर अपने-अपने ब्लॉकों के मंडलों के गठन कर निहाल सिंह, जयपाल सिंह, ओमकांत, राजपाल सिंह राजपूत को सर्व सम्मति से नामकरण किया। इस दौरान प्रभारी ने कहा कि प्रदेश कमेटी द्वारा चलाए जा रहा है। अभियान में सभी ब्लॉकों में मंडल अध्यक्ष की नियुक्ति हर 20 से 25 बूथ पर की जाएगी तथा उनका नाम कारण भी किया जाएगा और सभी मंडल अध्यक्षों को तत्परता से अपनी-अपनी कमेटियों का भी गठन करना होगा। इस कार्य में जिसके भी सहयोग की आवश्यकता होगी, वह ब्लॉक में पहुंचकर मंडल अध्यक्षों की कार्यकारिणी बनवाने में सहयोग करेगा। इसके पश्चात न्याय पंचायत अध्यक्षों को बनाए जाने की जिम्मेदारी होगी तथा न्याय पंचायत के अध्यक्ष के नाम का प्रस्ताव करने की जिम्मेदारी भी मंडल अध्यक्ष की होगी। इस दौरान बिरधा ब्लाक की प्रभारी मोहनसिंह चंदेल, गनेश कुशवाहा, नीरज पाराशर, गोकुल नामदेव ने मंडल प्रभारी को मजबूत करने की जिम्मेदारी दी गई। इस दौरान हीरालाल सेन, मुलायम चंदेल, श्यामसुंदर सिरोठिया, रमेश प्रसाद साहू, सुनील कुशवाहा, विनोद पटेल, सुम्मेर कुशवाहा, श्रीपाल यादव आदि ने सहयोग प्रदान किया।

दूसरी ओर ब्लॉक बार में प्रभारी पंकज हुण्डैत, गजेंद्र सिंह बुंदेला, पूजा सेन, लक्ष्मी देवी ने सहयोग कर सर्वसम्मति से मंडल अध्यक्षों का नाम प्रस्तावित किया। इस दौरान कल्लू पांडे, मूसा चाचा, भागीरथ रैकवार, कय्यूम खा, पूरनलाल रजक, हरप्रसाद सेन, आनंद कुमार, शैलू अहिरवार, रमेश सहरिया, सुल्तान सिंह, अंकुर पांडे, रतनलाल, प्रभु दयाल, रामदयाल, हरिराम दुबे, आशुतोष दुबे आदि शामिल हुए।

सभी विभाग मिलकर शिक्षा से वंचित बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ें, बालिकाओं के ड्रॉपआउट दर को कम करें : केन्द्रीय मंत्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार

समय जगत, निवाड़ी। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार एवं लोकसभा क्षेत्र टीकमगढ़ सांसद डॉ. वीरेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में आज कलेक्ट्रेट सभागार में जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक आयोजित की गई। बैठक में समस्त विभागों के कार्यों की प्रगति की समीक्षा की गई। साथ ही जिले के विकास कार्यों पर उपस्थित जनप्रतिनिधियों द्वारा अवगत कराया गया।बैठक में केन्द्रीय मंत्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार ने 29 अप्रैल 2025 को आयोजित दिशा बैठक में दिए गए निर्देशों की प्रगति की समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। कलेक्टर श्री लोकेश कुमार जांगिड़ द्वारा विभागों की प्रगति की जानकारी साझा की गई।

बैठक में केंद्रीय मंत्री डॉ कुमार ने उपस्थित अधिकारियों को विभिन्न मुद्दों पर निर्देशित किया। उन्होंने विद्यालयों में छात्रों की उपस्थिति की जानकारी लेते हुए निर्देशित किया कि सभी विभाग मिलकर शिक्षा से वंचित बच्चों का शाला में प्रवेश कराएं, उन्हें मुख्यधारा में लाकर जिले को मॉडल के रूप में विकसित करें तथा बालिकाओं के ड्रॉपआउट दर को कम करें। उन्होंने शासन की योजनाओं की जानकारी को जन-जन तक पहुंचाने के लिए अधिकारी कार्ययोजना तैयार कर कार्य करें ताकि शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं की आमजन में जागरूकता हो। उन्होंने चंदेल-बुंदेल कालीन तालाबों की स्थिति एवं निर्माण कार्यों की समीक्षा कर निर्देशित किया कि तालाबों के सौंदर्यकरण करें और धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में प्रेरित करें। जल संरक्षण तथा जल संरचनाओं के संरक्षण को सहेजे रखने के लिए कार्यशाला, बैठक व अन्य आयोजनों को तालाब के किनारे आयोजित करें। उन्होंने समूह जल प्रदाय योजना अंतर्गत जिले में निर्माणाधीन पानी की टंकियों की जानकारी ली। उन्होंने निर्माण कार्यों की समीक्षा कर निर्देश दिए कि सड़क निर्माण कार्यों में पूर्ण सुरक्षा का ध्यान रखें तथा सड़क निर्माण/मरम्मत कार्य में गुणवत्ता का ध्यान रखें।

बैठक में केंद्रीय मंत्री ने महिलाओं के सशक्तिकरण पर शासन के प्रयासों पर विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि जिले में शसक्त महिलाओं द्वारा शासकीय उचित मूल्य की दुकान का संचालन हो। फसल की बेहतर पैदावार हो इसके लिए किसानों को नई तकनीकी से जोड़ने का प्रयास करें। उन्होंने गौशालाओं के उचित प्रबंधन के निर्देश दिए। उन्होंने विद्यालयों के भवनों की स्थिति की जानकारी ली और निर्देश दिए कि जर्जर भवनों में कक्षाएं संचालित ना की जाए तथा क्षतिग्रस्त भवनों की मरम्मत कराएं। साथ ही शालाओं में शिक्षकों की उपस्थिति नियमित रहे। उन्होंने बारिश के मौसम में करंट से कोई जनहानि ना हो 11 केवी लाइन विद्युत तारों का निरीक्षण कर व्यवस्था दुरुस्त रखने के निर्देश दिए।

इस अवसर पर अध्यक्ष जिला पंचायत श्रीमती सरोज प्रेमचंद्र राय, विधायक निवाड़ी श्री अनिल जैन, सांसद प्रतिनिधि श्री राजेश पटैरया, श्री विवेक चतुर्वेदी, अन्य जनप्रतिनिधिगण, कलेक्टर श्री लोकेश कुमार जांगिड़, पुलिस अधीक्षक डॉ राय सिंह नरवरिया, सीईओ जिला पंचायत श्री रोहन सक्सेना एवं विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

आम सूचना

मैं,Ruchi पत्नी Sonu Kumar मैंने अपना नाम Ruchi से बदलकर नाम Kumari Ruchi Devi कर लिया है । जो कि आधार कार्ड के अनुसार सत्य व सही है ।

आम सूचना

मैं, Raj Desai पुत्र Desai Vijay Baburao मेने अपना नाम Raj Desai से बदलकर नाम Raj Vijay Desai लिया है जो कि आधार कार्ड के अनुसार सत्य व सही है, समान्य दर्ज करे ।

आम सूचना

मैं, सर्विस नं. 1 4 6 8 5 9 3 2 P CHM/Tech (SA) Alok Kumar Guni मेने अपनी बेटी का नाम Miss Avani Guni से बदलकर नाम Avani Guni लिया है जो कि आधार कार्ड के अनुसार सत्य व सही है, समान्य दर्ज करे ।

आम सूचना

मैं, Paparao नं 15783848F Hav (OFC) Vasudevarao Nartu का पिता हूँ द्य मेने अपना नाम Paparao से बदलकर नाम Nartu Papayya लिया है जो कि आधार कार्ड के अनुसार सत्य व सही है, समान्य दर्ज करे ।

आम सूचना

I, JC 406460L Sub M Mallikharjuna Reddy That my mother name has been erroneously entered as M. Basavamma in my service record her correct name is M o d u g u l a Basavamma hence it may be entered accordingly.

अपर पुलिस अधीक्षक की अध्यक्षता में विशेष किशोर पुलिस इकाई एन्टी ह्यूमेन ट्रैफिकिंग यूनिट की मासिक गोष्ठी की गई आयोजित

समय जगत चित्रकूट। 10 जुलाई को राघव प्रेक्षागार पुलिस कार्यालय सोनेपुर में पुलिस अधीक्षक चित्रकूट अरुण कुमार सिंह के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक सत्यपाल सिंह की अध्यक्षता में (विशेष किशोर पुलिस इकाई)/ (बाल कल्याण समिति) (एन्टी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट) की मासिक गोष्ठी आयोजित की गयी। इस गोष्ठी समस्त थानों के पुलिस बाल कल्याण अधिकारियों को निर्देश दिये गये कि विधि का उल्लंघन करने वाले बालक तथा पीड़ित की जन्मतिथि का सत्यापन आधार कार्ड से न करके विद्यालय के अंक-पत्र, जन्म प्रमाण-पत्र, नगर निकाय, नगर पालिका या मेडिकल परीक्षण कराकर किया जाए। बाल कल्याण इकाई को बताया गया कि यदि कोई नाबालिक पीड़ित/पीड़िता है और उसके साथ कोई वयस्क व्यक्ति नहीं है तो ऐसी स्थिति में बाल कल्याण इकाई के सदस्य द्वारा स्वयं वादी बनकर अभियोग पंजीकृत कराया गया। पीड़िता का तत्काल समय सीम के अन्दर विधि के अनुरुप मेडिकल परीक्षण कराया जाये तथा आर्थित रुप से कमजोर पीड़िताओं को शासन की विभिन्न योजनाओं के तहत लाभ दिलायें। (विशेष किशोर पुलिस इकाई), CWC (बाल कल्याण इकाई) के कार्यों एवं एन्टी ह्यूमन ट्रैफिकिंग के सम्बन्ध

में जानकारी दी गयी। बाल विवाह पर रोक लगाया जाये तथा जनपदीय गठित टीम द्वारा भ्रमण कर बालकों से कराये जा रहे श्रम को प्रतिबंधित कराया जाये और जिनके द्वारा श्रम कराया जा रहा है उनके विरुद्ध विधिक कार्यवाही करायी जाये। इस गोष्ठी में जिला प्रोबेसन अधिकारी द्वारा बताया गया कि विधि का उल्लंघन करने वाले बालकों से अपराधी के तरह व्यवहार न किया जाये, गोष्ठी में उपस्थित सभी बाल कल्याण अधिकारी एवं सदस्यों को बताया गया कि गुमशुदा बच्चों के बरामद होने के बाद उन्हे CWC के सुपुर्द करें, CWC बच्चे के परिजनों की पहचान कर उनके परिजनों के सुपुर्द करेगी। यदि कोई नाबालिक आत्महत्या का प्रयास करता है तो पुलिस ऐसे नाबालिक बच्चो को CWC के सुपुर्द करें एवं CWC ऐसे बच्चों की काउंसलिंग के पश्चात जानकारी करें कि उनके द्वारा ऐसा प्रयास क्यों किया गया है इसके बाद बाद ही परिजनों के सुपुर्द किया जाये।

शराब के नशे में व्यक्ति ने गाली गलौज के साथ युवक को पीटकर किया घायल, कोतवाली में दी गई तहरीर

समय जगत हमीरपुर। जनपद में राठ कस्बे के गलिहया रोड पर एक दबंग व्यक्ति ने अत्यधिक शराब के नशे में धुत होकर एक युवक के साथ गाली गलौज करते हुए उसकी जमकर पिटाई कर उसे घायल कर दिया। घटना

के बाद पीड़ित व्यक्ति ने राठ कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई की गुहार लगाई है। राठ कस्बे के गलिहया रोड के निवासी गौरव पुत्र सत्यनारायण ने राठ कोतवाली में तहरीर देकर बताया कि बुधवार की शाम करीब 5ः00 बजे वह अपने घर की ओर जा रहा था। बताया कि तभी रास्ते में राठ कस्बे के गलिहया रोड पर और शराब के नशे में धुत एक दबंग व्यक्ति ने अकारण उसके साथ गाली गलौज शुरू कर दी। बताया कि जब उसने गाली गलौज करने का विरोध किया तो उक्त दबंग व्यक्ति ने उसकी जमकर पिटाई कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया। तथा दबंग के द्वारा की गई मारपीट से उसे सर में चोटें आई हैं। बताया कि उसने राठ कोतवाली में लिखित तहरीर देकर कार्रवाई की गुहार लगाई है।

सार-समाचार

अधिवेशन में मेधावी छात्रों को किया सम्मानित

समय जगत राठ (हमीरपुर)। तहसील के सरसई गांव में जिला कुशवाहा महासभा के तत्वावधान में कुशवाहा समाज के मेधावी छात्र-छात्राओं के बीच पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन मुन्ना लाल बौद्ध सिंह की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम का उदघाटन मुख्य अतिथि चरखारी ब्लॉक प्रमुख सीमा कुशवाहा ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर ब्लॉक प्रमुख ने कहा कि शिक्षा के माध्यम से ही हम समाज में परिवर्तन ला सकते हैं। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों को शिक्षित किया जाए। उन्होंने कहा कि कुशवाहा समाज के बच्चे काफी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। हमें जरूरत है उनका सही मार्गदर्शन करने व प्लेटफॉर्म उपलब्ध करवाने की। साथ ही समाज को एकजुट होने का संदेश दिया गया। कार्यक्रम संचालन कर रहे मदन गोपाल शक्य ने बताया कि समाज को संगठित होने और आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर वैजनाथ, गयाप्रसाद गुलाब, मनोज, बालकिशन, प्रताप, किशोर, गुलाब सिंह, नवल किशोर, दीनदयाल, अजय कुशवाहा, सूरज कुशवाहा, जीतेंद्र कुमार शिक्षक, मनोज कुशवाहा, अन्य उपस्थित रहे।

जनसंख्या दिवस पर संगोष्ठी की गई आयोजित

समय जगत कुरारा,हमीरपुर। विकास खंड क्षेत्र के झलोखर गांव स्थित बारातशाला में मेरा युवा भारत हमीरपुर के तत्वाधान में विश्व जनसंख्या दिवस पर संगोष्ठी व एवं भाषण प्रतियोगिता काआयोजन किया गया। मुख्य अतिथि खंड विकास अधिकारी कुरारा राजीव कुमार सिंह एवं ग्राम प्रधान गायत्री शिवहरे ने मां सरस्वती व स्वामी विवेकानंद के चित्र पर पुष्प अर्पित कर दीप प्रज्वलित किया। उक्त अवसर पर खंड विकास अधिकारी ने कहा कि बढ़ती जनसंख्या समाज, राष्ट्र, और पर्यावरण पर इसके प्रभाव की समझ आमजन को होना जरूरी है। जनजागरुकता कार्यक्रम को आयोजित होना चाहिए इसमें युवाओं की सहभागिता होना चाहिए। अवर अभियंता राजेंद्र बाबू ने कहा कि समाज में जागरूकता करने के लिए यह संगोष्ठी का माध्यम होना चाहिए। जिससे लोगो को जनसंख्या नियंत्रण के लिए जानकारी मिल सके। प्रतियोगिता में कुल सात प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। जिसमें कालका प्रसाद को प्रथम, सार्थक निगम द्वितीय, अन्वेषा गुप्ता को तृतीय घोषित किया गया। सांत्वना पुरस्कार आकांक्षा को दिया गया। इस अवसर पर ग्राम प्रधान गायत्री शिवहरे, अभिषेक त्रिपाठी, शिवम गुप्ता, ललित शिवहरे, बृजेश कुमार, रमेश प्रजापति, विक्रम, नीरज गुप्ता, एएन एम नीरज द्विवेदी, जागेश्वर, देवेश सिंह, बीरेंद्र प्रजापति आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम संयोजक सतेन्द्र अग्रवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

वृद्ध की जघन्य हत्या, घर के बाहर पड़ा मिला शव

समय जगत सुमेरपुर,हमीरपुर। जनपद हमीरपुर के थाना सुमेरपुर क्षेत्र में अपराधों की बाढ़ सी आ गई है। आये दिन हत्या, आत्महत्या और सड़क दुर्घटनाओं की घटनाएं आम हो चुकी हैं। बीती रात कस्बा सुमेरपुर के अंबेडकर नगर मोहल्ले में एक 60 वर्षीय वृद्ध राम बिहारी पुत्र चंगू की संदिग्ध परिस्थितियों में हत्या कर शव को घर के बाहर फेंक दिया गया। स्थानीय लोगों द्वारा दी गई सूचना पर थाना सुमेरपुर पुलिस, अपर पुलिस अधीक्षक एवं क्षेत्राधिकारी सदर घटनास्थल पर पहुंचे फील्ड यूनिट टीम द्वारा मौके से साक्ष्य संकलन की कार्रवाई की गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार मृतक राम बिहारी अपने घर में अकेले रहता था और उसके पुत्र दिल्ली में निवास करते हैं, जिन्हें सूचना दे दी गई है। शव की स्थिति प्रथम दृष्टया किसी हमले की ओर संकेत करती है, क्योंकि सिर के पीछे गंभीर चोट के निशान पाए गए हैं हालांकि पुलिस ने जांच के लिए टीम गठित कर दी है और कुछ संदिग्धों से पूछताछ की जा रही है, लेकिन यह घटना न केवल कानून व्यवस्था की पोल खोलती है, बल्कि पुलिस की संवेदनहीनता और अपराध नियंत्रण पर उसकी नाकामी को उजागर करती है। पुलिस द्वारा शव को कब्जे में लेकर पंचायतनामा की कार्रवाई के बाद पोस्टमार्टम हेतु भेजा गया है। वहीं, अपर पुलिस अधीक्षक हमीरपुर का कहना है कि परिजनों को सूचना दे दी गई है, तहरीर मिलने के बाद अग्रिम वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। प्रश्न यह उठता है कि आखिर कब तक अपराधी इस तरह निडर होकर घटनाओं को अंजाम देते रहेंगे और पुलिस सिर्फ 'जांच जारी है' और 'टीम गठित की गई है' जैसे जुमलों तक सीमित रहेगी ?जनता पुलिस प्रशासन से जवाब चाहती है कि क्या पुलिस की खुफिया तंत्र पूरी तरह निष्क्रिय हो चुका है वृद्ध अकेले व्यक्ति की सुरक्षा किसकी जिम्मेदारी है? यह कोई पहली घटना नहीं है, इससे पहले भी थाना सुमेरपुर क्षेत्र में घटनाएं हो चुकी हैं। अब वक्त आ गया है जब पुलिस को सिर्फ खानापूर्ति नहीं, बल्कि ठोस और पारदर्शी कार्रवाई करनी होगी, ताकि आमजन का विश्वास बहाल हो सके और अपराधियों में खौफ पैदा हो सके और आत्मघाती घटनाए रुक सकें।

लापता युवक की मां ने सीओ से की कार्रवाई की मांग

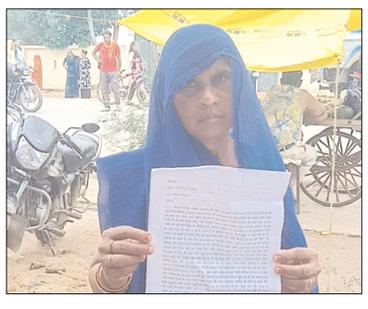

समय जगत हमीरपुर। जनपद में राठ कोतवाली क्षेत्र के धनौरी गांव में दो लोगों के बीच हुई मारपीट से आक्रोशित एक किशोर के परिजनों ने दूसरे युवक के साथ गाली गलौज करते हुए उसकी जमकर पिटाई कर दी। मारपीट की घटना के बाद पीड़ित युवक लापता हो गया। लापता हुए युवक की मां ने मारपीट करने वाले दबंग पड़ोसियों के विरुद्ध लिखित तहरीर देकर कार्रवाई की गुहार लगाई थी। लेकिन पुलिस के द्वारा कार्रवाई न किए जाने पर आज की मां ने पुलिस उपाधीक्षक को प्रार्थना पत्र देकर मामले में कार्रवाई की मांग की है। राठ कोतवाली क्षेत्र के धनौरी गांव की निवासी महिला कमलेशरानी पत्नी पप्पू ने शुक्रवार की दोपहर करीब 12 बजे पुलिस उपाधीक्षक को प्रार्थना पत्र देकर बताया कि 3 जुलाई वर्ष 2025 की शाम करीब 5 बजे मामूली विवाद के चलते उसका पुत्र सर्वेश ने पड़ोस में रहने वाले एक नाबालिक किशोर के साथ मारपीट कर दी थी। बताया कि जिसके बाद उक्त नाबालिक किशोर के परिजनों ने शनिवार को उसके पुत्र सर्वेश के साथ मारपीट कर उसे जान से मारने की धमकी दी थी। बताया कि जिसके बाद उसका पुत्र सर्वेश दबंगों के द्वारा की गई मारपीट और धमकी के डर से लापता हो गया है। बताया कि उसने राठ कोतवाली में लिखित तहरीर देकर कार्रवाई की गुहार लगाई थी। लेकिन पुलिस ने उसकी तहरियों पर कोई भी कार्रवाई नहीं की होता है कि आज उसने पुलिस उपाधीक्षक को लिखित प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है।

योगी सरकार ने जनसंख्या नियंत्रण क्यों नहीं किया लागू ?

महोबा। विश्व जनसंख्या दिवस पर बुंदेलों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को आल्हा चौक स्थित आंबेडकर पार्क में अपने खून से खत लिखे एवं दो से अधिक बच्चे पैदा करने वालों को मिलने वाली सभी सरकारी सुविधाएं तत्काल बंद करने की मांग की। साथ ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से पूछा कि 2021 में आपकी सरकार ने जो जनसंख्या नियंत्रण बिल तैयार किया था, उसे अब तक लागू क्यों नहीं किया गया। बुंदेली समाज के संयोजक तारा पाटकर बुंदेलखंडी व उनके साथियों ने प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री के नाम अपने खून से 11-11 खत लिखे और इन खतों में लिखा कि 146 करोड़ जनसंख्या के साथ भारत विश्व में प्रथम स्थान पर पहुंच गया है जबकि क्षेत्रफल में 7वें स्थान पर है। जनसंख्या घनत्व बढ़कर 492 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर पहुंच गया है। अगर सरकार ने तत्काल प्रभावी कदम नहीं उठाए तो सारी विकास योजनाएं धराशाई हो जाएंगी। हम अपने बच्चों को सिर्फनारकीय जीवन तोहफे में देकर जाएंगे। उनको शुद्ध हवा-पानी और भोजन तक नसीब नहीं होगा। अगर वोट के लालच में जनसंख्या नियंत्रण कानून नहीं लाया गया तो ये आत्मघाती कदम होगा और आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेंगी। आज बुंदेली समाज के साथियों ने रिकार्ड 46वीं बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपने खून से खत लिखे। इस मौके पर पूर्व फौजी कृष्णा शंकर जोशी, भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के जिलाध्यक्ष दिलीप जैन, रमाकांत नगायच, भूमित्र सोनी, देवेन्द्र तिवारी, हरीओम निषाद, अमरचंद विश्वकर्मा, गया प्रसाद, प्रेम चौरसिया, सुरेश बुंदेलखंडी, सुरेन्द्र शुक्ला समेत तमाम लोगों ने अपने खून से खत लिखे।

किसान संगठनों की बैठक संपन्न, सुनी गयी समस्याएं

अधिक से अधिक किसानों को किसान सम्मान निधि का लाभ दिया जाए : जिलाधिकारी

महोबा। जिलाधिकारी गजल भारद्वाज की अध्यक्षता में जनपद के किसान संगठनों, कृषक उत्पादक संगठनों, प्रगतिशील कृषकों एवं कृषि विभाग की संयुक्त बैठक कलेक्ट्रेट सभागार, महोबा में आहूत की गयी। बैठक में सम्मिलित किसान संगठनों द्वारा क्षेत्रीय किसानों की समस्याओं को रखा गया है। जय जवान जय किसान एशोसिएशन, महोबा के अध्यक्ष गुलाब सिंह द्वारा एफ0पी0ओ0 के माध्यम से मूंगफली एवं तिल के प्रदर्शनों के वितरण के सम्बन्ध में अवगत कराया कि एफ0पी0ओ0 द्वारा 02 हजार रू0 सदस्यता शुल्क लिया जा रहा है। जनक सिंह परिहार अध्यक्ष हलधर किसान यूनियन महोबा द्वारा मांग की गयी कि किसानों को समय पर बीज उपलब्ध करा दिया जाये। बैठक में उपस्थित दुर्गेश कुमार सिंह, जिला कृषि अधिकारी, महोबा द्वारा अवगत कराया गया कि एफ0पी0ओ0 द्वारा उनके वाइलाज के अनुसार शेयर पूंजी ली जा सकती है। नेशनल मिशन ऑन एडिबल ऑयल अन्तर्गत कृषि मैपर ऐप (भारत सरकार) पर रजिस्टर्ड किसानों को

निःशुल्क बीज क्लस्टर प्रदर्शन हेतु निर्देशानुसार एफ0पी0ओ0 के माध्यम से वितरित किया जा रहा है। जिलाधिकारी द्वारा निर्देश देते हुए कहा गया कि जनपद के अधिक से अधिक किसानों को योजनान्तर्गत नियमानुसार लाभान्वित किया जाये। साथ ही कृषक संगठनों को एक-एक एफ0पी0ओ0 बनाने का आव्हान किया तथा प्रत्येक 02 माह में किसान संगठनों की बैठक बुलाने के लिए कहा गया। जिलाधिकारी द्वारा निर्देश देते हुए कहा गया कि पान की खेती के लिए जनपद महोबा जाना जाता है, किन्तु अभी तक पान की खेती करने वाले कृषकों का कोई एफ0पी0ओ0 गठित नहीं है इसका तत्काल गठन कराया जा जाये। जिलाधिकारी ने कृषि विभाग को निर्देशित करते हुए कहा कि ब्लॉक स्तर पर कैंप लगाकर अधिक से अधिक किसानों का भारत सरकार के पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कराकर बीज वितरण का लाभ किसानों को दिया जाए। किसानों को उन्नत खेती के लिए जागरूक किया जाए, जिससे किसान कृषि के क्षेत्र में आगे बढ़ सकें। किसानो हेतु चलायी जा रही सभी योजनाओं का प्रसार प्रसार कराकर कृषि के संबंध में किसानों को जानकारी दी जाए, जिससे किसान जागरूक हो सके। उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक किसानों को किसान सम्मान निधि का लाभ दिया जाए तथा किसानों को समय से बीज उपलब्ध कराये जाएँ। बैठक में बलराम कुमार, मुख्य विकास अधिकारी, राम सजीवन, उप कृषि निदेशक, महोबा, दुर्गेश कुमार सिंह, जिला कृषि अधिकारी, महोबा, सुरेश कुमार, जिला उद्यान अधिकारी, महोबा, विनय कुमार तिवारी, ए0आर0 कोआपरेटिव, विजय पाल कुशवाहा, एस0ए0 एम0आई0, जनक सिंह परिहार, अध्यक्ष हलधर किसान यूनियन, महोबा, अखिलेश रावत, अध्यक्ष भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) देवीदीन राजपूत, अध्यक्ष बुन्देलखण्ड किसान यूनियन, गुलाब सिंह, अध्यक्ष जय जवान जय किसान एशोसिएशन, महोबा, महेश कुमार वर्मा, निदेशक, आशियाना बायो एनर्जी फार्मर प्रो0क0लि0, सिजहरी, खूब सिंह, निदेशक, बुन्देलखण्ड आर्गेनिक कॉरीडोर प्रो0क0लि0, दादरी, अरूण कुमार गोस्वामी, निदेशक, महोबा फार्मर प्रो0क0लि0, दमौरा, अभय सिंह, किसान जैविक कृषक उत्पादक संगठन, खरेला के साथ-साथ प्रगतिशील कृषक उपस्थित रहे।

आपदा राहत एवं बचाव टीम एसडीआरएफ द्वारा मृत किशोर के शव को किया बरामद

धौलपुर। पुलिस कन्ट्रोल रूम पुलिस थाना सैंपऊ के अन्तर्गत पार्वती नदी में एक किशोर के डूबने की सूचना एसडीआरएफ राजस्थान कन्ट्रोल रूम जयपुर को मिलने पर मानसून सत्र 2025 में आपदा राहत एवं बचाव हेतु एसडीआरएफ सी कम्पनी भरतपुर की रिजर्व पुलिस लाईन जिला धौलपुर में तैनात रेस्क्यू टीम सी-04 के प्रभारी ऊदल सिंह को अविलंब घटनास्थल के लिए रवाना हुए। रेस्क्यू टीम प्रभारी 9 जवानों की टीम तथा आपदा राहत उपकरणों के साथ दोपहर 1:30 बजे घटनास्थल पहुंचे। टीम कमाण्डर ने स्थिति का जायजा लिया तथा एसडीआरएफ कमांडेंट को बताया कि गुरूवार को प्रातः पुलिस थाना सैंपऊ के अन्तर्गत कस्बे के चार किशोर खपरैला घाट पर पार्वती नदी में स्नान कर रहे थे, स्नान करने के दौरान चारों किशोर नदी में डूब गये। तीन को मौके पर मौजूद ग्रामीण द्वारा जीवित बचा लिया तथा एक किशोर डूब गया। किशोर केशव को बरामद करने के लिए स्थानीय ग्रामीणों एवं सिविल डिफेन्स की टीम के द्वारा लगातार प्रयास किये जा रहे है, किन्तु अभी तक सफलता प्राप्त

नहीं हुई है। नदी की चौड़ाई 150 मीटर तथा गहराई 20 फीट है, बहाव भी तेज है। रेस्क्यू टीम के जवानों राजवीर सिंह, वेदप्रकाश, मुरारी लाल, संजय सिंह, गीतम सिंह, राजवीर, रविन्द्र सिंह तथा महावीर ने सर्चऑपरेशन शुरू किया। सबसे पहले रेस्क्यू टीम ने मोटर बोट को तेज गति से चलाकर नदी के पानी को हिलाया। उसके बाद लाईन तथा जिक-जैक सर्च तकनीक से बांस, बिलाई और रेस्क्यू रोप की सहायता से गहन सर्च किया। सायं 7:15 बजे अन्धेरा होने पर स्थानीय प्रशासन के आदेशानुसार सर्च ऑपरेशन सुबह तक स्थगित कर दिया गया। शुक्रवार को प्रातः 8 बजे से सर्च ऑपरेशन पुनः शुरू किया गया। अथक परिश्रम तथा कड़ी मेहनत से टीम को दोपहर 1:30 बजे सफलता प्राप्त हुई।

शराब में मिलावट : स्वास्थ्य से खिलवाड़

आनंद शर्मा -समय जगत,मनेंद्रगढ़। छत्तीसगढ़ के मनेंद्रगढ़ क्षेत्र से सामने आया शासकीय शराब दुकान में मिलावटखोरी का वीडियो न केवल झकझोरने वाला है, बल्कि यह हमारी शासन-प्रशासन व्यवस्था की असलियत भी उजागर करता है। जिस दुकान को सरकार स्वयं संचालित कर रही है, वहां अगर खुलेआम शराब की बोतलों में संदिग्ध तरल मिलाया जा रहा है और वह भी सुपरवाइजर की मौजूदगी में, तो यह न केवल गंभीर अपराध है बल्कि शासन की जवाबदेही पर सीधा प्रहार भी है। आश्चर्य की बात यह नहीं है कि यह घटना हुई, बल्कि यह है कि यह पहली बार नहीं हुई। पूर्व में भी नकली शराब से संबंधित वीडियो सामने आ चुके हैं, लेकिन हर बार जांच के नाम पर केवल निचले स्तर के कर्मचारियों पर कार्रवाई कर खानापूर्ति कर दी जाती है। विभागीय अधिकारी, जिनकी निगरानी जिम्मेदारी है, हमेशा जांच से बाहर ही रहते हैं।सबसे चिंता की बात यह है कि सूत्र यह संकेत दे रहे हैं कि यह एक स्थानीय अपवाद नहीं, बल्कि प्रदेशव्यापी समस्या बन चुकी है। अगर पूरे छत्तीसगढ़ में शासकीय शराब

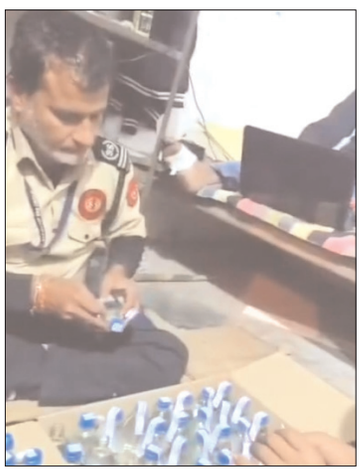

दुकानों में ऐसी गतिविधियाँ संचालित हो रही हैं, तो यह स्वास्थ्य, सुरक्षा और नैतिक शासन के लिहाज से एक बहुत बड़ा संकट है।शराब एक संवेदनशील विषय है। समाज में इसके प्रभावों को लेकर हमेशा बहस होती रही है, लेकिन जब जनता सरकार की निगरानी में चल रही दुकान से शराब खरीदती है, तो उसमें मिलावट की संभावना नहीं होनी चाहिए। यह विश्वास की बुनियाद होती है। लेकिन यदि वही दुकान मिलावट का अड्डा बन जाए, तो यह जनता के विश्वास के साथ विश्वासघात है।

अब सरकार को दो में से एक फैसला लेना होगा : या तो शासकीय शराब दुकानों में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करे, या फिर शराब की बिक्री को पूरी तरह से ठेकेदारी व्यवस्था में सौंप दे। आधे-अधूरे नियंत्रण और राजनीतिक संकोच से न तो व्यवस्था सुधर रही है और न ही भ्रष्टाचार पर अंकुश लग पा रहा है। यह वक्त है जब जनता की चुनी हुई सरकार को नींद से जागना होगा। सीसीटीवी कैमरे, कड़ाई से निगरानी और दोषियों पर त्वरित कार्रवाई जैसे कदम अब विलंबित नहीं किए जा सकते। केवल गार्ड और सुपरवाइजर को बलि का बकरा बनाकर समस्या का समाधान नहीं निकलेगा। जब तक उच्च स्तर की जवाबदेही तय नहीं की जाएगी, तब तक ये घटनाएं दोहराई जाती रहेंगी।मिलावट न केवल कानून का उल्लंघन है, यह मनुष्यता के प्रति अपराध है। और जब यह अपराध सरकार की निगरानी में हो रहा हो, तो उसका दायित्व कई गुना बढ़ जाता है।

विश्व जनसंख्या दिवस जिला स्तरीय कार्यक्रम किया गया आयोजित

योग्य दंपतियों को परिवार नियोजन हेतु करें प्रेरितः कलेक्टर श्रीनिधि

धौलपुर। विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की ओर से जिला स्तरीय सम्मान समारोह शुक्रवार को आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला कलक्टर श्रीनिधि बीटी ने परिवार कल्याण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले ब्लॉक, पंचायत समिति, ग्राम पंचायत, स्वयंसेवी संस्थाओं तथा व्यक्तिगत श्रेणी चिकित्सकों, एएनएम और आशा सहयोगिनी भी प्रोत्साहन पुरस्कार वितरित किए। इस दौरान अपने अपने उद्बोधन में जिला कलक्टर ने कहा कि विश्व में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है बढ़ती जनसंख्या की वजह से संसाधनों की कमी होती जा रही है। जनसंख्या नियंत्रण हेतु योग्य दंपत्तियों को परिवार नियोजन के साधन अपनाने हेतु प्रेरित करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.धर्मसिंह मीणा ने कहा कि विश्व जनसंख्या दिवस पर इस वर्ष की थीम÷मां बनने की उम्र वही,

जब तन और मन की तैयारी सही÷ रखी गई है। इस थीम के माध्यम से महिलाओं के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए सुरक्षित मातृत्व को बढ़ावा देने पर विशेष जोर रहेगा। उन्होंने कहा कि विश्व जनसंख्या दिवस मनाने का उद्देश्य समाज में जनसंख्या संतुलन, मातृत्व स्वास्थ्य और परिवार नियोजन जैसे मुद्दों पर सकारात्मक सोच को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा की जनसंख्या स्थिरता पखवाड़े के दौरान योग्य दंपतियों को परिवार नियोजन के साधन अपनाने में भी अवगत करवाएं। कार्यक्रम में अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (प.क.) डॉ. गौरव मीणा ने परिवार कल्याण कार्यक्रम की जानकारी देते हुए कहा कि 11 से 24 जुलाई तक आयोजित जनसंख्या स्थिरता पखवाड़े के दौरान जिले के चयनित चिकित्सा संस्थानों पर लाभार्थियों को स्थाई एवं अस्थाई साधनों यथा-नसबंदी, आईयूसीडी पीपीआईयूसीडी कंडोम, गोलियां अंतरा आदि की सेवाएं प्रदान की जावेगी। हेतु प्रेरित करे। साथ ही परिवार नियोजन के उपलब्ध साधनों की जानकारी देते हुए परिवार सीमित रखने, सीमित परिवार के लाभ, प्रसवोत्तर परिवार कल्याण सेवाओ के बारे

जिला एवं सेशन न्यायाधीश अरुण की अध्यक्षता में सभी न्यायिक अधिकारी गणों के साथ त्रैमासिक मीटिंग का आयोजन किया गया

धौलपुर। अध्यक्ष अरुण कुमार अग्रवाल एवं समस्त न्यायिक अधिकारी गणों के द्वारा विशेष प्री-लिटिगेशन लोक अदालत एवं आगामी लोक अदालत के संबंध में मीटिंग का आयोजन किया गया साथ ही निर्माणाधीन कोर्ट कैंपस धौलपुर में वृक्षारोपण का आयोजन किया गया आज दिनांक 11.07.2025 को एडीआर परिसर धौलपुर में जिला एवं सेशन न्यायाधीश अरुण कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में सभी न्यायिक अधिकारी गणों के साथ एडीआर परिसर धौलपुर में त्रैमासिक मीटिंग का आयोजन किया गया एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अरुण कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में सभी न्यायिक अधिकारी गणों के साथ एडीआर परिसर धौलपुर में मीडियेशन एवं विशेष प्री-लिटिगेशन लोक अदालत 26.07.2025 एवं आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत 13.09.2025 के संबंध में विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा कर विचार-विमर्श किया गया।

शिवपुरी में ब्लैकमेलिंग से परेशान सरपंच संघ ने कलेक्टर को दिया ज्ञापन

तथाकथित आरटीआई कार्यकर्ता के खिलाफ कार्यवाही की मांग

समय जगत, शिवपुरी। मध्य प्रदेश की ग्राम पंचायतों और सरकारी विभागों में इन दिनों आरटीआई लगाकर ब्लैकमेलिंग और अवैध धन उगाही के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। ऐसा ही एक मामला शिवपुरी जिले की करैरा विधानसभा क्षेत्र की नरवर जनपद की ग्राम पंचायत सिमिरिया से सामने आया है। जहां ब्लैकमेलिंग से परेशान ग्राम पंचायत के सरपंच सचिव ने जिले के सरपंच संघ के साथ जिला कलेक्टर के नाम संयुक्त कलेक्टर जेपी गुप्ता को ज्ञापन देकर एक तथाकथित आरटीआई कार्यकर्ता के खिलाफ कार्यवाही किए जाने की मांग की है। संयुक्त कलेक्टर ने इस मामले में जांच के बाद कार्यवाही की बात कही है। सरपंच संघ जिला इकाई शिवपुरी के जिला अध्यक्ष मोहर सिंह धाकड़ ने आरोप लगाते हुए बताया कि ग्राम पंचायत सिमिरिया में नरवर के एक

तथाकथित आरटीआई कार्यकर्ता कमर खान द्वारा आरटीआई लगाकर सरपंच सचिव को ब्लैकमेल किया जा रहा था। विगत दिवस कमर खान द्वारा जो जानकारी चाही गयी थी वो समस्त जानकारी सत्यापित प्रतिलिपि में ग्राम पंचायत द्वारा कमर खान को दे दी गयी। जिस पर कमर खान के द्वारा प्राप्ति का आवेदन पत्र प्रस्तुत कर दिया जो कि ग्राम पंचायत ने जनपद पंचायत में उसकी छायाप्रति व्हाट्सप्प के माध्यम से ब्रजमोहन कोली खंड अधिकारी को भेज दिया। इसके बाद कमर खान के द्वारा सचिव से 50000 रुपये मांगे गए, जिस पर सचिव व महिला सरपंच ने पूंछा पैसे किस बात के इस बात पर कमर खान ने सचिव और हमारी महिला सरपंच के साथ अभद्रता की गई। सरपंच संघ ने आरोप लगाते हुए बताया कि कमर खान के द्वारा विगत कई वर्षों से झूठी सूचना के अधिकार के तहत जानकारी के अधिकार का दुरुपयोग कर रहा है। आज दिनांक तक कमर खान के द्वारा सेकड़ों आरटीआई दर्ज कि गयी है जो कि पूर्ण रूप से झूठी एवं मिथ्या है। जिसका रिकॉर्ड सूचना अधिकार आयोग के पास दर्ज होगा। सरपंच संघ ने तथाकथित आरटीआई कार्यकर्ता के खिलाफ कार्रवाई किए जाने की मांग की है।

नर्मदा घाट से सैकड़ों कांवड़ियों की महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के लिए निकली कावड़ यात्रा

समय जगत, बड़वाह। नर्मदा घाट से पवित्र श्रावण माह के प्रारंभ होते ही शुक्रवार को सैकड़ों कांवड़ियों ने कांवड़ों में मां नर्मदा का जलभर कर महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग उज्जैन के लिए रवाना हुए है।

भगवान शिव की आराधना भक्ति तपस्या का पवित्र श्रावण माह 11 जुलाई शुक्रवार से प्रारंभ होते ही सम्पूर्ण क्षेत्र शिवभक्ति में रंगमय नजर आने लगा है। जिसको लेकर मध्यप्रदेश के बड़वाह नावघाट खेड़ी स्थित नर्मदा घाट पर शुक्रवार को उत्तर प्रदेश बरेली के जय श्री महाकाल बेड़ा संघ के बेनर तले सैकड़ों कांवड़ियों ने मां नर्मदा का कांवड़ों मे जल भरकर पूजन आरती की। पश्चात मां नर्मदा के

पवित्र जल को कावड़ में लेकर कावड़िए इंदौर इच्छापुर हायवे से महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग उज्जैन की ओर कावड़ यात्रा पर रवाना हुए। ओंकारेश्वर व नर्मदा घाट बड़वाह से उज्जैन कावड़ यात्रा अब एक भव्य परंपरा बन चुकी है। जिसमें हर साल हजारों श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं।

सार-समाचार

जमीन विवाद को लेकर किया प्राणघातक हमला

उज्जैन। जिले के माकड़ौन थाना क्षेत्र में विगत दिनों जमीन विवाद को लेकर ग्राम बाजनातलाई में पीड़ित अनिताबाई व उनके पति जितेंद सिंह व सास राजुबाई के साथ आरोपीगण गोपी, प्रभु, रंजीत, चेनसिंह, सौदान, अरुण के द्वारा जमीन विवाद को लेकर प्राणघातक हमला कर दिया, जमीन हड़पना चाहते है हमले तीनो पीड़ित को गम्भीर चोट है जिसमे अनिता का हाथ टूट गया, पति जितेंद को सिर में गम्भीर चोंट आयी व सास राजुबाई कोमा में है। आरोपियो को थाने से जमानत मिलने के बाद लगातार गांव में खुलेआम घूम रहे, जिससे पीड़ित परिवार को जान को खतरा है। जिसको लेकर पीड़ित परिवार ने पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौपकर धारा बढ़ाकर आरोपियो पर कड़ी कार्यवाही की मांग की है।

माधव साख सहकारी संस्था मर्यादित बिस्टान ने छात्रों को वितरित किये बस्ते

बिस्टान निप्र। नगर की संस्था ने 1 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शासकीय प्राथमिक विद्यालय गोपालपुरा के छात्र छात्रों को नि:शुल्क बस्ते वितरित कर उन्हें स्कूल रोजाना आने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से यह आयोजन किया। जिसमें नगर परिषद बिस्टान के अध्यक्ष डेमसिंग नॉर्वे, पार्षद प्रहलाद सिंग वास्कले, पार्षद प्रतिनिधी प्रेमलाल मोरे सहित समाजसेवी राजू कोल्या, आकाश ठाकुर, गोरेलाल वास्कले, सहित संस्था के अध्यक्ष हीरालाल यादव उपाध्यक्ष राहुल सोनी, नरेंद्र गोले, प्रबंधक दिनेश सोनी व विद्यालय की शिक्षिका मीना सोनी सहित स्टाफ मौजूद था। इस अवसर पर राहुल सोनी ने बच्चों को उद्बोधित करते हुए कहा कि समय का सम्मान करना सीखें समय से विद्यालय आना, होमवर्क समय से करके लाना साथ ही अपने सहपाठी को स्कूल साथ लाने का प्रयास करे। डेमसिंग नार्वे ने भी बच्चों को को सम्बोधित किया और कहा कि आप देश के भविष्य हो आप पढ़ लिखकर आगे बढ़ो और अपने नगर और देश का मान बढ़ाओ। आभार नरेंद्र गोले ने माना।

छह युवा साइकिल से वैष्णो देवी की यात्रा पर हुए रवाना, नागरिकों ने किया स्वागत

सुठालिया। नगर के परलापुरा निवासी छह युवक गुरुवार को गुरु पूर्णिमा के मौके पर मोहन सिंह कुशवाहा के नेतृत्व में साइकिल से जम्मू कटरा स्थित वैष्णो देवी माता के दर्शन हेतु रवाना हुए। इनमे पदम कुशवाह दिनेश कुशवाह धमेंद्र कुशवाह दिलीप मेहर रमेश मेहर शामिल हे जिनको प्राता 9:00 बजे परलापुरा से पुष्पहार पहनाकर स्वागत कर ढोल ढमाके के साथ विदाई दी गई वहीं जगह-जगह उनका स्वागत किया गया। साइकिल यात्रीयो का जत्था नगर के मुख्य मार्ग श्री राम मंदिर चौक सदर बाजार गांधी चौक मेंन मार्केट बस स्टैंड होते हुए रवाना हुआ जिनका लोगो ने पुष्प हार से स्वागत किया। इस दौरान पार्षद आकाश अग्रवाल पूर्व नप उपाध्यक्ष महेश पालीवाल पार्षद मोर सिंह कुशवाहा देवी सिंह कुशवाह कमलेश आदि नागरिक एवं महिला पुरुष ने मौजूद रहकर सभी छह यात्रियों को विदाई दी। वही ब्यावरा रोड स्थित एक निजी होटल में नप उपाध्यक्ष प्रदीप सिंह परमार ने सभी का पुष्पहार से मिठाई खिलाकर स्वागत किया। उक्त छह सायकल यात्री करीब एक माह का सफर कर जम्मू कटरा स्थित माता वैष्णो देवी के दर्शन कर लौटेंगे।

सावन की हुई शुरुआत, नगर में होने लगे आयोजन अखण्ड रामायण पारायण का पाठ चलेगा

छापीहेड़ा। नगर के बस स्टैंड परिसर पर स्थित चोपड़ा महादेव मंदिर पर हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अखंड रामायण पारायण पाठ का आयोजन किया जा रहा है आज शुक्रवार को बस स्टैंड शिव मंदिर से श्री राम मंदिर बाजार चौक अखण्ड रामायण पारायण का ढोल धमाके के साथ। नगर में चल समारोह निकाला। नगर के भोले मित्र मंडल के द्वारा आयोजित की जाती है साथ ही सावन के आखिरी सोमवार को भोले बाबा का नगर भ्रमण एवं विषेश साज सज्जा की जाएगी साथ ही भंडारे का आयोजन भी किया जाएगा।

गुरुर ब्रह्मा, गुरुर विष्णु, गुरुर देवो महेश्वरा. गुरुर साक्षात परम ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः

समय जगत, खिरकिया। गुरु पूर्णिमा के इस पावन अवसर पर सियॉन - रे इंटरनेशनल स्कूल में बीते गुरुवार दिवस पर गुरु पूर्णिमा के त्यौहार को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया. गुरु की महिमाओं का वर्णन करते हुए छात्र-छात्राओं ने एकलव्य द्रोणाचार्य की किरदार को निभाते हुए एक सुंदर नाटक प्रस्तुत किया जिसमें गुरु द्रोणाचार्य की प्रतिमा बनाकर एकलव्य विशेष और विशिष्ट धनुर्धर बना नाटक के माध्यम से सभी छात्र-छात्राओं को गुरु की महिमा एवं गुरु का महत्व बताया. गायन के माध्यम से भी गुरु की महिमा का बखान किया गया. शाला के संचालक जयसिंह राजपूत ने छात्र-छात्राओं को गुरु का महत्व और गुरु के सम्मान करने की प्रेरणा दी वही शाला के प्राचार्य अमित भार्गव द्वारा छात्र-छात्राओं को गुरु एवं गुरु समान माता-पिता के आदर और सम्मान करने के लिये प्रेरित किया गया और बताया गया की गुरु एक ऐसा दीपक हे जो स्वयं जलकर दूसरों को अपने ज्ञान के प्रकाश से रोशन करता है।

स्टेट हाईवे-44 पर एमपीआरडीसी विभाग के अधीन

मजबूती की गारंटी बारिश में धुली, 13 करोड़ की फोरलेन सड़क बनी जानलेवा

सिलवानी। स्टेट हाईवे-44 पर एमपीआरडीसी विभाग के अधीन सिलवानी नगर में आमापानी कॉलोनी से बजरंग चौराहा तक बनाई गई करीब 2 किलोमीटर लंबी फोरलेन सड़क अब गड्ढों में तब्दील हो गई है। लगभग 14 करोड़ की लागत से तीन वर्ष पूर्व बनी यह सड़क अब वाहन चालकों के लिए खतरे का सबब बन चुकी है। बारिश के चलते डामर की ऊपरी परत उखड़ गई है और जगह-जगह गिट्टी-बजरी फैलने से दोपहिया वाहन फिसल कर दुर्घटनाग्रस्त हो रहे हैं।

निर्माण एजेंसी पर गंभीर आरोप: इस निर्माण कार्य को एमपीआरडीसी (मध्य प्रदेश सड़क विकास निगम) विभाग द्वारा केपकॉन प्रोजेक्ट कंपनी से कराया गया था। स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि निर्माण कार्य में घटिया सामग्री का उपयोग किया गया तथा विभागीय अधिकारियों द्वारा समय-समय पर निरीक्षण नहीं किया गया। एमपीआरडीसी की एजीएम सोनम सिंह पर भी सड़क की स्थिति की अनदेखी

और मरम्मत कार्य में लापरवाही बरतने के आरोप लगाए गए हैं।

सिर्फ रस्म अदायगी तक सीमित रखरखाव: स्थानीय नागरिकों की शिकायत और पत्रिका समाचार पत्र में सड़क की जर्जर हालत को उजागर करने के बाद विभाग ने गिट्टी-बजरी डालकर मात्र औपचारिकता पूरी की, लेकिन इससे समस्या और बढ़ गई है। गड्ढों में भरी गई गिट्टी बारिश में बह गई और अब वह सड़क पर फैलकर वाहनों के फिसलने का कारण बन रही है।

राहगीरों को डर, हादसों का खतरा: सड़क की स्थिति इतनी खराब हो चुकी है कि राहगीर अब इन मार्गों से गुजरने से डरने लगे हैं। लगातार हो रहे हादसों के कारण लोग अपने बच्चों और बुजुर्गों को इस मार्ग से भेजने से कतराते हैं। दोपहिया वाहन चालक खास तौर पर गिट्टी पर फिसलकर चोटिल हो रहे हैं। स्थानीय निवासी प्रियांशु राजपूत ने बताया, तीन साल पहले बनी सड़क आज बदहाल है। विभाग और ठेकेदार की मिलीभगत से जनता की गाढ़ी कमाई यूं ही बह गई।

जनता ने की कार्रवाई की मांग: स्थानीय लोगों ने मांग की है कि इस पूरे प्रकरण की उच्चस्तरीय जांच कराकर दोषियों पर कठोर कार्रवाई की जाए। साथ ही, सड़क का पुनः उच्च गुणवत्ता से निर्माण या मरम्मत कार्य शीघ्र प्रारंभ किया जाए, ताकि जान-माल की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

मोबाइल नहीं देने पर बड़े भाई ने छोटे भाई को उतारा मौत के घाट, आरोपी गिरफ्तार

समय जगत, खिरकिया। मामला हरदा जिले के थाना छिपाबड अंतर्गत आने ग्राम मांदला का है। जानकारी के अनुसार मोबाइल नहीं देने की बातों को लेकर बड़े भाई ने छोटे भाई को लकड़ी से सिर में मारकर मौत के घाट उतार दिया। जानकारी के अनुसार मृतक राजा पिता मन्नू लाल काजले उम्र 25 साल निवासी ग्राम मांदला जिला हरदा का बताया गया है। प्रभारी एसआई दिनेश सिंह रावत ने बताया कि परिजनों से मिली जानकारी के अनुसार बताया गया पिछले 10 दिन पहले बड़े भाई ने छोटे भाई मृतक राजा को एक मोबाइल दिया था जिसे मांगने पर राजा उसे मोबाइल नहीं लौटा रहा था जिससे बड़े भाई ने गुस्से में आकर लकड़ी से सिर में वार किया जिससे राजा की मौके पर मौत हो गई एसआई रावत ने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

क्षेत्र में आये दिन उजागर हो रहे हैं घोटाले

लक्ष्मीकांत चतुर्वेदी- समय जगत, ब्योहारी। सरकारी राशि के वसूली मामले मे बडे अधिकारियो की तरह अब छोटे कर्मचारी भी तरह तरह के हथकंण्डे अपनाकर कलेक्टर तक के आदेश की खुलेआम धज्जिया उडा रहे है ? ब्यौहारी जनपद के ग्राम पंचायत हिरवार मे बडी मात्रा मे हुऐ सरकारी राशि के ख्यानत मामले मे जिले के कलेक्टर के आदेश की नाफरमानी सुर्खियो मे है लगभग डेढ साल से ऐ मामला ब्यौहारी के यसडीयम कार्यालय से तहसीलदार कार्यालय तक भटक रहा है आखिरकार कौन सी बाधाऐ है जो ख्यानत राशि की वसूली मे अडंगा डाल रही है आपको बता दे कि कलेक्टर शहडोल ने यसडीयम ब्यौहारी को निर्देशित किया कि ब्यौहारी जनपद क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत हिरवार के पूर्व सरपंच रणबहादुर सिंह तथा सचिव अमरेन्द्र सिह से लाखो रुपये की वसूली कर सरकारी खजाने मे जमा कराऐ, इसके परिपालन मे महीनो बाद फाइल को यसडीयम कार्यालय से तहसीलदार कार्यालय भेजा गया, कुछ महीनो तक कार्यवाही नही होने पर मामला मीडिया मे आने से तहसीलदार द्वारा नोटिस भेजकर तलब किया गया लेकिन आरोपी नही आऐ।

फिर और भी नोटिसे गई लेकिन आरोपी नही आऐ : इसके बाद पटवारी को निर्देशित किया गया कि आरोपी रणबहादुर की सम्पत्ति विवरण दे लेकिन अब हल्का पटवारी रीतेश गोस्वामी बडी बाधा बने हुऐ है खबरे है कि इस संवेदनशील मामले मे पटवारी नियत तिथि को पहुचे ही नही मामले मे फिर पेशी बढा दी गई और सरकारी राशि की वसूली का मामला एक बार फिर खटाई मे पडता दिख रहा है !

इधर अभी भी हिरवार पंचायत में भ्रष्टाचार जारी है : ग्रामीणों का आरोप है कि सोलर पैनल के नाम पर पंचायत के सचिव सुखदेव मिश्रा तथा पूर्व सरपंच ने ठेकेदार से लाखो रुपयो कमीशन लिऐ है पर आच तक नही आई ! सवाल खडे हो रहे है कि आखिरकार जिले मे हो क्या रहा हैं आऐ दिन सरकारी विभागो से घोटाले के जिन्न निकल रहे है शिक्षा विभाग स्वास्थ्य विभाग पंचायत विभाग यहा तक की खुद जिले मे घोटाले हो रहे है अब तो कलेक्टर केदार सिंह के क्रियाकलापों सहित प्रशासनिक कुशलता पर सवाल खडे होने लगे है।

आपात स्थिति में गर्भवती को अस्पताल पहुंचाने पर निजी वाहन चालक को मिलेगा खर्च का रिम्बर्समेंट : कलेक्टर प्रियंक मिश्रा

धार। कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने आज जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में महत्वपूर्ण निर्देश देते हुए कहा कि यदि कोई व्यक्ति आपातकालीन स्थिति में अपने निजी वाहन से किसी गर्भवती महिला को अस्पताल पहुंचाता है, तो उसके द्वारा किए गए खर्च की रिम्बर्समेंट की व्यवस्था रेडक्रॉस के माध्यम से की जाए। यह व्यवस्था जनसहयोग को प्रोत्साहित करने और समय पर प्रसव सेवाएं सुनिश्चित करने के उद्देश्य से की जाएगी। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के मानवीय कार्यों की प्रशंसा की जाना चाहिए ताकि स्वास्थ्य सेवाओं की अंतिम छोर तक पहुंच मजबूत हो सके। यह निर्देश आज कलेक्टर कार्यालय के सभागार में संपन्न हुई जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में दिए गए। बैठक की अध्यक्षता कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने की। बैठक में स्वास्थ्य विभाग तथा महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला एवं खंड स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे। बैठक में आईएमआर और एमएमआर की विशेष समीक्षा की गई। कलेक्टर ने स्पष्ट कहा कि इन दोनों सूचकों में सुधार लाने के लिए लक्ष्य निर्धारित कर अभियान चलाया जाए। उन्होंने कहा कि ये दोनों आंकड़े सभी स्वास्थ्य योजनाओं की सफलता से जुड़े हुए हैं और इनका उच्च होना इस बात का संकेत है कि गाइडलाइन का पालन नहीं हो रहा है, जो मिसमैनेजमेंट का प्रतीक है।

कलेक्टर मिश्रा ने स्वास्थ्य संस्थानों में टीकाकरण की धीमी प्रगति पर भी नाराजगी जताई। उन्होंने अधिकारियों से पूछा कि अब तक सम्पूर्ण टीकाकरण क्यों नहीं हो पाया? साथ ही इस दिशा में पुख्ता कार्ययोजना और जरूरी मॉनिटरिंग की अपेक्षा स्पष्ट रूप से जताई। बैठक में कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर्स की उपस्थिति और कार्य निष्पादन पर भी गहन चर्चा की गई। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि सीएचओ की उपस्थिति की सत्यापन की जिम्मेदारी दूसरे विभागों के अधिकारियों को दी जाए। उन्होंने सख्त लहजे में कहा कि जो ष्द्धश कार्य नहीं कर रहे हैं, उन्हें सेवा से बाहर किया जाए। यह कार्रवाई सीएमएचओ स्तर पर की जानी चाहिए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि मामला मेरे संज्ञान में आया, तो संबंधित कंट्रोलिंग डॉक्टर पर भी कार्रवाई की जाएगी।

आवास योजना के वितरित किए गए स्वीकृति पत्र

समय जगत, टिमरनी। नगर परिषद टिमरनी रेन बसेरा भवन में प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत मुख्यमंत्री का लाइव प्रसारण कार्यक्रम में उपस्थित हितग्राहियों एवं नागरिकगणों को दिखाया जाकर योजना अंतर्गत पांच हितग्राहियों को गृह प्रवेश कराया गया एवं पांच हितग्राहियों को पचास पचास हजार रुपए की स्वीकृति पत्र प्रदान किए गए।2.0 योजना अंतर्गत 6 हितग्राहियों को स्वीकृति पत्र प्राप्त किए गए। कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपाध्यक्ष नगर परिषद टिमरनी जयंत कौशल,पार्षद सुनील दुबे,श्रीमती हीरा गिरीश धुरे एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी अकबर शेख, केवल राम देबडा,योजना प्रभारी राजेश नागरे, श्रीमती शिखा दुबे आदि उपस्थित थे।कार्यक्रम के अंत में सभी का आभार व्यक्त किया जाकर कार्यक्रम समाप्त किया।

पुलिस की तत्परता से बची महिला की जान,एसपी ने किया सम्मान

समय जगत, हरदा। यातायात पुलिस की टीम की सूझबूझ से एक महिला की जान बच गई।मिली जानकारी अनुसार गुड्डी बाई पति कैलाश नाथ, उम्र 50 वर्ष, निवासी खेड़ा ने पारिवारिक विवाद एवं पति द्वारा मारपीट से क्षुब्ध होकर अजनाल नदी, खेड़ीपुरा नाका के पुल से कूदकर आत्महत्या का प्रयास किया,वो तो भगवान का शुक्र रहा कि महिला पानी में नहीं गिरी और पुल की रेलिंग से लटकी हुई थी तथा कुछ ही क्षणों में नदी में गिरने वाली थी। उसी समय घटना की सूचना थाना यातायात को प्राप्त हुई। ड्यूटी पर तैनात अधिकारी एवं कर्मचारियों की टीम ने मानवीय संवेदनशीलता और साहस का परिचय देते हुए दौड़कर महिला को समय रहते बचा लिया। सहायक उप निरीक्षक बसंत चौधरी,प्रधान आरक्षक विमल, आरक्षक कपिल इवने,पुलिस सैनिक देवेन्द्र पाण्डे ने महिला को लटकते हुए पुल से ऊपर खींचकर जान बचाई। नगर में जैसे ही खबर फैली तो सभी ने पुलिस जवानों की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज पुलिस जवानों की सतर्कता से एक परिवार बिखरने से बच गया।वहीं पुलिस कप्तान ने साहसिक कार्य करने वाले पुलिसकर्मीयों सहायक उप निरीक्षक बसंत चौधरी,प्रधान आरक्षक क्रमांक 61 विमल, आरक्षक क्रमांक 194 कपिल इवने,पुलिस सैनिक देवेन्द्र पाण्डे को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया।

संभागीय उपायुक्त जनजातीय कार्य विभाग ने स्थानांतरित कर्मचारियों को तत्काल रिलीव करने के दिये निर्देश

अतिथि शिक्षकों की भर्ती के संबंध में संभागीय उपायुक्त ने ली अधिकारियों की बैठक

समय जगत, शहडोल। संभागीय उपायुक्त, जनजातीय कार्य विभाग जे.पी.यादव ने विभागीय जिला एवं विकासखंड स्तरीय अधिकारियों की बैठक ली। उन्होंने अधिकारियो को निर्देश दिए कि शहडोल संभाग में अतिथि शिक्षको की भर्ती प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जाए, अधिकारी इसका ध्यान रखें। उन्होंने कहा कि अतिथि शिक्षकों की प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण कर अध्यापन कार्य सुचारु रूप से विद्यालयो का संचालन सुनिश्चित करें। उन्होंने अधीनस्थ संस्थाओं के नियमित निरीक्षण कर संज्ञान मे आई समस्याओं का निदान करने के, कार्यालय और स्कूल समय पर खुलें तथा इन संस्थाओं के कार्यालय प्रमुख एवं स्टाफ समय पर पहुंचे, यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कर्मचारियों के समस्याओं के निदान के लिए अधिकारियों को संवेदनशील होकर काम करें। संभागीय

उपायुक्त ने लंबित पेंशन प्रकरण, विभागीय जाँच, अनुकम्पा नियुक्ति प्रकरणों की समीक्षा करते हुए निर्देशित किया कि पेंशन प्रकरणों का समय पर निराकरण करावें, कोषालय से दर्ज आपत्तियों का त्वरित निदान करें, विभागीय जाँच का कार्य तीन माह मे पूर्ण करें। बहुत आवश्यक होने पर निलंबन की कार्यवाही हो, गंभीर आर्थिक और चारित्रिक प्रकरणों को छोड़कर किसी भी कर्मचारी को लम्बे समय तक निलंबित न रखा जाए, स्थानांतरित कर्मचारियों को तत्काल रिलीव कर नई संस्था मे कार्यभार ग्रहण कराना सुनिश्चित करें। न्यायालयीन प्रकरणों मे शीघ्र जवाब प्रस्तुत किए जाएं। उन्होंने कहा कि एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत सभी अधिकारी, कर्मचारी, विद्यार्थियों द्वारा पौधारोपण किया जाये और वायुदूत ऐप पर अपलोड करना सुनिश्चित करें।

वीर शासन जयंती और अष्टाहनिका पर्व के समापन पर निकाली श्रीजी की भव्य शोभायात्रा

समय जगत बड़वाह। स्थानीय दिगम्बर जैन समाजजनो द्वारा आठ दिवसीय आषाढ़ की अष्टाहनिका पर्व भक्ति भाव के साथ मनाया। समाज के प्रचार मंत्री मनीष जैन ने बताया आरोन से पधारे ब्रह्मचारी पारस भैय्या जी व स्थानीय विधानाचार्य वैभव भैय्याजी के सानिध्य में प्रतिदिन प्रात: अभिषेक शांति धारा मंडल विधान का पूजन किया गया। रात्रि में कमल जैन, श्रेयांश जैन द्वारा सुमधुर भजनों पर संगीतमय आरती सम्पन्न करवाई। जिसके पश्चात भैय्याजी द्वारा प्रतिदिन प्रवचन दिए गए। उल्लेखनीय है कि इस आठ दिवसीय पर्व के अंतिम दिवस नगर में श्रीजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। जिसकी शुरुआत श्री नेमीनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से हुई। यह शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गो से होकर स्थानीय जैन धर्मशाला में पहुंची। जहा श्रीजी का अभिषेक पूजन कर यात्रा का समापन किया गया।आठ दिवसीय अष्टाहनिका पर्व में समाज के हर वर्ग ने बड़चढ़ कर अपनी सहभागिता देकर अपनी चंचल लक्ष्मी का सदुपयोग कर अपने पुण्य की वृद्धि की। समस्त आयोजनों के सफल समापन पर समाज अध्यक्ष अशोक जैन एवं कमेटी सदस्यों ने समाज सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

बहनों के हौसले की मजबूत डोर खुशियां हर ओर

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा

1.27 करोड़ लाड़ली बहनों को

26 वीं किस्त के

₹ 1543.16 करोड़

56.74 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों को ₹ 340 करोड़

30 लाख से अधिक बहनों को सिलेंडर रीफिलिंग राशि ₹46.34 करोड़ का सिंगल क्लिक से अंतरण

अपराह्न 2:30 बजे | ग्राम पंचायत नलवा, जिला उज्जैन

D-11064/25

राज्य स्तरीय निषादराज सम्मेलन

मछुआ कल्याण के विकास कार्यों का भूमिपूजन एवं हितलाभ वितरण

अपराह्न 1:00 बजे । मुक्ताकाशी मंच, कालिदास अकादमी, उज्जैन

12 जुलाई 2025

मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2025

सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhypradesh @jansamparkMP JansamparkMP

स्वत्वाधिकारी, समय जगत मीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक अशोक त्रिपाठी द्वारा एवरेस्ट प्रेस ई-49/8 औखला, इंडस्ट्रीयल-एरिया प्लॉट-2 प्रींटिंग प्रेस से मुद्रित एवं बी-125 सादतपुर कालोनी दिल्ली-110094 से प्रकाशित। RNI NO. DELHIN/2005/14553, **प्रधान संपादक:** अशोक त्रिपाठी * **संपादक** अनिल श्रीवास्तव * **समाचार संपादक** सौरभ वार्ष्णेय
दिल्ली कार्यालय : एस-557, हीरा कॉम्पलेक्स 203 द्वितीय तल मुख्य मार्ग शकरपुर दिल्ली- 01142173537, 9899589700, **भोपाल कार्यालय** - 9, रायल हाउस, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर जोन-1, भोपाल। **फोन :** 0755-4273868, 4203479 **फैक्स :** 4094417 **ई-मेल** dainiksamayjagat.delhi@gmail.com *(समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार)